



भारत का राजपत्र The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-अ.-19012021-224545
CG-DL-E-19012021-224545

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 21]

नई दिल्ली, मंगलवार, जनवरी 19, 2021/पौष 29, 1942

No. 21]

NEW DELHI, TUESDAY, JANUARY 19, 2021/PAUSHA 29, 1942

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(व्यापार उपचार महानिदेशालय)

अधिसूचना

अंतिम जांच परिणाम

नई दिल्ली, 19 जनवरी, 2021

मामला संख्या (ओ आई) 30/2019

विषय: टर्की और संयुक्त राज्य अमेरिका के मूल के अथवा वहां से निर्यातित “सोडा ऐश” के आयातों के संबंध में पाटनरोधी शुल्क जांच।

क. मामले की पृष्ठभूमि

फा. सं. 6/39/2019-डीजीटीआर.—समय-समय पर यथासंशोधित सीमा प्रशुल्क अधिनियम 1975 (इसके पश्चात अधिनियम के रूप में भी संदर्भित) और उसका समय-समय पर यथासंशोधित सीमा प्रशुल्क (पाटित वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क की पहचान, आंकलन और संकलन तथा क्षति निर्धारण के लिए) नियमावली 1995 (इसके पश्चात “नियमावली” अथवा “पाटनरोधी नियमावली” के रूप में भी संदर्भित) के संबंध में:

जबकि मै. डीसीडब्ल्यू लि., मै. आरएसपीएल और मै. जीएचसीएल (इसके पश्चात “आवेदकों” अथवा “घरेलू उद्योग” के रूप में भी संदर्भित) ने टर्की और यूएसए से (इसके पश्चात “संबद्ध देशों” के रूप में भी संदर्भित) के मूल के अथवा

वहां से निर्यातित “सोडा ऐश” (इसके पश्चात् “संबद्ध वस्तु” अथवा “विचाराधीन उत्पाद” अथवा “विचाराधीन उत्पाद” के रूप में भी संदर्भित) के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के लिए सीमा प्रशुल्क अधिनियम और पाटनरोधी नियमावली के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (इसके पश्चात् “प्राधिकारी” के रूप में भी संदर्भित) के समक्ष आवेदन प्रस्तुत किया है।

और जबकि प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर, संबद्ध देशों के मूल के अथवा से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के कथित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और प्रभाव का निर्धारण करने तथा पाटनरोधी शुल्क की मात्रा जिसे अगर लगाया जाए तो घरेलू उद्योग को कथित क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा, की सिफारिश करने के लिए पाटनरोधी नियमावली के अनुसार संबद्ध जांच की शुरुआत करते हुए भारत के राजपत्र में प्रकाशित दिनांक 22 जनवरी, 2020 की अधिसूचना सं. 6/39/2019-डीजीटीआर के माध्यम से एक आम सूचना जारी की।

ख. प्रक्रिया

1. यहां नीचे दी गई प्रक्रिया का पालन प्राधिकारी द्वारा संबद्ध जांच के संबंध में की गई है:

- क. प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 5 के उप नियम (5) के अनुसार जांच की शुरुआत करने की कार्यवाही करने के पूर्व वर्तमान पाटनरोधी आवेदन के प्राप्त होने के बारे में भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों को अधिसूचित किया।
- ख. प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच की शुरुआत करते हुए भारत के राजपत्र असाधारण में प्रकाशित दिनांक 22 जनवरी, 2020 को सार्वजनिक सूचना जारी की।
- ग. प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पते के अनुसार भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों, संबद्ध देशों के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों, ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं और घरेलू उद्योग तथा अन्य घरेलू उत्पादकों को जांच की शुरुआत संबंधी अधिसूचना की प्रति भेजी और उनसे अनुरोध किया कि वे निर्धारित समय सीमा के भीतर लिखित रूप में अपने दृष्टिकोण से अवगत कराएं।
- घ. प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमावली के नियम 6(3) के अनुसार भारत में ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों और संबद्ध देश के दूतावासों को आवेदन के अगोपनीय पाठ की एक प्रति उपलब्ध कराई।
- ङ. भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों से यह भी अनुरोध किया गया था कि वे निर्धारित समय सीमा के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए अपने देश से निर्यातकों/उत्पादकों को सलाह दें। उत्पादकों/निर्यातकों को भेजे गए पत्र और प्रश्नावली की एक प्रति भी संबद्ध देशों के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों के नाम और पते के साथ इसे भेजी गई थी।
- च. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देशों में निम्नलिखित ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजीं:
 - (i) मै. एफएमसी इंडस्ट्रियल केमिकल्स
 - (ii) मै. सोल्वे सोडा ऐश
 - (iii) मै. जनरल केमिकल्स इंडस्ट्रियल प्रॉडक्ट्स
 - (iv) मै. एएनएसएसी
 - (v) मै. एफएमसी कार्पोरेशन
 - (vi) मै. सिनेर रिसार्सेज एलपी
 - (vii) मै. सिनेर व्योमिंग एलएलसी
 - (viii) मै. सिनेर रिसार्सेज कारपोरेशन
 - (ix) मै. इटी सोडा
 - (x) मै. सोडा सेनवी

(xi) मै. कजन सोडा इलेक्ट्रिक

छ. संबद्ध देशों के निम्नलिखित निर्यातकों ने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है:

- (i) सियरलेस वैली मिनरल्स इन्क, यूएसए
- (ii) मै. टाटा केमिकल्स सोडा ऐश पार्टनर्स ("टीसीएसएपी"), प्रोज्यूसर, यूएसए
- (iii) अपने संबंधित आयातक मै. टाटा केमिकल्स लि. ("टीसीएल") के साथ मै. टाटा केमिकल्स इंटरनेशनल प्रा. लि. ("टीसीआईपीएल"), प्रोज्यूसर, यूएसए
- (iv) ईटीआई सोडा यूरेटिम प्जारलामा नकलियत वे इलेक्ट्रिक यूरेटिम सनायी वे टिकरेट ए. एस., टर्की
- (v) कजन सोडा इलेक्ट्रिक यूरेटिए ए.एस.टर्की
- (vi) सिनेर आईसी वे डिस टिकरेट ए.एस.(सीआईडीटी), टर्की
- (vii) सोडा सनायी ए.एस., टर्की और उसका संबंधित निर्यातक सिसकेम डिस टिकरेट ए. एस.

ज. प्राधिकारी ने इस नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना की मांग करते हुए भारत में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ताओं को आयातक की प्रश्नावलियां भेजी:

- i. मै. गुजरात गार्डियन लि.
- ii. मै. एडवांस सरफेक्टेंट इंडिया लि.
- iii. मै. फ्लोट ग्लास इंडिया लि.
- iv. मै. ए.आर. स्टनकेम प्रा. लि.
- v. मै. एलेनबिक ग्लास इंडस्ट्रीज लि.
- vi. मै. हिंद सिलिकेट्स प्रा. लि.
- vii. मै. दीपक नितराईट लि.
- viii. मै. टौरस केमिकल (प्रा.) लि.
- ix. मै. हिंदुस्तान नेशनल ग्लास एंड इंड. लि.
- x. मै. किशोरसंस डिटेजेंट प्रा. लि.
- xi. मै. हिंदुस्तान यूनिलीवर लि.
- xii. मै. जे.जे. पटेल इंडस्ट्रीज
- xiii. मै. प्रोक्टर एंड गैम्बल हाइजिन एंड हेल्थकेयर
- xiv. मै. श्रीराम भरत केमिक एंड डिटरजेंट्स प्रा. लि.
- xv. मै. एल्ब्राइट मोरारजी एंड पंडित लि.
- xvi. मै. मॉडर्न ग्लास इंडस्ट्रीज
- xvii. मै. एडवाटेक इंडस्ट्रीज प्रा. लि.
- xviii. मै. आदर्श कंच उद्योग (प्रा.) लि.
- xix. यू. पी. ग्लास मैन्यूफैक्चरर्स सिंडिकेट
- xx. मै. प्रगति ग्लास प्रा. लि.
- xxi. मै. असाही इंडिया ग्लास लिमिटेड
- xxii. मै. गोरा मलहारी राम लि.

- xxiii. मै. फेना (प्रा.) लि.
- xxiv. मै. रोहित सर्फकटेंट (प्रा.) लि.
- xxv. मै. श्री यूनिकॉन आर्गेनिक्स प्रा. लि.
- xxvi. मै. अस्ट्राल ग्लास प्रा. लि.
- xxvii. मै. पोलाची चैम्बर ऑफ कॉमर्स ऐंड इंडस्ट्री
- xxviii. मै. बीडीजे ग्लास इंडस्ट्रीज प्रा. लि.
- xxix. मै. वसुंधरा रसावन लि.
- xxx. मै. श्री हरि इंडस्ट्रीज
- xxxi. मै. पावर शॉप लि.
- xxxii. मै. हिंदुस्तान नेशनल ग्लास ऐंड इंडस्ट्रीज
- xxxiii. मै. शांति नाथ डिटर्जेंट (प्रा.) लि.
- xxxiv. मै. जगतजीत इंडस्ट्रीज लि.
- xxxv. मै. एडवांस होम ऐंड पर्सनल केयर
- xxxvi. मै. एस. कुमार डिटर्जेंट्स प्रा. लि.
- xxxvii. मै. मौली एक्सपोर्ट्स

झ. प्राधिकारी ने इस नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार भारत में निम्नलिखित संघों को भी सूचित किया:

- i. डिटर्जेंट मैन्यूफैक्चर्स एसोसिएशन
- ii. इंडियन केमिकल मर्चेन्ट्स ऐंड मैन्यूफैक्चर्स
- iii. बल्क ड्रग मैन्यूफैक्चर्स एसोसिएशन (इंडिया)
- iv. इंडियन ग्लास मैन्यूफैक्चर्स एसोसिएशन
- v. दि डाइस ऐंड कैमिकल मर्चेन्ट्स एसोसिएशन
- vi. दि फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया डाइस ऐंड केमिकल्स मर्चेन्ट्स एसोसिएशन

ज. प्राधिकारी ने अनुरोध किए जाने पर 20-3-2020 तक प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत करने के लिए समय विस्तार दिया।

ट. निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ताओं ने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है:

- i. मै. सेंट गोबेन इंडिया प्रा. लिमिटेड
- ii. मै. हिन्दुस्तान यूनिलीवर लि. इंडिया
- iii. मैसर्स टाटा केमिकल्स लि.

ठ. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण के लिए खुली रखी गई सार्वजनिक फाइल के रूप में प्रस्तुत किए गए साक्ष्य/किए गए अनुरोधों का अगोपनीय पाठ उपलब्ध कराया।

ड. वाणिज्यिक सूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से अनुरोध किया गया था कि वह पिछले तीन वर्षों और जांच की अवधि के लिए संबद्ध वस्तुओं के आयातों का लेन-देनवार ब्यौरा उपलब्ध कराएं जो प्राधिकारी को प्राप्त हो गया था। प्राधिकारी ने लेन-देन की उचित जांच के बाद आयातों की मात्रा की गणना और इसका विश्लेषण करने के लिए डीजीसीआईएंडएस आंकड़ों पर विश्वास किया है।

- ड. सामान्य रूप से स्वीकार किए गए लेखांकन सिद्धांतों (जीएएपी) तथा पाटनरोधी के नियमावली के अनुबंध 3 के आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की लागत और उसका निर्माण करने और बिक्री करने की लागत के आधार पर क्षति रहित कीमत (एनआईपी) का निर्धारण किया गया है ताकि इस बात का पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।
- ण. घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना का सत्यापन प्राधिकारी द्वारा स्थल पर दौरा और तालिका के अध्ययन के द्वारा आवश्यक सीमा तक किया गया था। आवश्यक संशोधनों के साथ केवल इस प्रकार की सत्यापित सूचना पर अंतिम जांच परिणाम के उद्देश्य से जहां भी लागू हुआ, विचार किया गया है।
- त. वर्तमान जांच के उद्देश्य से जांच की अवधि 1 अप्रैल, 2019 से 31 दिसम्बर, 2019 (09 माह) है। तथापि, क्षति की जांच की अवधि को अप्रैल, 2016 - मार्च, 2017, अप्रैल 2017-मार्च, 2018, अप्रैल 2018-मार्च 2019 की अवधि तथा जांच की अवधि के रूप में विचार किया गया है।
- थ. नियमावली के नियम 12 में निहित प्रावधान के अनुसार प्राधिकारी ने भारत के राजपत्र असाधारण में प्रकाशित 21.08.2020 के प्राथमिक जांच परिणाम जारी किए और अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की। तथापि, यह सिफारिश केंद्र सरकार द्वारा स्वीकार नहीं की गई थी।
- द. नियमावली के नियम 6(6) के अनुसार, प्राधिकारी ने दिनांक 16 नवंबर, 2020 को आयोजित मौखिक सुनवाई में सभी हितबद्ध पक्षकारों को अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए अवसर प्रदान किया जिसमें घरेलू उद्योग द्वारा उनके कानूनी प्रतिनिधियों सहित तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों और उनके कानूनी प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। जिन्होंने मौखिक सुनवाई में भाग लिया, उनसे अनुरोध किया गया था कि वे 23.11.2020 तक मौखिक सुनवाई में प्रस्तुत विचारों के लिखित अनुरोध और 02.12.2020 तक प्रत्युत्तर अनुरोध दायर करें।
- ध. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा इस जांच की प्रक्रिया के दौरान जिस सीमा तक साक्ष्य द्वारा समर्थन किया गया था और वर्तमान जांच के लिए संगत माना गया था, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों पर अंतिम जांच परिणाम में प्राधिकारी द्वारा उपयुक्त रूप से माना गया है।
- न. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराई गई सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में की गई थी। संतुष्ट होने पर, प्राधिकारी ने जहां भी आवश्यक हुआ, गोपनीयता के दावे को स्वीकार किया है और इस प्रकार की सूचना को गोपनीय और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट न की गई सूचना के रूप में माना गया है। जहां भी संभव हुआ गोपनीय आधार पर सूचना उपलब्ध कराने वाले पक्षकारों को निदेश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय पाठ उपलब्ध कराएं।
- प. जहां कहीं भी किसी हितबद्ध पक्षकार ने वर्तमान जांच की प्रक्रिया के दौरान सूचना तक पहुंच दिये जाने से इंकार किया है अथवा अन्य प्रकार से आवश्यक सूचना उपलब्ध नहीं कराई है अथवा इस जांच में पर्याप्त रूप से बाधा पहुंचाई है, प्राधिकारी ने ऐसे पक्षकारों को असहयोगी के रूप में माना है और उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अंतिम जांच परिणामों को रिकॉर्ड किया है।
- फ. इस नियमावली के नियम 16 के अनुसार, इस जांच के आवश्यक तथ्यों को दिनांक 9 जनवरी, 2020 के प्रकटन विवरण के द्वारा ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को प्रकटन किया गया था और उन पर प्राप्त टिप्पणियों जिन्हें प्राधिकारी द्वारा संगत माना गया था, का समाधान इन अंतिम जांच परिणामों में किया गया है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए प्रकटन पश्चात अधिकांश अनुरोध उनके पूर्व के अनुरोधों की पुनरावृत्ति मात्र है। हालांकि, संगत मानी गई सीमा तक प्रकटन पश्चात अनुरोधों की जांच इन अंतिम जांच परिणामों में की जा रही है।
- ब. इस अंतिम जांच परिणाम में “***” गोपनीय आधार पर किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना और इस नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा वैसी मानी गई सूचना का द्योतक है।

भ. संबद्ध जांच के लिए प्राधिकारी द्वारा लिया गया विनिमय दर 1 यूएस डॉलर = 71.24 रुपए है।

ग. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

ग.1. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

2. घरेलू उद्योग द्वारा विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में किए गए अनुरोध और प्राधिकारी द्वारा संगत माने गए अनुरोध नीचे दिए गए अनुसार है:

- क) विचाराधीन उत्पाद डिसोडियम कार्बोनेट है जिसे लोकप्रिय रूप से केमिकल फार्मूला एनए2सीओ3 वाले सोडा ऐश के रूप में जाना जाता है। सोडा ऐश श्वेत, क्रिस्टलाइन, जल में घुलनशील सामग्री है। इसे इस याचिका में “सोडा ऐश” के रूप में उल्लेख किया गया है। सोडा ऐश का उत्पादन भारतीय उत्पादकों द्वारा – लाइट सोडा ऐश और घने सोडा ऐश दोनों रूपों में किया जाता है। इन दोनों प्रकारों में अंतर भारी घनत्व का है। इसके अलावा, सोडा ऐश या तो प्राकृतिक सोडा ऐश अथवा सिंथेटिक सोडा ऐश हो सकता है, दोनों उत्पाद आवश्यक रूप से एक जैसे हैं। वर्तमान जांच में सभी प्रकारों और रूप से सोडा ऐश को शामिल किया गया है अर्थात् प्राकृतिक माध्यम से और सिंथेटिक माध्यम से उत्पादित सोडा ऐश को शामिल किया गया है।
- ख) सोडा ऐश डिटेजेंट्स, साबुन, सफाई करने वाले अवयवों, सोडियम आधारित रासायनिक पदार्थों, फ्लो ग्लास, कंटेनर और स्पेशलिटी ग्लास, सिलिकेट्स और अन्य औद्योगिक रासायनिक पदार्थों के निर्माण में एक आवश्यक सामग्री है। इसका व्यापक रूप से उपयोग वस्त्र, कागज, धातु उद्योगों और डीसेलिनेशन संयंत्रों में भी किया जाता है।
- ग) सिंथेटिक सोडा ऐश का निर्माण सोल्वे, हाऊ अथवा अमोनिया सोडा की प्रक्रिया का उपयोग करते हुए किया जाता है। टर्की में प्राकृतिक सोडा ऐश की उत्पादन प्रक्रिया ट्रौना की सोल्यूशन खनन है। ट्रौना खान को सोल्यूशन खनन द्वारा सतह तक निष्कर्षण किया जाता है। यूएसए में लागू की गई एक अन्य उत्पादन प्रक्रिया कमरा और पिलर पद्धति है जहां ट्रौना का खनन किया जाता है और उसे धोकर सतह तक लाया जाता है जिसे घने सोडा ऐश में परिष्कृत किया जाना होता है।
- घ) विचाराधीन उत्पाद का आयात सीमा शुल्क उप शीर्षक 2836.20 के अंतर्गत सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के अध्याय 28 के अंतर्गत किया जाता है। सीमा शुल्क वर्गीकरण सांकेतिक मात्र है और यह विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।
- ङ) आवेदक द्वारा उत्पादन किए गए उत्पाद और संबद्ध देशों से निर्यातित उत्पाद में कोई अंतर नहीं है।
- च) घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद विचाराधीन उत्पाद के समान है। प्राधिकारी ने दिनांक 17.02.2012-डीजीएडी के अंतिम जांच परिणाम संख्या 14/17/2010-डीजीएडी में यह निष्कर्ष निकाला था कि लाइट तथा डैंस सोडा के बीच अंतर केवल बल्क डेनसिटी का है। वे एक ही उत्पाद के दो रूप हैं जिनमें कीमत में नगण्य अंतर है। प्राकृतिक एवं सिंथेटिक सोडा ऐश में उत्पाद विशेषियों, प्रकार्य एवं प्रयोग, सीमा शुल्क वर्गीकरण और उत्पाद की कीमत के संदर्भ में कोई अंतर नहीं है, अंतर केवल विनिर्माण के मार्गों में है। तथापि, इससे दोनों ग्रेड असमान वस्तुएं नहीं हो जाते, जब दोनों परस्पर परिवर्तनीय रूप से प्रयोग किए जाएं। तुलना केवल तभी किए जाने की आवश्यकता है, यदि उत्पाद की लागत अथवा कीमत में जांच की अवधि में काफी अंतर हो।
- छ) यूरोपीय आयोग (ईसी) ने 10 अप्रैल, 1995 के विनियम (ईसी) संख्या 823/95 में नोट किया था कि यहां तक कि जब भिन्न उत्पादन प्रक्रिया लगाई जाए तो प्राप्त उत्पाद उनकी भौतिक एवं तकनीकी विशेषताओं तथा उनके संभावित प्रयोग के संबंध में हर दृष्टि से समान होते हैं।
- ज) उत्पादन प्रक्रिया की जांच पूर्व में की गई है। यूरोपीय आयोग (ईसी) ने 10 अप्रैल, 1995 के विनियम (ईसी) संख्या 823/95 में नोट किया था कि यहां तक कि जब भिन्न उत्पादन प्रक्रिया लगाई जाए तो प्राप्त

उत्पाद उनकी भौतिक एवं तकनीकी विशेषताओं तथा उनके संभावित प्रयोग के संबंध में हर दृष्टि से समान होते हैं। सोडा ऐश पर दक्षिण अफ्रीकी शुल्क भी लाइट और डैंस को भिन्न उत्पाद नहीं मानता।

- झ) लाइट और डैंस सोडा ऐश संबद्ध सामानों के दो रूप हैं। कीमत और लागत तुलना करने की आवश्यकता के लिए काफी महत्वपूर्ण नहीं है, कीमत में अंतर की सतत् प्रवृत्ति नहीं है। लाइट सोडा डैंस की अपेक्षा अधिक कीमत पर बेचा गया है। कीमत में अंतर की मौजूदगी पृथक् विश्लेषण सिद्ध करने के लिए विचार करने हेतु प्रथम कारक है।
- ञ) किस्म वार पृथक्करण आवश्यक नहीं है। डीजीसीआईएस द्वारा दी गई सूचना भी यह दर्शाती है कि डैंस और लाइट सोडा ऐश की कीमत में कोई खास अंतर नहीं है।

ग.2. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध

3. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किये गये हैं:
- क. लाइट और सोडा ऐश का विश्लेषण औसत आधार पर किया गया है जो कि गलत है क्योंकि वे प्रयोक्ताओं के संदर्भ में भिन्न हैं और परस्पर परिवर्तनीय नहीं हैं। एक-एक करके तुलना की जानी चाहिए।
- ख. यद्यपि जीएचसीएल जैसा उत्पादक लाइट सोडा ऐश और डैंस सोडा ऐश दोनों में है, अतः आरएसपीएल जैसा उत्पादक ही लाइट सोडा ऐश के उत्पादन में है। इस प्रकार, लाइट सोडा ऐश के तथाकथित पाटित आयातों के प्रभाव की तुलना तदनुरूपी लाइट सोडा ऐश के भारतीय उत्पादन से की जानी चाहिए और डैंस सोडा ऐश के तथाकथित पाटित आयातों के प्रभाव की तुलना डैंस सोडा ऐश के तदनुरूपी भारतीय उत्पादन से की जानी चाहिए तथा औसत केवल भ्रामक सूचना देगे और मात्र ये औसत किसी जांच परिणाम का आधार नहीं बन सकते।
- ग. यह स्वीकृत तथ्य है कि सोडा ऐश दो किस्मों अर्थात् लाइट सोडा ऐश और डैंस सोडा ऐश में उत्पादित और बेचा जाता है। यह भी एक तथ्य है कि प्रत्येक उत्पादक इन दोनों प्रकारों का उत्पादन नहीं कर सकता। यह भी एक तथ्य है कि इन दो प्रकारों का भिन्न-भिन्न प्रयोग है और इन दोनों प्रकारों की लागत तथा कीमत भी अलग-अलग है, परन्तु बिना किसी जांच के प्राथमिक जांच परिणाम में एक ही उत्पाद के रूप में परिभाषित हैं।

ग.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

4. विचाराधीन उत्पाद (विचाराधीन उत्पाद) डिसोडियम कार्बोनेट है जिसे लोकप्रिय रूप से केमिकल फार्मूला एनए2सीओ3 वाले सोडा ऐश के रूप में जाना जाता है। सोडा ऐश का उत्पादन दो रूपों- लाइट सोडा ऐश और घने सोडा ऐश में किया जाता है। इन दोनों प्रकारों में अंतर भारी घनत्व का है। इसका उत्पादन सिंथेटिक रूप जिसे अधुलनशील प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है और प्राकृतिक मार्ग से किया जा सकता है। वर्तमान जांच में सभी प्रकारों और रूपों के सोडा ऐश शामिल हैं।
5. सोडा ऐश का उपयोग डिटेजेंट्स, साबुन, सफाई करने वाले अवयवों, सोडियम आधारित रासायनिक पदार्थों, फ्लो ग्लास, कंटेनर और स्पेशलिटी ग्लास, सिलिकेट्स और अन्य औद्योगिक रासायनिक पदार्थों के निर्माण में किया जाता है।
6. संबद्ध वस्तु सीमा शुल्क उप शीर्षक 2836.20 के अंतर्गत सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 के अध्याय 28 के अंतर्गत किया गया वर्गीकरण योग्य है। हालांकि सीमा शुल्क वर्गीकरण सांकेतिक मात्र है और यह विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।
7. प्राधिकारी रिकॉर्ड पर उपलब्ध सूचना से नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद संबद्ध देशों से आयात की गई वस्तुओं का समान वस्तु है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन किए गए विचाराधीन उत्पाद और संबद्ध देशों से आयात किए गए उत्पाद की तुलना वस्तुओं के भौतिक और रासायनिक गुणों, कार्यों और उपयोगों, उत्पाद विनिर्देशन, कीमता निर्धारण, वितरण और विपणन और प्रशुल्क वर्गीकरण के संदर्भ में तुलनीय हैं। यद्यपि संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन के लिए निहित विभिन्न निर्माण प्रक्रिया/प्रौद्योगिकी हैं अर्थात् टर्की में ट्राना का साल्यूशन

खनन, यूएसए में कमरा और पिलर पद्धति और सिंथेटिक्स सोडा ऐश के लिए सोल्वे, हाऊ अथवा अमोनिया सोडा प्रक्रिया हैं, फिर भी अंतिम उत्पाद विनिर्देशों के मामले में तुलनीय हैं और इनका उपयोग एक दूसरे के स्थान पर किया जाता है। इसके अलावा, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि आयात किए गए उत्पाद और घरेलू स्तर पर बेचे गए उत्पाद तकनीकी रूप में और वाणिज्यिक रूप में प्रतिस्थापनीय हैं और उपभोक्ता इन दोनों का उपयोग एक दूसरे के स्थान पर कर रहे हैं।

8. जहां तक इस तर्क का संबंध है कि लाइट और डैंस सोडा ऐश दो भिन्न उत्पाद किस्में हैं जिनकी लागत और कीमत में काफी अंतर है तथा परस्पर परिवर्तनीय नहीं हैं और इस प्रकार उन्हें एक उत्पाद नहीं माना जाना चाहिए, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इसी प्रकार का मुद्दा समान उत्पाद के संबंध में विगत जांचों में उठाया गया था और प्राधिकारी ने उन सभी जांचों में माना था कि लाइट और डैंस सोडा ऐश दोनों एक ही उत्पाद हैं और यह कि लागत और कीमत का अंतर न्यूनतम है जिससे किसी पृथक विश्लेषण की आवश्यकता नहीं है। प्राधिकारी लागत और कीमत में काफी अंतर होने की स्थिति में पाटन मार्जिन, क्षति मार्जिन के लिए पृथक विश्लेषण करते हैं। किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने लागत एवं कीमत में काफी अंतर दर्शाने के लिए पर्याप्त सूचना नहीं दी है। इसके अतिरिक्त, निर्यातकों द्वारा दायर आंकड़ों के अनुसार रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना भी डैंस तथा लाइट सोडा ऐश की लागत और कीमत में अंतर का कोई निर्धारित पैटर्न नहीं दर्शाती। इस प्रकार, प्राधिकारी ने माना है कि लाइट और डैंस सोडा ऐश दोनों एक ही उत्पाद क्षेत्र के अंतर्गत शामिल हैं।

घ. घरेलू उद्योग का क्षेत्र एवं आधार

घ.1 घरेलू उद्योग द्वारा किये गये अनुरोध

9. घरेलू उद्योग द्वारा घरेलू उद्योग का क्षेत्र एवं आधार के संबंध में किए गए अनुरोध नीचे दिए गए अनुसार है:

- क. आवेदक, मैसर्स डीसीडब्ल्यू लि., मै; आरएसपीएल और मै. जीएचसीएल भारत में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादक हैं। आवेदकों को छोड़कर संबद्ध वस्तुओं के तीन अन्य उत्पादक हैं अर्थात् मै. टाटा केमिकल्स लि.(टीसीएल), मै. निरमा लि. और मै. तूतीकोरिन एलकली केमिकल्स एंड फर्टिलायजर्स लि.(टीएसी) हैं। मै. टाटा केमिकल्स ने भारत को संबद्ध वस्तुओं का निर्यात किया है और मै. निरमा लि. यूएसए में एक संबंधित उत्पादक है और इसने भी संबद्ध वस्तुओं का निर्यात किया है और इस प्रकार से ये पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत घरेलू उद्योग होने के लिए पात्र नहीं हैं।
- ख. आवेदकों ने संबद्ध देशों से विचाराधीन उत्पाद का आयात नहीं किया है और वे भारत में किसी आयातक अथवा संबद्ध देशों के किसी निर्यातक से संबंधित नहीं हैं।
- ग. आवेदक के पास कुल भारतीय उत्पादन का एक बहुत बड़ा हिस्सा है। तदनुसार, यह आवेदन आधार की आवश्यकता को स्पष्ट रूप से पूरा करता है और इस प्रकार से आवेदक पाटनरोधी नियमावली के नियम 5(3) के साथ पठित नियम 2(ख) के संबंध में संबंधित उत्पाद के लिए भारत में “घरेलू उद्योग” हैं।
- घ. घरेलू उद्योग की स्थिरता मामला दर मामला आधार पर निर्धारित की जाती है। वर्तमान आवेदन पत्र का औचित्य पूर्व में की गई जांच पर निर्धारित नहीं किया जा सकता। जांच की शुरुआत, प्राथमिक विश्लेषण, अनंतिम शुल्क की सिफारिश का निर्धारण, किसी वस्तुपरक विश्लेषण पर किया जाएगा।
- ङ. डीसीडब्ल्यू, आरएसपीएल और जीएचसीएल के उत्पादन का निर्विवाद रूप से भारतीय उत्पादन में प्रमुख अनुपात है, निरमा एक आवेदक नहीं है, अतः नियम 2(ख) के तहत घरेलू उत्पादक सही बनता है और नियम 5(3) के तहत उसका आधार है। निरमा के आयात काफी अधिक हैं।
- च. सोडा ऐश विचाराधीन उत्पाद है और इस प्रकार किस्म वार आधार पर भारतीय उत्पादन के पृथक्करण की कोई आवश्यकता नहीं है।
- छ. निरमा और टाटा की पात्रता की ही नियम 5 के साथ नियम 2(ख) के तहत जांच किए जाने की आवश्यकता है, यदि उन्होंने आवेदक बनना चुना हो। यहां तक कि यदि निरमा को पात्र घरेलू उत्पादक माना जाता है तो आवेदन पत्र तब भी नियम 2(ख) और नियम 5(3) के परीक्षण को पूरा करता है।

- ज. वर्तमान अवधि में निरमा की संबद्ध कंपनी द्वारा किए गए निर्यातों की मात्रा पूर्व जांचों में उनके द्वारा किए गए निर्यातों की मात्रा से काफी अधिक है। संबद्ध पक्षकार द्वारा किए गए आयातों ने मूल मामले से पूर्ण एवं संबंधित दृष्टि ने काफी वृद्धि दर्शाई है। संयुक्त राज्य अमेरिका से कुल आयातों में से *** प्रतिशत आयात हैं और उसके अपने उत्पादन के *** प्रतिशत से अधिक हैं।
- झ. घरेलू उद्योग पक्षकारों को सूचना देने के लिए मजबूर नहीं कर सकता। प्रतिभागी उत्पादक खुद पाटनरोधी नियमावली के अनुसार आधार के मानदंड के योग्य हैं। पॉलिस्टर स्टेपल फाइबर मामले का संदर्भ गलत रखा गया है।
- ञ. प्राथमिक जांच परिणाम में प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के क्षेत्र का विश्लेषण किया है और यह पाया है कि टाटा और निरमा दोनों के संयुक्त राज्य अमेरिका से आयातों की तुलना में काफी निर्यात हैं और पाटित कीमतों पर हैं। अतः उन्हें भारत में संबद्ध सामानों के अपात्र घरेलू उद्योग माना गया है। वर्तमान पाटनरोधी जांच के लिए आवेदक डीसीडब्ल्यू, आरएसपीएल और जीएचसीएल हैं जिनमें से प्रत्येक ने निर्धारित प्रपत्र के अनुसार अपेक्षित सूचना दायर की है।
- ट. प्राधिकारी के लिए यह मूल्यांकन करना अपेक्षित है कि क्या डीसीडब्ल्यू, आरएसपीएल और जीएचसीएल के कुल उत्पादन का कुल भारतीय उत्पादन में प्रमुख अनुपात है, निरमा आवेदक नहीं था और केवल उसने जांच का समर्थन किया। उल्लिखित आवेदक नियम 2(ख) के तहत घरेलू उद्योग हैं। आवेदन पत्र का निरमा को पात्र अथवा अपात्र घरेलू उत्पादक मानने की बात पर ध्यान न देते हुए नियम 5(3) के तहत आधार है।

घ.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध

10. घरेलू उद्योग के क्षेत्र एवं उसके आधार के संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:
 - क. याचिकाकर्ता अपने आप इस बात का निर्धारण नहीं कर सकते हैं कि कौन से उत्पादक को नियम 2(ख) के संबंध में बाहर किया जाएगा अथवा शामिल किया जाएगा। प्राधिकारी का “घरेलू उद्योग” को परिभाषित करने का आधार निर्दिष्ट प्राधिकारी के पास है।
 - ख. याचिकाकर्ताओं ने कुल भारतीय उत्पादन में बाहर किए गए उत्पादकों के उत्पादन पर विचार करने के बाद उत्पादन के अपने हिस्से को उपलब्ध नहीं कराया है।
 - ग. आरएसपीएल को डैंस सोडा ऐश के कारण क्षति नहीं हो सकती। भारतीय उत्पादन के विवरण में किस्म वार उत्पादन शामिल होना चाहिए।
 - घ. प्राधिकारी को नियम 5 के साथ पठित नियम 2(ख) के तहत निरमा और टाटा की पात्रता की जांच करने के लिए संशोधित जांच की अवधि में निरमा और टाटा द्वारा किए गए आयातों की संशोधित मात्रा की पुनः जांच करने की आवश्यकता है।
 - ङ. प्राधिकारी को आंकड़ों की उचित एवं अनुकूल स्थिति सुनिश्चित करने के लिए निरमा सहित अन्य घरेलू उत्पादकों के आंकड़े मंगाने चाहिए और उनकी जांच करनी चाहिए। यह प्राधिकारी की परिपाटी के अनुसार भी है। संदर्भ पॉलिस्टर स्टेपल फाइबर; और कोटेड पेपर्स के आयातों के संबंध में जांच का दिया गया है।
 - च. आवेदक ने खुद ही उल्लेख किया कि निरमा अपात्र है और प्राधिकारी ने न्याय क्षेत्राधिकार देखे बिना स्वीकार किया। जाको ह्यूमन एंड मिरांडा पर विश्वास किया गया है। कोई भी मानदंड लागू नहीं किया गया है। थाइलैंड-एच-बीम्स पर विश्वास किया गया है।

घ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

11. यह आवेदन मै. डीसीडब्ल्यू लि., मै. आरएसपीएल और मै. जीएससीएल लि. द्वारा प्रस्तुत किया गया है। आवेदकों ने यह सूचित किया है कि वर्तमान में भारत में विचाराधीन उत्पाद तीन अन्य उत्पादक अर्थात् मै. टाटा केमिकल्स लि.(टीसीएल), मै. निरमा लि. और मै. तेतीकोरियन अलकली केमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स लि.(टीएसी) हैं।
12. यह नोट किया जाता है कि मैसर्स निरमा लिमिटेड द्वारा आवेदन पत्र का समर्थन किया गया है। आवेदन पत्र दायर करने के बाद, मै. टाटा केमिकल्स लि. (टीसीएल) और मै. निरमा लि. द्वारा पत्र दायर किए गए थे जिनमें संयुक्त

राज्य अमेरिका उनके संबद्ध पक्षकारों द्वारा भारत को किए गए निर्यातों के ब्यौरे दिए गए थे। यह देखा गया है कि टाटा केमिकल्स की सहयोगी कंपनी मै. टाटा केमिकल्स, नार्थ अमेरिका द्वारा किया गया निर्यात यूएसए से कुल आयातों की तुलना में बहुत अधिक है, इसी प्रकार से निरमा लि. की सहयोगी कंपनी अर्थात् सीयरलेस, वैली मिनरल्स इंक द्वारा किया गया निर्यात भी यूएसए से किए गए कुल निर्यातों की तुलना में बहुत अधिक है। ये दोनों यूएस कंपनियां ने प्रश्नावली का उत्तर अलग-अलग पाटन मार्जिन के निर्धारण करने की मांग करते हुए प्रस्तुत किया है। यह देखा गया है कि सहयोगी पक्षकारों द्वारा किया गया निर्यात बहुत अधिक है। प्राधिकारी अन्य हितबद्ध पक्षकार द्वारा किए गए अनुरोध करते हैं और यह भी नोट करते हैं कि प्रश्नावली के उत्तर का विश्लेषण यह दर्शाता है कि इन कंपनियों द्वारा किए गए निर्यात पाटित कीमतों पर हुए हैं। इस कारण से टाटा केमिकल्स और निरमा लि. को भारत में संबद्ध वस्तुओं के अपात्र घरेलू उद्योग के रूप में माना गया है।

13. प्राधिकारी हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों को नोट करते हैं कि मैसर्स निरमा लिमिटेड पूर्व जांच में आवेदक था और किसी निर्यातक से संबद्ध होने के बावजूद पात्र घरेलू उद्योग के रूप में माना गया था। यह देखा जाता है कि वर्तमान जांच में निरमा आवेदक के रूप में आगे नहीं आया है। आवेदकों का उत्पादन निर्धारित किया गया है और उनका कुल भारतीय उत्पादन में प्रमुख अनुपात है। इस प्रकार आवेदकों का आवेदन पत्र दायर करने के लिए पर्याप्त आधार है।
14. यह भी नोट किया जाता है कि आवेदकों ने विचाराधीन उत्पाद का आयात नहीं किया है और वे भारत में किसी आयातक अथवा संबद्ध देशों के किसी निर्यातक से संबद्ध नहीं हैं। तदनुसार, प्राधिकारी मानते हैं कि इस जांच के उद्देश्य से, आवेदन पत्र आधार की आवश्यकता को पूरा करता है और आवेदक नियमावली के नियम 2(ख) और नियम 5(3) के संबंध में घरेलू उद्योग है।

क. गोपनीयता एवं अन्य विविध मुद्दे

घरेलू उद्योग द्वारा अनुरोध

15. घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- क. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा शुल्क के संदर्भ स्वरूप और डीजीटीआर नियम पुस्तक तथा ऑस्ट्रेलियाई आयोग के विरुद्ध दिए गए तर्क गलत हैं। डीजीटीआर ऑस्ट्रेलियाई आयोग के दिशा-निर्देश यह नहीं बताते कि निर्धारित शुल्क निचले स्तर के उद्योग के विरुद्ध है, इसके बजाए यह अनुकूल है। सोडा ऐश की कीमतों में काफी उतार-चढ़ाव आया और जांच की अवधि के बाद उनमें निरंतर गिरावट आई। इस प्रकार, शुल्क का निर्धारित स्वरूप नहीं लगाया जाना चाहिए (प्रत्युत्तर में उल्लिखित मैनुअल का संगत भाग)। विचाराधीन उत्पाद की कीमतों में लागतों में तदनुसूची गिरावट के बिना तेजी से गिरावट आई है। इस प्रकार, शुल्क के निर्धारित स्वरूप से भी वांछित प्रभाव नहीं पड़ेगा और अनुचित व्यापार से घरेलू उद्योग की रक्षा करने के लिए अपर्याप्त होगा। ऑस्ट्रेलियाई पाटनरोधी आयोग द्वारा पाटन शुल्क के स्वरूपों के अनुप्रयोग संबंधी दिशा-निर्देश इसे घरेलू उद्योग के लिए ही अलाभकर मानते हैं।
- ख. शुल्कों की संदर्भ कीमत सामान्यतः घरेलू उद्योग के पक्ष में नहीं है। आयातों की पहुँच कीमत में 1,163 रु./मी. टन तक गिरावट आई। शुल्क का निर्धारित रूप शुल्कों को अप्रभावी करते हुए निकट भविष्य में निर्यातकों द्वारा खपाए जाने की संभावना है।
- ग. जेएसडब्ल्यू स्टील कोटेड प्रोडक्ट्स लि. बनाम भारत संघ का उल्लेख करते हुए, तर्क के संबंध में उसमें यह उल्लेख है कि प्रत्येक मामले के तथ्यों और परिस्थितियों को शुल्क का रूप निर्धारित करने के लिए देखे जाने की आवश्यकता है। वर्तमान मामले के तथ्य शुल्क के निर्धारित स्वरूप की आवश्यकता बताते हैं।
- घ. आवर्ती जांचों के संबंध में अन्य हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों के संदर्भ में यह अनुरोध है कि इन जांचों का निष्कर्ष निकाल दिया गया है और इनका वर्तमान जांच पर प्रभाव नहीं होना चाहिए। याचिकाकर्ता लागू शुल्कों के बाद भी क्षति होने का दावा नहीं करते। इसकी अपेक्षा याचिकाकर्ताओं द्वारा देखे गए अनुसार शुल्कों को बंद करने के तुरंत बाद क्षति बार-बार होती है। इसके अनुसरण में ही एक आवेदन पत्र याचिकाकर्ताओं द्वारा दायर किया गया है।
- ड. अन्य हितबद्ध पक्षकारों के इन तर्कों के लिए कि सीवीडी और एडीडी साथ-साथ नहीं लगाया जाना चाहिए, यह अनुरोध है कि सेसेट ने मैसर्स सनसिटी शीट्स प्रा. लि. बनाम भारत संघ में यह पाया कि दोनों शुल्क इस

बात को देखते हुए साथ-साथ लगाए जा सकते हैं कि वे क्षति मार्जिन से अधिक नहीं हैं, यद्यपि पाटन मार्जिन अधिक हो सकता है। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा इसका समर्थन किया गया था।

च. जांच की अवधि के स्वैच्छिक होने के प्रत्युत्तर में, यह अनुरोध है कि जांच की अवधि का चयन स्वैच्छिक नहीं है क्योंकि हाल के आंकड़ों के संबंध में विश्लेषण करने के लिए उचित कारण जांच की शुरुआत की अधिसूचना में दिए गए हैं।

अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अनुरोध

16. हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध निम्नलिखित हैं:

क. शुल्क की संदर्भ कीमत आयातकों और प्रयोक्ताओं के प्रति दंडात्मक है। वैश्विक रूप से कीमतों में उतार-चढ़ाव है और उपयुक्त रूप से गिरावट है, संदर्भ कीमत भारतीय आयातकों को दंडित करेगी। कीमतों में गिरावट पाटन के कारण नहीं है।

ख. शुल्क का संदर्भ रूप उपयुक्त नहीं है। *जेएसडब्ल्यू स्टील कोटेड प्रोडक्ट्स लि. बनाम भारत संघ* पर विश्वास किया जाता है जिसमें माननीय सेसटेट द्वारा यह उल्लेख किया गया था कि प्राधिकारी को शुल्क के स्वरूप की सिफारिश करते समय प्रत्येक जांच के तथ्य और परिस्थितियों पर विचार करना चाहिए।

ग. इसके अतिरिक्त, डीजीटीआर के मैनुअल पर विश्वास किया जाता है जिसमें उन परिस्थितियों का प्रावधान है जिनमें शुल्क के संदर्भ रूप को उपयुक्त माना गया है।

(i) निचले स्तर के उद्योग के हितों की रक्षा करने की आवश्यकता है।

(ii) प्रयोक्ता उद्योग उन कुछ ग्रेडों का आयात करता है जो देश में अथवा घरेलू उद्योग में उपलब्ध नहीं है।

(iii) यह वांछनीय नहीं है जब प्रमुख कच्ची सामग्री काफी कीमत उतार-चढ़ाव के लिए जिम्मेदार हों।

(iv) यह उठते हुए बाजार में अप्रभावी है और गिरते हुए बाजार में अत्यधिक संरक्षी है।

अतः विचाराधीन उत्पाद के वाणिज्यिक कारकों और संबद्ध बाजार के कारण संदर्भ कीमत उपयुक्त नहीं है। विचाराधीन उत्पाद में कीमत के उतार-चढ़ाव की प्रवृत्ति होती है और जांच की अवधि के बाद उसकी कीमतों में गिरावट आई है।

घ. कीमतों में उपर्युक्त गिरावट के अनुसार, इसमें स्टीम कोक कोयला और लाइम स्टोन की कच्ची सामग्री की लागतों में गिरावट है। अतः यह पाटन की गहनता नहीं है, इसके बजाए वैश्विक रूप से कीमत में गिरावट है।

ङ. यह स्पष्ट करने के लिए तीन परिदृश्य दिए गए हैं कि संदर्भ कीमत क्यों उपयुक्त नहीं है क्योंकि निचले स्तर के कीमत उतार-चढ़ाव शुल्क को अत्यधिक दंडात्मक बनाएंगे। शुल्क का प्रत्येक रूप अर्थात् संदर्भ, यथा मूल्य और निर्धारित तथा प्रत्येक परिदृश्य में उसकी व्यवहार्यता स्पष्ट की गई है जो निम्नलिखित है:

(i) परिदृश्य-1 वर्तमान मामले के तथ्य हैं अर्थात् वर्तमान बाजार कीमत और पहुँच कीमत पर विचार करना, देय शुल्क वह है जिसकी मांग की जा रही है।

(ii) परिदृश्य-2 वह स्थिति है जहां पहुँच कीमत ऊपर की ओर जाती है और उसी तरह बाजार कीमत भी जाती है, फिर देय शुल्क शून्य (संदर्भ रूप) होगा।

(iii) परिदृश्य-3 वह स्थिति है जहां कीमत में नीचे की ओर उतार-चढ़ाव जाता है, फिर देय शुल्क आयातकों के लिए अत्यधिक और दंडात्मक होगा।

च. शुल्क के रूप में संदर्भ कीमत उन उत्पादों के अनुरूप नहीं है जिनके समक्ष कीमत अस्थिरता अन्य पाटनरोधी प्राधिकारियों द्वारा भी मानी गयी है। ऑस्ट्रेलियाई पाटनरोधी आयोग के नवंबर, 2013 में जारी पाटन शुल्क के स्वरूप के अनुप्रयोग संबंधी दिशा-निर्देशों पर विश्वास किया जाता है।

छ. माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी का दिनांक 18 जून, 2019 का कार्यालय ज्ञापन (ओएम) पूरी तरह से सिफारिश वाला है और संदर्भ कीमत लगाने के लिए कोई अनिवार्य दायित्व निर्धारित नहीं करता तथा उसमें इस संबंध

में किसी दिशा-निर्देश का प्रावधान नहीं है कि शुल्क के संदर्भ कीमत स्वरूप की सिफारिश कब की जानी चाहिए।

- ज. शुल्क का संदर्भ कीमत स्वरूप घरेलू उद्योग को अनुचित रूप से लाभ देता है, "लाभ कमाने" की सुविधा देता है और जनहित में नहीं है।
- झ. संबद्ध आयातों के संबंध में डीजीटीआर द्वारा बार-बार जांचें की गई हैं। प्राधिकारी ने हाल ही में यूएस और टर्की के मामले में क्रमशः दिसंबर, 2018 और मार्च, 2019 में शुल्क बंद किए जाने की सिफारिश की। पाटनरोधी शुल्क लगभग 7 वर्षों के लिए लगाए गए थे जिसके बाद प्राधिकारी ने निर्णय लिया कि शुल्क बंद किए जाने चाहिए। दो आवेदक कंपनियां डीसीडब्ल्यू और जीएचसीएल पाटनरोधी जांच शुरू करने के लिए आवेदन पत्र बार-बार दायर करने में लगी रहीं। कानून का प्रयोजन घरेलू उद्योग की अनुचित व्यापार से रक्षा करना है और यह अदक्ष उद्योगों की रक्षा करने के लिए एक संरक्षणवादी अस्त्र नहीं है।
- ञ. धारा 9ख(1)(क) पर यह उल्लेख करने के लिए विश्वास किया जाता है कि संबद्ध सामानों को पाटन अथवा निर्यात सब्सिडीकरण की समान स्थिति के लिए पाटनरोधी शुल्क और प्रतिकारी शुल्क दोनों के अध्यधीन नहीं रखा जा सकता। निर्दिष्ट प्राधिकारी को उसी क्षति के लिए दो बार प्रतिपूर्ति नहीं करनी चाहिए।
- ट. जांच की अवधि अर्थात् 9 माह का चयन स्वेच्छाचारी है और स्थापित कानून के विपरीत है। पाटनरोधी नियमावली के अनुसार प्राधिकारी को जांच की अवधि 12 माह और अपवादस्वरूप परिस्थितियों में न्यूनतम 6 माह तथा अधिकतम 18 माह की जांच की अवधि लेना अपेक्षित है, बशर्ते कि उस अवधि को लेने के लिए लिखित में कारण रिकॉर्ड किए जाएं। तथापि, इस मामले में 12 माह की स्थापित परिपाटी से 9 माह रखने के लिए कोई तर्क नहीं दिया गया है।
- ठ. वर्तमान जांच में टर्की से सोडा सनायी ए. एस. द्वारा निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दायर किया गया है। तथापि, कंपनी का नाम टर्की सिसेव केम फैब्रिकलारी एनोनिम सिरकेटी परिवर्तित है। नाम परिवर्तन कंपनी के शेयरों के दिनांक 27.04.2020 के विलय करार द्वारा टी. सिसेव केम फैब्रिकलारी ए. एस. (संक्षेप में) में विलय का परिणाम है जिसे 24.07.2020 को कैपिटल मार्केट बोर्ड (सीएमबी) द्वारा स्वीकार किया गया था। विलय के भाग के रूप में सोडा सनायी के शेयरधारक सोडा सनायी शेयरों में उनके प्रति एक कुरुष सामान्य मूल्य के बदले 1.15997 (टीआरवाई में मात्रा राशि दोनों में) सिसकेम शेयर प्राप्त करेंगे। टी. सिसेव केम फैब्रिकलारी ए. एस. निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर दायर करते समय सोडा सनायी ए. एस. की सबसे बड़ी शेयरधारक थी और विलय को यहां उसी के आलोक में देखे जाने की आवश्यकता है। सोडा सनायी ए. एस. शेयर विलय के बाद भी टी. सिसेव केम फैब्रिकलारी ए. एस. के तहत एक मात्र सोडा ऐश संयंत्र है। अतः यह अनिवार्य है कि प्राधिकारी सोडा सनायी ए. एस. द्वारा दायर उत्तर के संबंध में सभी व्यावहारिक प्रयोजनों के लिए उपर्युक्त नाम परिवर्तन को स्वीकार करें। विलय से सोडा सनायी ए. एस. के संयंत्रों और प्रचालनों में कोई अन्य परिवर्तन नहीं आए हैं क्योंकि विलय केवल शेयरों की उपयुक्त संख्या के आबंटन के माध्यम से ही प्रभावी हुआ है। दिनांक 27.04.2020 का विलय करार, दिनांक 24.07.2020 का सीएमबी से अनुमोदन आदि प्राधिकारी को उपलब्ध करा दिए गए हैं।

प्राधिकारी द्वारा जांच

17. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों की निम्नलिखित रूप में जांच की गई है:
 - क. प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली तथा व्यापार सूचना संख्या 10/2018 में अपनाए जा रहे दृष्टिकोण के अनुसार गोपनीयता के दावों पर विचार किया है।
 - ख. जहां तक हितबद्ध पक्षकारों के इस अनुरोध का संबंध है कि प्राधिकारी को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आरोपित क्षति टर्की से सोडा ऐश के आयातों पर समांतर प्रतिकारी शुल्क जांच के मद्देनजर सीमा प्रशुल्क अधिनियम, 1975 की धारा 9ख(1)(क) के अनुसार दो बार ऑफसेट नहीं है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि समांतर जांच करने पर कोई प्रतिबंध नहीं है, बशर्ते कि शुल्क क्षति मार्जिन से अधिक न हो। साथ ही, यदि उत्पाद पर पहले ही पाटनरोधी शुल्क लग रहा हो, तो लगाया गया प्रतिकारी शुल्क देय पाटनरोधी शुल्क और प्रतिकारी शुल्क, यदि कोई है, की मात्रा के बीच के अंतर के बराबर होगा।

- ग. 9 माह की जांच की अवधि का चयन स्वैच्छिक नहीं है क्योंकि यूएसए और टर्की से संबद्ध सामानों पर पाटनरोधी शुल्क लागू थे और प्राधिकारी ने यूएसए और टर्की के विरुद्ध क्रमशः 14 दिसंबर, 2018 और 14 मार्च, 2019 को शुल्क बंद करने की सिफारिश की थी। इस प्रकार, घरेलू उद्योग के निष्पादन पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने शुल्क बंद करने के बाद की अवधि पर विचार किया। साथ ही, जांच की अवधि के संबंध में डब्ल्यूटीओ के दिशा-निर्देश कम से कम 6 माह की जांच की अवधि बताते हैं। 12 माह से कम की अवधि की जांच की अवधि के संबंध में कोई प्रतिबंध नहीं है, यद्यपि इस जांच की शुरुआत के बाद जांच की अवधि नियमों में शामिल है। प्राधिकारी ने विगत में 12 माह से भिन्न जांच की अवधि पर विचार किया है और इस मामले में कोई भिन्न मानक नहीं अपनाया गया है।
- घ. प्राधिकारी नोट करते हैं कि शुल्क का कोई भी स्वरूप निर्यात कीमतों में समान तरीके से तरीके में नहीं आ सकता क्योंकि विभिन्न मानदंडों के प्रकार्य हैं और अलग-अलग समय पर विभिन्न शेयरधारकों से अलग-अलग उत्तर मांग सकते हैं। इस संबंध में, प्राधिकारी शुल्क के संदर्भ कीमत स्वरूप की सिफारिश के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों को नोट करते हैं और उन्होंने तथ्यों तथा परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए तथा यह सुनिश्चित करते हुए कि कमतर शुल्कों के प्रावधानों का उल्लंघन न हो, उपयुक्त रूप में स्वीकार्य उपाय पर विचार किया है।
- ङ. प्राधिकारी निर्यातक सोडा सनायी ए. एस. टर्की के नाम को यह मानते हुए टर्की सिसेव केम फैब्रिकलारी एनोनिम सिरकेटी में परिवर्तन को स्वीकार करते हैं कि सोडा सनायी ए. एस. का टर्की सिसेव केम फैब्रिकलारी एनोनिम सिरकेटी में विलय हो गया है और इस विलय से सोडा सनायी ए. एस. के संयंत्रों और प्रचालनों में कोई अन्य परिवर्तन नहीं हुआ है।

ड. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण

ड.1 घरेलू उद्योग द्वारा अनुरोध

18. घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- क. टर्की और यूएसए में संबद्ध वस्तुओं की कीमत का साक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रयास किए गए थे। हालांकि घरेलू उद्योग लेन-देन की वास्तविक कीमतों के रूप में संबद्ध वस्तुओं की कोई सूचना/कीमतों का साक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाया था। इस कारण से आवेदकों ने संबद्ध देशों में प्रचलित उत्पाद के उपभोग के उद्देश्य से कीमत का निर्धारण करने के लिए अप्रैल-नवंबर, 2019 के लिए एचआईएस मार्किट: ग्लोबल सोडा ऐश मासिक प्रकाशनों में प्रकाशित कीमतों पर विश्वास किया है।
- ख. संबद्ध देशों से निर्यात कीमत का समायोजन निम्नलिखित खर्च के लिए किया गया है जो संबद्ध देश के निर्यातकों ने भारत को निर्यात करने के लिए अर्थात् समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, कमीशन, अंतरदेशीय धुलाई, बैंक प्रभार और पोर्ट संबंधी खर्च किए हैं।
- ग. सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर विचार करते हुए, पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है। संबद्ध देशों से इस प्रकार से निर्धारित पाटन मार्जिन न्यूनतम स्तरों से ऊपर और बहुत अधिक हैं।
- घ. प्राथमिक जांच परिणाम यह सिद्ध करते हैं कि पाटन मार्जिन न्यूनतम से अधिक हैं और काफी हैं। तथापि, आवेदक मार्जिन को कम मानते हैं।
- ङ. पाटन मार्जिन उस उत्पाद के लिए निर्धारित किए जाने की आवश्यकता है जो सोडा ऐश है और प्राधिकारी तथा अन्य देशों द्वारा जो पूर्व में किया गया है, किस्म-वार निर्धारण आवश्यक नहीं है। वस्तुतः डीजीसीआईएस द्वारा दी गई सूचना भी यह दर्शाएगी कि डैंस और लाइट सोडा ऐश की कीमत में कोई खास अंतर नहीं है।
- च. प्राधिकारी ने नोट किया है कि स्वतंत्र और संबद्ध कंपनियों में मानने योग्य कीमत संबंधी अंतर है और यह कि निर्यातक ने यह सिद्ध नहीं किया है कि प्राथमिक जांच परिणाम के प्रयोजन के लिए व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में गृह बाजार में संबद्ध क्रेता की बिक्री है, प्राधिकारी ने स्वतंत्र ग्राहकों को बिक्री पर ही विचार किया है। आंकड़ों और साक्ष्यों के आधार पर यह सिद्ध करना निर्यातक का दायित्व है कि ये बिक्रियां व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में की गई हैं।

ड.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अनुरोध

19. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:

- क. जांच की अवधि अप्रैल, 2019 से दिसंबर, 2019 है। हालांकि नवंबर, 2019 तक वर्तमान जांच शुरू करने के लिए सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के संबंध में इन आंकड़ों पर विश्वास किया गया। इस संबंध में कोई ब्यौरा उपलब्ध नहीं कराया गया कि किस आधार पर इन कीमतों को तय किया गया था और एचआईएचएस मार्किट पर गोपनीयता का दावा किया गया है। यह स्पष्ट नहीं है कि क्या दिसंबर, 2019 तक याचिकाकर्ताओं द्वारा उपलब्ध कराए गए अद्यतित आंकड़े उसी स्रोत अथवा कुछ अन्य स्रोत पर विश्वास करते हैं।
- ख. टर्की और यूएसए के लिए कारखानागत निर्यात कीमत को पूर्ण रूप से कम करके बताया गया है। एचयूएल ने अपनी आयात कीमत के आधार पर कारखानागत निर्यात कीमत का निर्धारण किया है और बाजार सूचना के अनुसार याचिकाकर्ताओं और व्यापारियों की मार्जिन द्वारा समायोजन का दावा किया गया है। निर्यात की कीमत टर्की के लिए 220-240 यूएस डालर प्रति मी. टन और यूएसए के लिए 200-220 यूएस डालर प्रति मी. टन के बीच है।
- ग. पाटन मार्जिन यदि उचित तुलना की जाए तो नकारात्मक होगा। डैंस की एनआईपी में डैंस की पहुँच कीमत।
- घ. सोडा सनायी ने केवल डैंस की निर्यात किया है, यहां तक कि यद्यपि उसने लाइट और डैंस दोनों का उत्पादन किया है।
- ड. कंपनियों के मामले में अप्रत्यक्ष बिक्री स्पष्ट रूप से "सामान्य" वाणिज्यिक परिपाटी के "अनुरूप" हैं और उन्हें सामान्य मूल्य निर्धारण में पात्र बिक्री में माना जा सकता है। संबद्ध पक्षकार के माध्यम से बिक्री को भी पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 2.1 और भारतीय पाटनरोधी नियमावली की भी कीमत तथा अन्य अपेक्षाओं के कारण से ओसीटी परीक्षण के अध्यधीन रखा जा सकता है और अकेला संबंध सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजन के लिए लेन-देन तथा कीमतों को अविश्वसनीय नहीं बनाता।
- च. यह नहीं कहा जा सकता कि इस प्रकार बेचे गए 85-95 प्रतिशत सामानों की कीमतों का ह्रास हुआ है और अवास्तविक रूप से सामान्य मूल्य के क्षेत्र से अलग करने के लिए कम हैं।
- छ. टीसीएसएपी के लिए सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए संबद्ध पक्षकार के लेन-देनों पर विचार किया जाना चाहिए।
- ज. प्राथमिक जांच परिणाम में परिकलित मार्जिन के अनुसार टीसीएसएपी के लिए अलग शुल्क दर की सिफारिश की जानी चाहिए।

ड.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

20. धारा 9क(1)(ग) के अधीन, किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का तात्पर्य है:

- (i) व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की तुलनीय कीमत जब वह उप नियम (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातक देश या क्षेत्र में खपत के लिए नियत हो, अथवा
- (ii) जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की कोई बिक्री न हुई हो अथवा जब निर्यातक देश या क्षेत्र की बाजार विशेष की स्थिति अथवा उसके घरेलू बाजार में कम बिक्री मात्रा के कारण ऐसी बिक्री की उचित तुलना न हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा:-
 - (क) समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत जब उसका निर्यात उप-धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से किया गया हो; अथवा उपधारा- (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत एवं लाभ हेतु उचित वृद्धि के साथ उद्गम वाले देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत;

(ख) परंतु यदि उक्त वस्तु का आयात उदगम वाले देश से भिन्न किसी देश से किया गया है और जहां उक्त वस्तु को निर्यात के देश से होकर केवल यानांतरण किया गया है अथवा ऐसी वस्तु का उत्पादन निर्यात के देश में नहीं होता है, अथवा निर्यात के देश में कोई तुलनीय कीमत नहीं है, वहां सामान्य मूल्य का निर्धारण उद्गम वाले देश में उसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा।

21. प्राधिकारी ने संबद्ध देश के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजी जिसमें उन्हें यह सलाह दी गई थी कि वे प्राधिकारी द्वारा निर्धारित रूप में और तरीके से सूचना उपलब्ध कराएं।
22. निम्नलिखित विदेशी उत्पादकों ने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है:
 - क. सीयरलेस वैली मिनरल्स इंक, यूएसए
 - ख. मै. टाटा केमिकल्स सोडा ऐश पार्टनर्स ("टीसीएसएपी"), प्रोड्यूसर, यूएसए
 - ग. मै. टाटा केमिकल्स इंटरनेशनल प्रा. लि. ("टीसीआईपीएल"), यूएसए
 - घ. ईटीआई सोडा यूरेटिम प्जारलामा नकलियत वे इलेक्ट्रिक यूरेटिम सनायी वे टिकेरेट ए. एस., टर्की
 - ङ. कजान सोडा इलेक्ट्रिक यूरेटिए ए. एस. टर्की
 - च. सिनेर आईसी वे डिस टिकेरेट ए. एस. (सीआईडीटी), टर्की
 - छ. तुर्किये सिसेव कैम फैब्रीकलार। एनोनिम सिरकेटी (पूर्व सोडा सनायी ए. एस., टर्की)
23. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि प्राधिकारी हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध को नोट करते हैं और उन्होंने उत्पादक/निर्यातक द्वारा प्रस्तुत किए गए उत्तर के आधार पर पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन का मूल्यांकन किया है।

यूएसए के उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य और कारखानागत निर्यात कीमत का निर्धारण

सीयरलेस वैली मिनरल्स इंक, यूएसए और टाटा केमिकल्स सोडा ऐश पार्टनर्स ("टीसीएसएपी")

ड.3.1. सामान्य मूल्य का निर्धारण

24. सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए, प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद के संबंध में उत्पादन की लागत और एसजीए खर्च के संदर्भ में लाभ अर्जित करने वाली घरेलू बिक्री संबंधी लेन-देन का निर्धारण करने के लिए व्यापार जांच की सामान्य प्रक्रिया की है। जहां लाभ अर्जित करने वाली लेन-देन 80 प्रतिशत से अधिक है वहां प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए घरेलू बाजार में सभी प्रकार के लेन-देन पर विचार किया और यदि लाभप्रद लेन-देन 80 प्रतिशत से कम है तब केवल लाभ पर घरेलू बिक्री सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए विचार किया जाता है।

सीयरलेस वैली मिनरल्स इंक, यूएसए

25. सीयरलेस वैली मिनरल्स इंक द्वारा प्रस्तुत किए गए उत्तर से, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि कंपनी ने जांच की अवधि के दौरान घरेलू बाजार में विचाराधीन उत्पाद की सीधी बिक्री की है।
26. इसके अलावा, यह देखा गया है कि कंपनी ने घरेलू और भारतीय बाजार में इस सामग्री की बिक्री प्रत्यक्ष रूप से और सहयोगी कंपनियों के माध्यम से दोनों तरीके से की है। हालांकि निर्यातक ने यह दर्शाने के लिए कोई औचित्य और साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया है कि किस प्रकार से सहयोगी पक्षकारों को ये बिक्री व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में है। इस पर विचार करते हुए कि निर्यातक ने यह सिद्ध नहीं किया है कि किस प्रकार से सहयोगी कंपनियों को बिक्री व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में की गई है, प्राधिकारी ने अपनी सहयोगी कंपनी को इस कंपनी द्वारा किया है। उपर्युक्त के अध्यक्षीन प्राधिकारी ने यूएसए से दोनों उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत की गई प्रश्नावली के उत्तर पर विचार किया है और उसे लिया है। व्यापार की जांच की सामान्य प्रक्रिया के आधार पर, असंबंधित ग्राहकों को लाभ पर घरेलू बिक्री सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए उन मामलों में लिया गया है जहां लाभप्रद बिक्री 80 प्रतिशत से कम थी। जहां कहीं भी लाभ पर बिक्री 80 प्रतिशत से अधिक थी, सामान्य मूल्य का निर्धारण कुल घरेलू बिक्री के आधार पर किया गया है। कीमत समायोजनों की अनुमति जैसा कि दावा किया गया है अगले निर्धारण के लंबित

रहने तक दी गई है। तदनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण कारखानागत स्तर पर *** डॉलर/मी. टन के रूप में किया गया है।

मै. टाटा केमिकल्स सोडा ऐश पार्टनर्स ("टीसीएसएपी"), उत्पादक, मै. टाटा केमिकल्स इंटरनेशनल प्रा. लि. ("टीसीआईपीएल") और मै. टाटा केमिकल्स लि. ("टीसीएल")

27. उत्पादक/निर्यातक ने जांच की अवधि के दौरान अपने घरेलू बाजार में *** मी. टन संबद्ध वस्तु बेची है जिसमें असहयोगी ग्राहकों को *** मी. टन और सहयोगी ग्राहकों *** मी. टन तथा एएलसीएडी, भागीदार, एक संबंधित व्यापारी (जो इसे आगे अंतिम ग्राहकों/प्रयोक्ताओं को बेचता है) *** मी. टन शामिल है। प्राधिकारी उत्पादक/निर्यातक के अनुरोध को नोट करते हैं और दोहराते हैं कि चूंकि स्वतंत्र और संबंधित कंपनियों की कीमत में बढ़ने योग्य अंतर है और यह कि निर्यातक ने यह सिद्ध नहीं किया है कि व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में घरेलू बाजार में संबंधित क्रेता को बिक्री की गई है, प्राधिकारी ने प्राथमिक जांच परिणाम में अपनाए गए अनुसार स्वतंत्र ग्राहकों को बिक्री पर ही विचार किया है। इसके अतिरिक्त, व्यापार परीक्षण की सामान्य प्रक्रिया अर्थात् ओसीटी परीक्षण यद्यपि संबद्ध और स्वतंत्र दोनों क्रेताओं के लिए सामान्य है, तथापि संबद्ध पक्षकारों को बिक्री के लिए परीक्षण आस-पास होने के नाते और सिद्ध किए जाने की आवश्यकता है। दावा किए गए अनुसार और आगे निर्धारण होने तक कीमत समायोजनों की अनुमति दी गई है। पर्याप्त और ओसीटी परीक्षण लागू करने के बाद "सामान्य मूल्य" *** डॉलर/मी. टन होता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका से अन्य सभी उत्पादक/निर्यातक

28. यूएसए के अन्य सभी उत्पादकों/निर्यातकों जिन्हें असहयोगी माना जाता है, के संबंध में प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के संबंध में उपलब्ध तथ्यों के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है। यूएस के उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रश्नावली के उत्तर पर इस उद्देश्य से विचार किया गया है। घरेलू बाजार में सबसे अधिक सामान्य मूल्य लिया गया है।

इ.3.2 निर्यात कीमत

सीयरलेस वैली मिनरल्स इंक, यूएसए

29. सीयरलेस वैली मिनरल्स इंक, यूएसए द्वारा प्रस्तुत किए गए उत्तर से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि सीयरलेस वैली मिनरल्स इंक संबद्ध वस्तुओं का एक उत्पादक और निर्यातक है। जांच की अवधि के दौरान, सीयरलेस वैली मिनरल्स इंक, यूएसए ने भारत को सीधे *** मी. टन की सीमा तक संबद्ध वस्तुओं का निर्यात किया है। समुद्री भाड़े, ऋण लागत, रखरखाव खर्च, कमीशन, बीमा, विदेशी भाड़ा और विदेशी मुद्रा की हानि के प्रति समायोजनों का दावा उत्पादक/निर्यातक द्वारा किया गया है। समुद्री भाड़े, ऋण लागत, रखरखाव खर्च, कमीशन, बीमा, विदेशी भाड़ा के प्रति समायोजन की अनुमति प्राधिकारी द्वारा दी गई है। तदनुसार भारत को निर्यातों के लिए निर्धारित निबल निर्यात कीमत का निर्धारण यूएस डा.*** प्रति मी. टन के रूप में किया गया है। पहुंच मूल्य की गणना डा.*** प्रति मी. टन के रूप में की गई है।

मै. टाटा केमिकल्स सोडा ऐश पार्टनर्स ("टीसीएसएपी"), उत्पादक, मै. टाटा केमिकल्स इंटरनेशनल प्रा. लि. ("टीसीआईपीएल") और उसका संबंधित आयातक मै. टाटा केमिकल्स लि. ("टीसीएल")

30. मै. टाटा केमिकल्स सोडा ऐश पार्टनर्स ("टीसीएसएपी"), यूएसए, उत्पादक ने *** मी. टन का निर्यात किया है जिसमें मै. टाटा केमिकल्स इंटरनेशनल प्रा. लि. ("टीसीआईपीएल"), सिंगापुर को अपने संबंधित निर्यातक के माध्यम से भारत को *** मी. टन शामिल है और उसके साथ ही जांच की अवधि के दौरान भारत में मै. टाटा केमिकल्स लि. ("टीसीएल") एक संबंधित आयातक को प्रत्यक्ष रूप से *** मी. टन भी शामिल है। जांच की अवधि में भारत को संबद्ध वस्तुओं के *** डा. प्रति मी. टन की कारखानागत निर्यात कीमत पर विचार भाड़ा एवं डिलीवरी शुल्क पर समायोजनों पर विचार करने के बाद किया गया है। पहुंच मूल्य का मूल्यांकन ***डालर/मी. टन के रूप में किया गया है।

यूएसए से असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

31. प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर यूएसए के असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण किया है जिसके लिए यूएसए के उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत की गई प्रश्नावली के उत्तर पर विचार किया है। भारत को निर्यात के लिए सबसे कम बिक्री कीमत पर विचार किया है।

टर्की के उत्पादकों/निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य और कारखानागत निर्यात कीमत का निर्धारण

ईटीआई सोडा यूरेटिम पाजरलामा नकलीयत वे इलेक्ट्रिक यूरेटिम सानावी वे टिकेरेट ए.एस और काजन सोडा इलेक्ट्रिक यूरेटिम ए.एस.- फाइनर ग्रुप

क) ईटीआई सोडा यूरेटिम पाजरलामा नकलीयत वे इलेक्ट्रिक यूरेटिम सानावी वे टिकेरेट ए.एस(संक्षेप मी ईटीआई सोडा)

32. उत्पादक साइनर ग्रुप ऑफ कंपनीज से है और वह प्राकृतिक सोडा ऐश का उत्पादन करता है तथा इसने केवल डेंस सोडा ऐश का उत्पादन और बिक्री की है जैसा कि कंपनी द्वारा दावा किया गया है। ईटीआई सोडा ने जांच की अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद के *** मी. टन का उत्पादन किया है। कंपनी ने स्वतंत्र ग्राहकों को प्रत्यक्ष तौर पर विचाराधीन उत्पाद का *** मी. टन की बिक्री की है और घरेलू बाजार में अपनी संबंधित कंपनियों को *** मी. टन की बिक्री की है। संबंधित कंपनियों में से, केवल एक संबंधित कंपनी अर्थात् साइनर आईसी वे डिस टिकेरेट ए. एस. (सीआईडीटी) ने घरेलू बाजार में स्वतंत्र ग्राहकों को विचाराधीन उत्पाद का *** मी. टन बेचा था। प्राधिकारी उत्पादक/ निर्यातक के अनुरोध को नोट करते हैं और यह दोहराते हैं कि चूंकि संबद्ध एवं गैर-संबद्ध कंपनियों को घरेलू बिक्री कीमत के बीच काफी अंतर है और यह कि निर्यातक ने यह सिद्ध नहीं किया है कि व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में गृह बाजार में संबंधित क्रेता को बिक्री की गई है, प्राधिकारी ने प्राथमिक जांच परिणाम में अपनाए गए अनुसार स्वतंत्र ग्राहकों को ईटीआई की सीधी बिक्री (*** मी. टन) के आधार पर सामान्य मूल्य पर विचार किया है। इसके अतिरिक्त, व्यापार की सामान्य प्रक्रिया परीक्षण अर्थात् ओसीटी परीक्षण यद्यपि संबद्ध और स्वतंत्र क्रेताओं, दोनों के लिए सामान्य है, तथापि संबद्ध पक्षकारों को बिक्री के लिए परीक्षण आस-पास होना और सिद्ध किए जाने की आवश्यकता है।
33. ईटीआई सोडा सीआईडीटी द्वारा प्रस्तुत की गई निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तरों की जांच की गई है। ईटीआई सोडा द्वारा अपने घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं की घरेलू बिक्री कीमतों के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण की अनुमति देने के लिए प्रतिनिधिक और अर्थक्षम है। व्यापार की जांच की सामान्य प्रक्रिया घरेलू बिक्री के लेन-देनवार आंकड़ों और ईटीआई द्वारा उपलब्ध कराए गए लागत संबंधी आंकड़ों पर भी किया जाता है। इस प्रकार से निर्धारित सामान्य मूल्य जांच की अवधि के लिए यूएस डा. *** मी. टन है।

ख) काजन सोडा इलेक्ट्रिक यूरेटिम ए.एस. (संक्षेप में काजन)

34. उपर्युक्त उत्पादक साइनर ग्रुप ऑफ कंपनीज से भी है और यह प्राकृतिक सोडा ऐश का उत्पादन करता है तथा इसने केवल सोडा ऐश डेंस का उत्पादन और बिक्री की थी जैसाकि कंपनी द्वारा दावा किया गया है। काजन सोडा इलेक्ट्रिक यूरेटिम ए.एस. ने जांच की अवधि के दौरान *** मी. टन विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन किया था। कंपनी ने प्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्र ग्राहकों को घरेलू बाजार में *** मी. टन विचाराधीन उत्पाद की बिक्री की थी। कंपनी ने अपनी संबंधित कंपनियों को घरेलू बाजार में *** मी. टन विचाराधीन उत्पाद की भी बिक्री की थी जिसमें से इसकी संबंधित कंपनियों में से एक कंपनी अर्थात् साइनर आईसी वे डिस टिकेरेट ए. एस. (सीआईडीटी) ने घरेलू बाजार में स्वतंत्र ग्राहकों को *** मी. टन की बिक्री की थी। सामान्य मूल्य के उद्देश्य से, प्राधिकारी ने काजन से स्वतंत्र ग्राहकों को सीधी बिक्री (*** मी. टन) पर ही यह ध्यान में रखते हुए विचार करना है कि संबंधित और असंबंधित को उत्पादक की बिक्री कीमत में बढ़ने योग्य अंतर है और यह कि निर्यातक ने यह सिद्ध नहीं किया है कि यह बिक्री व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में घरेलू बाजार में संबंधित क्रेता को की गई है।
35. काजन और सीआईडीटी द्वारा प्रस्तुत किए गए निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तरों की जांच की गई है। काजन द्वारा अपने घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं की घरेलू बिक्री कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण की अनुमति देने के लिए प्रतिनिधिक और अर्थक्षम है। व्यापार की जांच की सामान्य प्रक्रिया को भी लेन-देनवार घरेलू बिक्री आंकड़ों तथा काजन द्वारा उपलब्ध कराए गए लागत संबंधी आंकड़ों पर किया जाता है। इस प्रकार से निर्धारित सामान्य मूल्य जांच की अवधि के लिए यूएस डा. ***/मी. टन है।

ग) तुर्कीये सिसेव कैम फैब्रीकलारा एनोनिम सिरकेटी (पूर्व सोडा सनायी ए. एस., टर्की)- दि सिसेकामग्रुप

36. उत्पादक सिसेकामग्रुप ऑफ कंपनी से है और यह सिंथेटिक सोडपा ऐश का उत्पादन करता है और इसने सोडा ऐश डेंस और सोडा ऐश लाइट दोनों का उत्पादन और बिक्री की थी। छ. तुर्कीये सिसेव कैम फैब्रीकलारा एनोनिम सिरकेटी जांच की अवधि के दौरान *** मी. टन विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन किया है। कंपनी ने प्रत्यक्ष तौर पर सवतंत्र ग्राहकों को घरेलू बाजार में विचाराधीन उत्पाद का *** मी. टन और संबंधित कंपनियों जिन्होंने बिना किसी पुनः बिक्री के कच्चे माल के रूप में इसकी खपत की थी, को घरेलू बाजार में *** मी. टन विचाराधीन उत्पाद की बिक्री की है। यह भी नोट किया जाता है कि कंपनी ने बुल्गारिया और बोसनिया अपनी संबंधित कंपनी से *** मी. टन सोडा ऐश का आयात किया था और इस प्रकार से आयात की गई मात्रा को भी *** मी. टन की कुल घरेलू बिक्री में शामिल किया गया है। कंपनी ने दावा किया कि चूंकि ये सामग्री टर्की के मूल के नहीं हैं अतः सामान्य मूल्य को आयात की गई सामग्री की बिक्री पर विचार किए बिना अपने निजी निर्मित वस्तुओं के आधार पर गणना किए जाने की आवश्यकता है। कंपनी ने आगे यह दावा किया है कि चूंकि उन्होंने भारत को केवल सोडा ऐश डेंस की बिक्री की थी अतः घरेलू बाजार में केवल सोडा ऐश डेंस की बिक्री पर विचार सामान्य मूल्य की गणना के लिए किए जाने की आवश्यकता है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि उत्पादक ने डेंस और लाइट दोनों ग्रेडों के लिए केवल एक लागत का दावा किया है जिसमें आयात किए गए सोडा ऐश और फिर घरेलू बाजार में बेचा गया सोडा ऐश शामिल है। इस विश्लेषण को तब केवल सोडा ऐश तक ही सीमित रखने के लिए कोई साक्ष्य और औचित्य नहीं है जब निर्यातक ने परिशिष्ट 8 में डेंस, लाइट और आयात की गई वस्तुओं के लिए एक समेकित लागत को स्वयं उपलब्ध कराया है। इस कारण से सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के उद्देश्य से, दोनों ग्रेडों अर्थात् सोडा ऐश, डेंस और लाइट(*** मी. टन) जिसमें आयात की गई सामग्री भी शामिल है, के स्वतंत्र ग्राहकों को बेची गई संबद्ध वस्तुओं की प्रत्यक्ष बिक्री पर विचार किया गया।

37. कंपनी द्वारा प्रस्तुत किए गए निर्यातक की प्रश्नावली के उत्तरों की जांच की गई है। उत्पादक द्वारा अपने घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तुओं की घरेलू बिक्री, अपने घरेलू बिक्री कीमतों के आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण की अनुमति देने के लिए प्रतिनिधक और अर्थक्षम है। व्यापार की जांच की सामान्य प्रक्रिया उत्पादक द्वारा लेन-देनवार घरेलू कीमत संबंधी आंकड़ों और लागत आंकड़ों पर भी किया जाता है। इस प्रकार से निर्धारित सामान्य मूल्य जांच की अवधि के लिए यूएस डा. *** प्रति मी. टन है।

टर्की से सभी अन्य उत्पादक/निर्यातक

38. टर्की से सभी अन्य उत्पादकों/निर्यातकों के संबंध में, जिन्हें असहयोगी माना गया है, प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर सामान्य मूल्य निर्धारित किया है। टर्की से उत्पादकों द्वारा दायर प्रश्नावली के उत्तरों पर इस प्रयोजन के लिए विचार किया गया है। घरेलू बाजार में उच्चतम सामान्य मूल्य अपनाया गया है।

निर्यात कीमत

ईटीआई सोडा यूरेटिम पाजरलामा नकलीयत वे इलेक्ट्रिक यूरेटिम सानावी वे टिकेरेट ए.एस और काजन सोडा इलेक्ट्रिक यूरेटिम ए. एस. - दि साइनर ग्रुप

क) ईटीआई सोडा यूरेटिम पाजरलामा नकलीयत वे इलेक्ट्रिक यूरेटिम सानावी वे टिकेरेट ए.एस

39. प्राधिकारी ने जांच की अवधि के दौरान प्रत्यक्ष रूप से भारत को *** मी. टन संबद्ध वस्तुओं का निर्यात किया था। ये सभी बिक्री एफओबी शर्तों पर की गई थी। कंपनी ने अंतरदेशीय भाड़ा और पोर्ट हैंडलिंग खर्च के कारण समायोजन प्रस्तुत किए हैं और उसे कारखानागत निर्यात कीमत तय करने के लिए स्वीकार कर लिया गया है। कंपनी के लिए इस प्रकार से निर्धारित निवल निर्यात कीमत जांच की अवधि के लिए यूएस डॉलर *** प्रति मी. टन होता है। पहुंच मूल्य की गणना जांच की अवधि के लिए *** यूएस डॉलर/मी. टन के रूप में की गई है।

ख) काजन सोडा इलेक्ट्रिक यूरेटिम ए.एस

40. कंपनी ने जांच की अवधि के दौरान सीआईडीटी के माध्यम से भारत को संबद्ध वस्तुओं का 500 मी. टन निर्यात किया था। कंपनी ने अंतरदेशीय भाड़ा और पोर्ट हैंडलिंग खर्च के कारण समायोजन प्रस्तुत किए हैं और उसे

कारखानागत निर्यात कीमत तय करने के लिए स्वीकार कर लिया गया है। कंपनी के लिए इस प्रकार से निर्धारित निबल निर्यात कीमत जांच की अवधि के लिए यूएस डालर *** प्रति मी. टन होता है। पहुंच मूल्य की गणना जांच की अवधि के लिए *** यूएस डालर/मी. टन के रूप में की गई है। प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच परिणाम के उद्देश्य संबंधित कंपनी के माध्यम से बिक्री पर विचार नहीं किया है।

ग) तुर्किये सिसेव कैम फैब्रीकलार। एनोनिम सिरकेटी (पूर्व सोडा सनायी ए. एस., टर्की)

41. कंपनी ने जांच की अवधि के दौरान अपने संबंधित निर्यातक अर्थात् सिसेकम डिस टिकारेट ए.एस. जिन्होंने निर्यातक की प्रभावली का उत्तर भी प्रस्तुत किया है, के माध्यम से *** मी. टन और प्रत्यक्ष रूप तौर पर भारत को संबद्ध वस्तुओं का *** मी. टन वस्तुओं का निर्यात किया था। कंपनी ने अंतरदेशीय भाड़ा, पोर्ट हैंडलिंग खर्च, समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, कमीशन (संबंधित पक्षकार के माध्यम से बिक्री के मामले में) के कारण समायोजन प्रस्तुत किए हैं और उसे कारखानागत निर्यात कीमत तय करने के लिए स्वीकार कर लिया गया है जो जांच की अवधि के लिए यूएस डालर ***/मी. टन होता है। पहुंच मूल्य की गणना जांच की अवधि के लिए *** यूएस डालर/मी. टन के रूप में की गई है।

टर्की से असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

42. प्राधिकारी ने उपलब्ध तथ्यों के आधार पर तुर्की से असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत निर्धारित की है जिसके लिए तुर्की से उत्पादकों द्वारा दायर प्रभावली के उत्तरों पर विचार किया गया है। भारत को निर्यातों के लिए निम्नतम बिक्री कीमत पर विचार किया गया है।

इ.3.3. पाटन मार्जिन

43. ऊपर में दिए गए अनुसार सामान्य मूल्य और यथानिर्धारित निर्यात कीमत पर विचार करते हुए, प्राधिकारी ने संबद्ध देशों के सभी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए जांच की अवधि के दौरान पाटन मार्जिन का निर्धारण किया है।

क्र.सं.	उत्पादक कंपनी का नाम	सामान्य मूल्य (अम. डॉ./मी. टन)	निबल निर्यात कीमत (अम. डॉ./मी. टन)	पाटन मार्जिन (अम. डॉ./मी. टन)	पाटन मार्जिन (%)	पाटन मार्जिन
क	टर्की					
1	क) ईटीआई सोडा यूरेटिम पजारलामा नकलीयत वे इलेक्ट्रिक यूरेटिम सानाई वे टिकैरेट ए.एस.	***	***	***	***	10-20
	ख) काजन सोडा इलेक्ट्रिक यूरेटिम ए.एस.	***	***	***	***	10-20
	साइनर ग्रुप की भारित औसत	***	***	***	***	10-20
2	छ. तुर्किये सिसेव कैम फैब्रीकलार। एनोनिम सिरकेटी	***	***	***	***	0-10
3	कोई अन्य उत्पादक /निर्यातक	***	***	***	***	10-20
ख.	यूएसए					
4	सीयरलेस वैली मिनरल्स इंक	***	***	***	***	20-30
5	टाटा केमिकल्स सोडा ऐश पार्टनर्स ("टीसीएसएपी")	***	***	***	***	20-30
6	कोई अन्य उत्पादक /निर्यातक	***	***	***	***	30-40

44. यह देखा गया है कि पाटन मार्जिन बहुत अधिक है और यह संबद्ध देशों में से प्रत्येक देश से किए गए निर्यातों के संबंध में न्यूनतम से अधिक है।

च. क्षति का आंकलन और कारणात्मक संपर्क

च.1. घरेलू उद्योग द्वारा किया गया अनुरोध

45. घरेलू उद्योग द्वारा किया गया अनुरोध निम्नानुसार है:

- क. विचाराधीन उत्पाद की बिक्री दो रूपों अर्थात् लाइट और डेंस में की जाती है। आयात अधिकांश रूप में डेंस रूप में होता है जिसका प्रमुख रूप से उपयोग ग्लास क्षेत्र द्वारा किया जाता है। इस प्रकार से घरेलू उद्योग पर आयातों का प्रतिकूल प्रभाव ग्लास निर्माण क्षेत्र में देखा जाएगा।
- ख. संबद्ध वस्तुओं की मांग/स्पष्ट खपत में जांच की प्रस्तावित अवधि के दौरान वृद्धि हुई।
- ग. संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा में स्वतंत्र रूप और सापेक्ष दोनों रूपों में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। शुल्क को समाप्त किए जाने के बाद, संबद्ध देशों से आयातों में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। संबद्ध देशों से आयातों में आधार वर्ष से लेकर जांच की अवधि में वृद्धि हुई है। उत्पादन और खपत (कैप्टिव को छोड़कर) की तुलना में आयातों में भी बहुत अधिक सीमा तक वृद्धि हुई है।
- घ. संबद्ध देशों, यूरোपियन यूनियन, कीनिया और अन्य प्रमुख देशों तथा शेष देशों की क्षति की अवधि के दौरान कीमतों का बढ़ना यह दर्शाता है कि संबद्ध देशों से पहुंच कीमत कीनिया और यूरोपियन यूनियन सहित अन्य सभी प्रमुख देशों से अब कम हैं।
- ङ. संबद्ध देशों से आयात की कीमतें घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों से बहुत कम रही हैं और इसके फलस्वरूप कीमत में बहुत अधिक कटौती हुई है। भाड़ा और छूट को बाहर करने के बाद निवल बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) के आधार पर कीमत में कटौती का निर्धारण आवेदन के प्रोफार्मा, व्यापार की वास्तविकता के अनुरूप और कीमत में कटौती का निर्धारण करने के उद्देश्य से है। कीमत में कटौती का निर्धारण बिक्री कीमत के आधार पर और न कि एनएसआर के आधार पर किया जाना चाहिए।
- च. बिक्री की लागत और बिक्री की कीमत में वृद्धि के बावजूद, बिक्री की कीमत में वृद्धि पाटनरोधी शुल्क के लागू रहने तक बिक्री की लागत में वृद्धि की तुलना में पहले बहुत अधिक थी। हालांकि, हाल की अवधि में कीमतों में तेजी से गिरावट आ रही है। आवेदक कंपनियों में से एक कंपनी की कीमत सूची यह दर्शाती है कि सूची कीमतों में भी बहुत अधिक हद तक गिरावट आई है।
- छ. चूंकि बहुत कम समय अवधि में आयातों में वृद्धि हुई है अतः तिमाही विश्लेषण किया गया है। बिक्री की लागत में वृद्धि हुई है और बिक्री की कीमत 2019-20 की पहली तिमाही से घट रही है। बिक्री की लागत में वृद्धि की दर पहुंच कीमत में वृद्धि की दर से बहुत अधिक है। संबद्ध देशों से आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत के स्तर से कम है। इस प्रकार से आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर न्यूनकारी और ह्रासकारी प्रभाव पड़ रहा है जिसके परिणामस्वरूप लाभप्रदता पर प्रतिकूल रूप से प्रभाव पड़ रहा है। आयात अधिकांश रूप में डेंस रूप में किया जाता है और इस प्रकार से आयात डेंस सोडा ऐश के उपभोक्ता क्षेत्र अर्थात् ग्लास निर्माण उद्योग में बहुत अधिक प्रतिस्पर्धा कर रहा है।
- ज. घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री में मांग में वृद्धि और बढ़ी हुई क्षमता के साथ क्षति की अवधि में वृद्धि हुई है। हालांकि, घरेलू उद्योग का उत्पादन और बिक्री उससे कम है जो पाटन आयातों जिसमें बहुत हद तक वृद्धि हुई है, के न होने पर इसका हो सकता था। तिमाही वृद्धि यह दर्शाती है कि मांग में वृद्धि के बावजूद, घरेलू बिक्री में कमी आई है। मांग में वृद्धि के बावजूद मालसूची में वृद्धि हुई है।
- झ. संबद्ध आयातों के बाजार हिस्से में जांच की अवधि में आधार वर्ष से बहुत अधिक वृद्धि अर्थात् 254 प्रतिशत तक वृद्धि हुई है। हालांकि घरेलू उद्योग के हिस्से में वृद्धि हुई है, घरेलू उत्पादकों के हिस्से में समग्र रूप से गिरावट आई।

- ज. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में 2018-19 तक सुधार हुआ और जांच की प्रस्तावित अवधि में इसमें गिरावट आई। आवेदकों ने यह अनुरोध किया कि चूंकि ग्लास क्षेत्र में आयातों का अधिकांश रूप में उपयोग किया जाता है अतः घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गैर-ग्लास क्षेत्र की तुलना में ग्लास में अधिक गिरावट आई है।
- ट. निवेश पर लाभ (आरओआई) में क्षति की अवधि के दौरान प्रगामी रूप से वृद्धि हुई है। बढ़ती हुई मांग के परिदृश्य में, मालभंडार में वृद्धि हुई है, हालांकि यह केवल घरेलू उद्योग के साथ नहीं बढ़ा है बल्कि अन्य घरेलू उत्पादकों के मामले में भी बढ़ा है।
- ठ. घरेलू उद्योग में मालसूची के स्तर में क्षति की अवधि में वृद्धि हुई है। बढ़ती हुई मांग के परिदृश्य में मालसूची बढ़नी चाहिए था, तथापि वह घरेलू उद्योग में ही नहीं बढ़ी बल्कि अन्य घरेलू उत्पादकों के पास भी बढ़ी है।
- ड. क्षमता में वृद्धि पर विचार करते हुए कर्मचारियों की संख्या और मजदूरी में भी वृद्धि हुई है। हालांकि आवेदकों ने यह अनुरोध किया कि वह संबद्ध वस्तुओं के कार्य-निष्पादन पर ही निर्भर नहीं हैं बल्कि उसे देश की विधायी अपेक्षाओं और उद्योग की व्यापार संबंधी विभिन्न बाध्यताओं द्वारा भी शासित किया जाता है।
- ढ. घरेलू उद्योग का विकास उत्पादन, घरेलू बिक्री के मामले में सकारात्मक था। हालांकि मालसूची, लाभ, नकद लाभ और निवेश पर लाभ के मामले में वृद्धि जांच की अवधि में नकारात्मक थी।
- ण. दक्षिण अफ्रीका ने 2019 में संयुक्त राज्य अमेरिका से सोडा ऐश के आयातों के विरुद्ध निर्णायक समीक्षा जांच में 5 वर्षों के लिए शुल्क बढ़ाए।
- त. प्राथमिक जांच परिणामों में जांच की अवधि में बढ़े हुए आयात, उद्योग की कीमतों की कटौती करने वाले आयात, कीमत न्यूनीकरण करने वाले आयात, सकारात्मक एवं काफी कम कीमत पर बिक्री, नकद लाभ में गिरावट, लाभ एवं नियोजित पूंजी पर आय, क्षति का खतरा दर्शाने वाली अधिशेष क्षमताएं पाई गई थीं।
- थ. परिवहन लागत भारतीय उद्योग के लिए विशिष्ट नहीं है। 2019 की एनुअल सिनर ग्रुप रिपोर्ट में सिनर ग्रुप ने निष्कर्ष निकाला कि सोडा ऐश उद्योग संभारिकी गहन था और यह कि सुपुर्दगी लागत की काफी राशि अधिकतर भाड़ा लागतों पर आई। भाड़ा लागतों में वृद्धि से अंतिम सुपुर्दगी लागत में काफी वृद्धि होती है जिससे सोडा ऐश अन्य प्रतिस्थापनों की अपेक्षा कम प्रतिस्पर्धी हो जाता है। निर्यातक इसे देखते हैं। इस प्रकार, कीमत कटौती के परिकलन में भाड़े को हटाना सभी मामलों में पूरी तरह से लागू नहीं किया जाना चाहिए और इसकी अपेक्षा इसे उद्योग-वार देखा जाना चाहिए।
- द. आयात कीमतों में गिरावट से घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में भी काफी गिरावट आई जिससे लाभप्रदता और कम हुई तथा आयात बढ़े।
- ध. संबद्ध देशों द्वारा नई उत्पादन क्षमताएं स्थापित की गई हैं। यूएस जियोलॉजिकल सर्वे 2019 ने टर्की में उत्पादन क्षमता 4 मिलियन और 5 मिलियन टन के बीच होने का दावा किया है। सोडा ऐश के निर्यात 2014-18 में सीएजीआर 117 प्रतिशत पर बढ़े हैं। यूएसए की उत्पादन क्षमता सोडा ऐश के 305,000 टन प्रति वर्ष तक बढ़ी और कुल 14 मिलियन टन तक बढ़ी।
- न. आईएचएस मार्केट रिपोर्ट (28 फरवरी, 2020) के अनुसार, संबद्ध देशों से निर्यात विशेषकर, मलेशिया और इंडोनेशिया में ही देखे गए समान स्तरों पर भारत को निर्यात काफी बढ़े हैं। कोविड-19 से टर्की के घरेलू बाजार में 10 प्रतिशत तक की गिरावट आई और भारतीय उप-महाद्वीप को निर्यातों में गिरावट आई। यूएसए की घरेलू बाजार मांग और निर्यात मांग में भी गिरावट आई है। इस प्रकार, कठिन घरेलू मांग में भारतीय बाजार और अधिक लक्ष्य बन सकता है।
- प. सिनर रिसोर्सेस एलपी की 2020 की पहली तिमाही रिपोर्ट के अनुसार, महामारी से प्रभावित गिरावट के बावजूद सिनर ने उत्पादन में वृद्धि देखी। मालसूची स्तरों, उत्पादन, क्षमता उपयोग में भी वृद्धि देखी गई है। सिनर ग्रुप का सबसे बड़ा ग्राहक एएनएसएसी रद्द किया गया था, इस प्रकार अधिक जोर भारतीय उद्योग पर दिया जाना है। चूंकि सिनर एक कम लागत का उत्पादक है और कंपनी के यूएस तथा टर्की प्रभाग

निर्यात मात्राओं को संयुक्त करने, अपने बाजार हिस्सों को अंतर्राष्ट्रीय रूप से अनुकूल बनाने के लिए निर्धारित हैं। अतः, क्योंकि भारत संबद्ध देशों के लिए सोडा ऐश का एक अनुकूल बाजार है, अतः घरेलू उत्पादकों की बढ़ती हुई हानि की संभावना बढ़ जाती है।

- फ. आरएसपीएल की वास्तविक लागत पर प्राधिकारी द्वारा विचार नहीं किया गया। डीजीटीआर द्वारा एनआईपी निर्धारण में अनुकूलित लागत शामिल है, क्षति मार्जिन निर्धारण में भाड़े को शामिल न करने से शुल्कों की मात्रा कम हुई है, बाजार कीमतों पर बिक्री उत्पाद बेचना और इन कीमतों में गिरावट यह दर्शाती है कि आरएसपीएल को क्षति हुई है।
- ब. नियोजित पूंजी पर 22 प्रतिशत आय कैसे औचित्यपूर्ण नहीं है, इसका साक्ष्य नहीं दिया गया है। सेसटेट ने पाया कि 22 प्रतिशत आय निर्दिष्ट प्राधिकारी की सतत परिपाटी के अनुसार वैध है। खंडन करने वाले पक्षकार पर उसे सिद्ध न करने का दायित्व है।
- भ. नियोजित पूंजी का मूल्यांकन निर्धारित परिसंपत्तियों के वर्तमान मूल्य पर किया जाना है, इसकी सूचना आरएसपीएल द्वारा किए गए निवेशों के रूप में रिकॉर्ड में है। जीएचसीएल और डीसीडब्ल्यू द्वारा किए गए निवेश काफी पुराने हैं और इसीलिए निवल नियत परिसंपत्तियां निवेशों का सही मूल्य नहीं दर्शातीं। प्राधिकारी तीन कंपनियों की सूचना के साथ-साथ क्षति की अवधि में प्रति यूनिट एनएफए पर विचार करेंगे जो खुद ही नए तथा पुराने निवेशों के बीच अंतर दर्शाएगा।
- म. घरेलू उत्पादकों के पास कम उपयोग की गई क्षमता है, इस प्रकार डैस सोडा ऐश की कोई कमी नहीं है। निर्धारित शुल्क ही जांच की अवधि में ही नहीं बल्कि जांच की अवधि के बाद भी लागत में तदनुसूची गिरावट के बिना आयात कीमत में तेजी से गिरावट पर विचार करते हुए अनुचित व्यापार से रक्षा कर सकता है। निर्धारित शुल्क मांग-आपूर्ति अंतराल में सबसे उपयुक्त है।
- य. घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री में मांग में वृद्धि के मद्देनजर क्षति की अवधि में वृद्धि हुई और क्षमता बढ़ी, तथापि यह उससे कम है जो पाटित आयातों के अभाव में हो सकती थी। आयात कीमतों में तेजी से गिरावट के कारण काफी वृद्धि संभव थी। देश में बढ़ती हुई तथा काफी मांग के बावजूद संबद्ध आयातों की काफी वृद्धि की तुलना में क्षमता, उत्पादन, बिक्री सामान्य रूप से बढ़ी। आयातों में वृद्धि के बावजूद घरेलू बिक्री में गिरावट आई है।
- कक. किसी भी प्राधिकारी ने क्षति की अवधि में कीमत कटौती निर्धारित नहीं की है और यदि की वस्तुतः पीसीएन शामिल है तो क्षति की अवधि में कोई कीमत कटौती निर्धारित नहीं की जा सकती। घरेलू उद्योग जांच की अवधि के लिए ही पूरी क्षति अवधि के लिए क्षति का आरोप नहीं लगाता।
- खख. बिक्री लागत में वृद्धि के बावजूद जांच की अवधि में आयात कीमत में गिरावट आई। याचिकाकर्ता प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए अपनी कीमतें बढ़ाने में असमर्थ थे।
- गग. घरेलू उद्योग मार्च, 2019 तक पाटनरोधी शुल्क के आंशिक संरक्षण के कारण 2018-19 तक अपने निष्पादन में सुधार करने में सक्षम थे। तथापि, पाटनरोधी शुल्क के अभाव के कारण इसमें गिरावट आई। जीएचसीएल की 2019-20 के तीसरी तिमाही के परिणामों से उसके निष्पादन पर विश्वास करना गलत और भ्रामक है। तिमाही-वार विश्लेषण आवश्यक है, यद्यपि क्षेत्र का राजस्व बढ़ सकता था, क्षेत्र के परिणामों में काफी गिरावट आई है।
- घघ. सोडा ऐश विस्तार ऋण, कैपेक्स कार्यक्रम, मध्यावधि ऋण और आरएंडडी पहले वे कारक हैं जो भारत में बढ़ती हुई मांग के कारण बढ़ती हुई क्षमताओं के दावे का समर्थन करते हैं। पाटित आयातों की मौजूदगी में घरेलू उद्योग का निवेश और क्षमता का विस्तार बेकार सिद्ध हो रहा है और उसके निष्पादन को कुप्रभावित कर रहा है।
- डड. परिवहन लागत भारतीय उद्योग के लिए विशिष्ट नहीं है क्योंकि निर्यातक भी भाड़े में वृद्धि से लागत में वृद्धि का दावा करते हैं। इसके अतिरिक्त, वे इसे ग्राहकों पर भी लगाने में असमर्थ हैं।

- चच. निरमा का विवरण जांच की अवधि से पूर्व के वर्ष के लिए लिये गए हैं। किसी तरह विवरण अपरिणामी हैं क्योंकि कंपनी के कारोबार में सोडा ऐश डिवीजन का 36 प्रतिशत हिस्सा होना किसी बात को सिद्ध नहीं करता।
- छछ. चारों कारकों के संबंध में वास्तविक क्षति का खतरा सिद्ध है, ऐतिहासिक रूप से और वर्तमान क्षति की अवधि के लिए दोनों में आयातों में काफी वृद्धि दी गई है; संबद्ध देशों में घरेलू मांग के संबंध में सरकारी एजेंसियों और निर्यातकों की कंपनी की रिपोर्टों से पर्याप्त आंकड़े, अधिशेष क्षमताएं और काफी न्यूनीकरण अथवा हासमान प्रभाव आगे के आयातों के लिए मांग में वृद्धि करेंगे।
- जज. अत्यधिक गोपनीयता का कारण अत्यधिक व्यापार संवेदी सूचना है जिसे सार्वजनिक किया जा सकता है, उसकी गोपनीयता नियमों के तहत संरक्षित है।
- झझ. यूएस निर्यात सब्सिडीकृत नहीं हैं और इसीलिए निर्यातों में सब्सिडी घरेलू उद्योग को क्षति का कारण नहीं हो सकती।
- ञञ. पहले, स्वतंत्र और संबद्ध कंपनियों में काफी कीमत अंतर है और निर्यातक ने यह सिद्ध नहीं किया है कि व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में गृह बाजार में संबद्ध क्रेता को बिक्री है, प्राथमिक जांच परिणाम के प्रयोजन के लिए प्राधिकारी ने केवल स्वतंत्र ग्राहकों को बिक्री पर ही विचार किया है। बिक्री की सामान्य प्रक्रिया सिद्ध करने का भार निर्यातक पर है।
- टट. चीन से आयात उच्च कीमतों पर थे और इस प्रकार उसे संबद्ध देश के रूप में नहीं माना गया है जो घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचा रहा है।
- ठठ. मांग के साथ-साथ आयातों में गिरावट आई है, तथापि खपत और उत्पादन के संबंध में वे अधिक हैं। जांच की अवधि में अन्य देशों से आयात उच्च कीमतों पर हैं। घरेलू उद्योग की क्षति की जांच पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-2 के अनुसार की गई है। कोविड-19 के कारण घरेलू मालसूची के वर्तमान स्तर में वृद्धि हुई, वह अपनी क्षमता का पूरा तरह से प्रयोग करने में असमर्थ है और साथ ही उस सीमा तक बिक्री करने में समर्थ नहीं है जिस सीमा तक आयातों के लिए उत्पादन होता है।
- डड. वार्षिक जीएचसीएल रिपोर्ट का चुनिंदा संदर्भ दिया गया है। आयातों से सामानों की अधिक आपूर्ति हुई है जिससे बड़ी हुई मालसूची का भी दावा किया गया है।
- ढढ. उद्योग मांग को पूरा करने में विफल नहीं है। आईएचएस मार्केट रिपोर्ट सप्लीमेंट इश्यू संख्या 139 दिनांक 13 फरवरी, 2020 में उल्लिखित है कि भारत में मांग में वृद्धि के बावजूद अधिक आपूर्ति की गई है और 2019 में भारतीय आयात 3 प्रतिशत वर्ष/वर्ष तक बढ़े।

च.2. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अनुरोध

46. क्षति और कारणात्मक संपर्क के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों ने निम्नलिखित अनुरोध किए हैं:

- क. आयातों की मात्रा में सापेक्ष रूप में बहुत कम वृद्धि हुई है। बाजार के हिस्से में वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन और बिक्री की मात्रा में भी वृद्धि हुई है। जांच की अवधि के दौरान क्षमता के उपयोग पर प्रभाव घरेलू उद्योग द्वारा क्षमता में हाल में वृद्धि के कारण हुआ है जैसा कि कैप्टिव खपत में वृद्धि से भी देखा जा सकता है।
- ख. बाहरी भाड़े को निवल बिक्री प्राप्ति में शामिल किया गया है जो नियम के विरुद्ध है। यदि प्राधिकारी ग्राहक के कारखाना द्वार पर बिक्री कीमत पर विचार करने का विकल्प चुनते हैं तब पहुंच कीमत का समायोजन भी उपयुक्त रूप से इन कीमतों के बीच निष्पक्ष तुलना सुनिश्चित करने के लिए किया जाना चाहिए।
- ग. बिक्री कीमत में वृद्धि तब भी इन लागतों की तुलना में कम है जब पहुंच कीमत में वृद्धि बिक्री की लागत से अधिक हो। इस प्रकार से कीमत में कथित कटौती का प्रभाव बिक्री कीमत पर नहीं पड़ा है और इस प्रकार से कीमत न्यूनीकरण/हास नहीं हो रहा है।

- घ. कथित क्षति के मार्जिन के आधार पर एनआईपी 22,048 भारतीय रुपए प्रति मी. टन से 22,741 भारतीय रुपए प्रति मी. टन के दायरे में है। एचयूएल की आयात कीमत प्रस्तुत की गई प्रश्नावली के उत्तर के अनुसार इससे बहुत अधिक है।
- ङ. राजस्व और ब्याज तथा कर पूर्व आय – घरेलू बिक्री में पिछले कुछ वर्षों के दौरान बहुत अधिक हद तक वृद्धि हुई है जिसे याचिकाकर्ता कंपनियों की वार्षिक रिपोर्टों से भी देखा गया है।
- च. क्षति, यदि कोई हो स्वयं के कारण और याचिकाकर्ता द्वारा ऋण लेने, निवेश, क्षमता में वृद्धि और अनुसंधान एवं विकास क्रियाकलाप जैसे कारकों के द्वारा हुई है जो वार्षिक रिपोर्ट से स्पष्ट है।
- छ. देश में कुल मांग के 20 प्रतिशत से अधिक को आयातित सामग्री से पूरा किया जाना अपेक्षित है। इसके लिए, जनवरी, 2020 के हाल के आईएचएस प्रकाशन से पुष्टि की जा सकती है। इस प्रकार, किसी मात्रात्मक प्रभाव के लिए आयातों को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है।
- ज. कटौती को जांच की अवधि सहित क्षति अवधि के लिए प्रदान किया जाना चाहिए और वह कथित कीमत कटौती और कथित क्षति के बीच किसी कारणात्मक संबंध के निर्धारण हेतु संगत होगी।
- झ. वास्तविक क्षति का कोई खतरा नहीं है। यू एस ए और टर्की से भारत को संबद्ध वस्तु के निर्यात का प्रतिशत हिस्सा मामूली है। अन्य देशों में टर्की से निर्यात कीमतें दर्शाती हैं कि टर्की से भारत को निर्यात कीमत वास्तव में उच्चतर है। संबद्ध वस्तु की मालसूची का कोई साक्ष्य नहीं दिया गया है।
- ञ. लाइट सोडा ऐश उत्पादक आरएसपीएल को उच्चतर एनआईपी के लिए शामिल किया गया है।
- ट. औद्योगिक इनपुट के लिए 10-20 प्रतिशत में आरओआई उपयुक्त है और एनआईपी के लिए 22 प्रतिशत निर्धारण नहीं माना जाना चाहिए।
- ठ. अधिकृत डैस आयातकों, जो कम आपूर्ति के कारण आयात कर रहे हैं, को अधिक शुल्क देने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए। अतः निर्धारित शुल्क से अनुचित कठिनाई उत्पन्न हुई है।
- ड. यद्यपि संबद्ध देशों से आयात बढ़ सकते थे, तथापि इन आयातों से घरेलू उद्योग पर प्रभाव नहीं पड़ा है। यह इसलिए है क्योंकि घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री में देश में संबद्ध सामानों की मांग स्पष्ट रूप से तेजी से बढ़ी है जो घरेलू उद्योग को मात्रात्मक क्षति का अभाव दर्शाता है।
- ढ. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्राथमिक जांच परिणामों के पैरा 69 में खुद ही नोट किया है कि (क) घरेलू उद्योग ने क्षमता में वृद्धि की है; (ख) मांग और क्षमता में वृद्धि के मद्देनजर क्षति अवधि के दौरान उत्पादन और घरेलू बिक्री में वृद्धि हुई है; और (ग) जांच की अवधि में घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में गिरावट मै. आरएसपीएल द्वारा नई क्षमताएं बढ़ाए जाने के कारण है।
- ण. निर्दिष्ट प्राधिकारी से अनुरोध है कि वे कीमत कटौती का परिकलन करते समय भाड़े को शामिल करने के घरेलू उद्योग के तर्क को रद्द करें, जैसा कि निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा विगत जांच में माना गया है और अंतिम जांच परिणाम में भाड़े को अलग करते समय कीमत कटौती का परिकलन करें।
- त. कीमत कटौती लाभप्रदता के अनुरूप प्रत्येक वर्ष के लिए दी जानी चाहिए। आयात कीमतें बढ़ीं और बिक्री लागत भी बढ़ी, परंतु घरेलू उद्योग ने अपनी कीमतें नहीं बढ़ाई, इसलिए कोई न्यूनीकरण/ह्रास नहीं है। क्षति की अवधि में लाभ बढ़ा और आरओसीई सकारात्मक है। आरओसीई में गिरावट प्रमुख रूप से क्षमता में वृद्धि के कारण है।
- थ. वार्षिक रिपोर्टें, घरेलू उद्योग की निवेशक रिपोर्टें यह भी सिद्ध करती हैं कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में क्षति की अवधि में काफी सुधार हुआ है। अतः घरेलू उद्योग को यदि कोई क्षति है तो वह अन्य कारकों के कारण है।
- द. घरेलू उद्योग को क्षति पहुँचाने वाले अन्य कारकों में ऋण, बढ़ी हुई क्षमता और जीएचसीएल द्वारा किए गए अन्य आरएंडडी क्रियाकलाप शामिल हैं, जैसा कि उसकी वार्षिक रिपोर्ट 2018-19 दर्शाती है। इसी प्रकार डीसीडब्ल्यूएल ने भी क्षमता बढ़ाई और डीसीडब्ल्यू लि. की वार्षिक रिपोर्ट 2018-19 में नोट किए गए अनुसार कुछ निवेश किए।

- ध. घरेलू उद्योग कुछ संधारिकी लागतों पर खर्च करता है क्योंकि विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन सुविधाएं अधिकतर देश के पश्चिमी तट (अर्थात् गुजरात राज्य में) में स्थित हैं, जबकि विचाराधीन उत्पाद की मांग पूरे देश में फैली है जिसके परिणामस्वरूप क्रेताओं/प्रयोक्ताओं के लिए अधिक लागत आती है।
- न. अन्य उत्पादकों का निष्पादन – निरमा वार्षिक रिपोर्ट 2018-19 यह दर्शाती है कि उसने अपनी स्थिति सोडा ऐश में समेकित की है और सोडा ऐश का देश के कारोबार में 36 प्रतिशत हिस्सा है।
- प. आंकड़ों से युक्त तालिका कुल राजस्व, कर पूर्व लाभ दर्शाने वाली प्रस्तुत की गई है और निरमा, डीसीडब्ल्यू, टाटा और जीएचसीएल द्वारा कच्ची सामग्री का प्रयोग 2017-18 से 2018-19 तक इन मानदंडों में काफी वृद्धि दर्शाता है।
- फ. वास्तविक क्षति के खतरे के लिए चारों कारकों की मौजूदगी पर विचार किया जाना होता है (निरमा लिमिटेड बनाम भारत संघ)। टर्की और यूएसए से भारत का प्रतिशत हिस्सा अन्य देशों से तुलना करने पर बहुत कम है। टर्की के लिए यह 2017-18 में 5.05 प्रतिशत था और जांच की अवधि में 5.43 प्रतिशत है। यूएसए के लिए यह 2017-18 में 2.47 प्रतिशत था और जांच की अवधि में 4.16 प्रतिशत है। निपटान योग्य क्षमताएं सिद्ध करने में विफल रहा। काफी मालसूची का स्तर का दावा करने के लिए कोई साक्ष्य नहीं दिया गया।
- ब. कारणात्मक संपर्क के साक्ष्य के तहत सीवीडी याचिका में याचिकाकर्ताओं ने उल्लेख किया है कि यूएसए से आयात उच्चतर कीमतों पर हैं। अतः क्षति यूएसए के कारण नहीं हो रही है और प्राधिकारी को यूएसए के विरुद्ध जांच रद्द करनी चाहिए।
- भ. जांच की शुरुआत के बाद आयातों में गिरावट आई है, इसलिए प्राधिकारी को अनंतिम शुल्कों की सिफारिश करने की आवश्यकता नहीं है। प्राधिकारी ने (i) अन्य देशों से आयातों और उसके प्रभाव; (ii) अनुबंध-2 के पैरा (ii) और (iv) के अनुसार निष्पादन; और (iii) उद्योग पर कोविड के प्रभाव का विश्लेषण नहीं किया है।
- म. कारणात्मकता के लिए जीएचसीएल की 2019-20 की वार्षिक रिपोर्ट पर विश्वास किया गया है। यह रिपोर्ट कोविड के कारण मांग न्यूनीकरण दर्शाती है और उसका कम क्षमता उपयोग दर्शाती है। 91 प्रतिशत उपयोग है जो यह दर्शाता है कि जीएचसीएल को आयातों के कारण क्षति नहीं हो रही है। रिपोर्ट में उल्लेख है कि सोडा ऐश व्यवसाय अच्छा चल रहा है। जीएचसीएल लाभप्रद है और उसे सेंट गोबेन सहित शामियाना ग्राहकों के कारण क्षति नहीं हो रही है।
- य. सेंट गोबेन केवल अतिरिक्त आवश्यकताओं के लिए आयात करता है।
- कक. क्षति टर्की से नहीं है बल्कि अन्य देशों से हो सकती है।
- खख. मालसूची में वृद्धि मंदी के कारण है। कीमत अस्थिरता कोयले के कारण है।
- गग. आवेदक उद्योग उपभोक्ता उद्योग की मांग पूरी करने में विफल है। अतिरिक्त शुल्क प्रयोक्ता उद्योग तथा सरकार के मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत पहल को गंभीर रूप से प्रभावित करेगी।
- घघ. याचिकाकर्ता संबद्ध देशों से संबद्ध सामानों के आयातों के कारण पाटन और परिणामस्वरूप क्षति का कोई मामला रिकॉर्ड में लाने में विफल रहे। इसके विपरीत, घरेलू उद्योग का निष्पादन बहुत सुदृढ़ स्तरों पर रहा है।

च.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

47. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों को नोट किया है और संगत पाटनरोधी नियमावली और अनुबंध-3 के अनुसार किए गए अनुरोधों पर विधिवत रूप से विचार करने के बाद विभिन्न मापदंडों की जांच की है।

संचयी मूल्यांकन

48. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (iii) में यह उपबंध है कि यदि एक से अधिक देश से किसी उत्पाद के हुए आयात के साथ-साथ पाटनरोधी जांच की जा रही है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी उस स्थिति में ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण करेंगे जब वह यह निर्धारित करें कि:-

- क. प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में पुष्टिकृत पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त दो प्रतिशत से अधिक है और प्रत्येक देश से हुए आयात की मात्रा समान वस्तु के आयात की मात्रा की 3 प्रतिशत (या अधिक) से कम है वहां संचयी रूप से आयात समान वस्तु के आयात के साथ सबसे अधिक बनता है; तथा
- ख. आयातित वस्तु एवं समान घरेलू वस्तुओं के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों के मद्देनजर आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण उचित है।
49. प्राधिकारी नोट करते हैं कि:
- क. संबद्ध वस्तु का संबद्ध देशों से भारत में पाटन किया जा रहा है। प्रत्येक संबद्ध देश से पाटन मार्जिन नियमावली के अंतर्गत विहित निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक है।
- ख. प्रत्येक संबद्ध देश से आयातों की मात्रा आयातों की कुल मात्रा के अलग-अलग रूप में 3 प्रतिशत से अधिक है।
- ग. आयातों का संचयी आकलन उचित है। संबद्ध देशों से निर्यात न केवल प्रत्यक्ष रूप से परस्पर प्रतिस्पर्धा करते हैं, बल्कि भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत समान वस्तु से भी प्रतिस्पर्धा करते हैं।
50. उपरोक्त को देखते हुए प्राधिकारी का मानना है कि घरेलू उद्योग के लिए संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों का संचयी रूप से क्षति संबंधी आकलन करना उचित है।
51. अनुबंध-2 के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 में उपबंध है कि क्षति निर्धारण में ऐसे कारकों की जांच शामिल होगी, जिनसे घरेलू उद्योग को क्षति का पता लगता हो, इसमें पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तु के घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत तथ्यों पर विचार किया जाएगा।
52. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात की जांच करना आवश्यक है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में भारी कीमत कटौती की गई है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में अत्यधिक कमी करना है या ऐसी कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी अधिक बढ़ गई होती। भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच के लिए उद्योग की दशा पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों जैसे उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, मालसूची, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा मार्जिन आदि पर पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के अनुसार विचार किया गया है।
53. क्षति और कारणात्मक संबंध के बारे में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए उन अनुरोधों जिन्हें प्राधिकारी ने संगत समझा है, की निम्नानुसार जांच और समाधान किया गया है:-

च.4 घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव

(क) मांग और स्पष्ट खपत का आकलन

54. भारत में उत्पाद की मांग या स्पष्ट खपत को भारतीय उत्पादकों की घरेलू बिक्रियों और समस्त स्रोतों से आयातों के योग के रूप में निर्धारित किया गया है। यह देखा गया है कि इस प्रकार, आकलित मांग में संपूर्ण क्षति अवधि के दौरान वृद्धि की प्रवृत्ति रही है।

मांग	इकाई	2016-17	2017-18	2018-19	जांच की अवधि	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी. टन	8,15,013	9,28,870	9,66,628	744589	992785
अन्य भारतीय उद्योगों की बिक्री	मी. टन	56,280	68,223	76,718	1,39,633	1,86,177
संबद्ध देश – आयात	मी. टन	16,07,448	16,76,320	17,74,043	12,27,401	16,36,535
अन्य देश – आयात	मी. टन	1,41,096	2,41,324	3,30,506	4,12,910	5,50,546
मांग/खपत	मी. टन	5,47,764	5,31,297	5,06,488	2,77,320	3,69,760
सूचकांक		31,67,601	34,46,034	36,54,383	28,01,853	37,35,803

(ख) संबद्ध देशों से आयात मात्राएं

55. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी के लिए यह विचार करना अपेक्षित है कि क्या संबद्ध देशों से पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन या खपत की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है। वास्तविक स्थिति निम्नानुसार है:

आयात मात्रा	इकाई	2016-17	2017-18	2018-19	जांच की अवधि	
					वास्तविक	वार्षिकीकृत
संबद्ध देश	मी. टन	141,096	241,324	330,506	412,910	550,546
सूचकांक		100	171	234	390	390
संबद्ध देश – टर्की	मी. टन	15,190	92,251	209,998	178,956	238,607
संबद्ध देश – यूएसए	मी. टन	125,906	149,073	120,508	233,954	311,939
3% से अधिक हिस्से वाले देश	मी. टन	380,814	403,379	385,423	226,974	302,633
अन्य देश	मी. टन	166,950	127,919	121,065	50,346	67,128
कुल	मी. टन	688,860	772,622	836,994	690,230	920,306

56. यह देखा गया है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों में जांच की अवधि में वृद्धि के साथ क्षति अवधि के दौरान अत्यधिक वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग ने बताया है कि पाटनरोधी शुल्क, जिसे संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर पूर्व में लगाया गया था, की समाप्ति के बाद आयातों में वृद्धि हुई है।

(ग) सापेक्ष रूप से संबद्ध देशों से आयात

57. यह देखा गया है कि उत्पादन और खपत के संबंध में पाटित आयातों में आधार वर्ष में 5.40 प्रतिशत और 4.45 प्रतिशत से जांच की अवधि में क्रमशः 17.41 प्रतिशत और 14.74 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस प्रकार, प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटन और मांग की दृष्टि से आयातों में क्षति अवधि के दौरान भारी वृद्धि हुई है। आयातों के संबंध में संबद्ध देशों से आयात आधार वर्ष में 20 प्रतिशत से बढ़कर जांच की अवधि में लगभग 60 प्रतिशत हो गए हैं।

	इकाई	2016-17	2017-18	2018-19	जांच की अवधि	
					वास्तविक	वार्षिकीकृत
उत्पादन	%	5.40	8.20	10.87	17.41	17.41
कैप्टिव सहित मांग	%	4.45%	7.00%	9.04%	14.74%	14.74%
सकल आयात	%	20.48	31.23	39.49	59.82	59.82

च.5 घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

58. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में यह विश्लेषण करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में भारी कीमत कटौती की गई है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में अत्यधिक कमी करना है या ऐसी कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा काफी अधिक बढ़ गई होती। संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव की जांच, कीमत कटौती, कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की

उत्पादन लागत, निवल बिक्री प्राप्ति, बिक्री कीमत और क्षति रहित कीमत, एनआईपी, की तुलना संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों की पहुंच कीमत के साथ की गई है।

(क) कीमत कटौती

59. कीमत कटौती विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत की तुलना संबद्ध देशों से आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है। घरेलू उद्योग ने यह दलील दी है कि परिवहन लागत संबद्ध वस्तु के उत्पादन के मामले में लागत का एक बड़ा हिस्सा होती है क्योंकि (क) घरेलू उद्योग गुजरात राज्य में स्थित है और बिक्रियां पूरे भारत में की जाती हैं और (ख) उत्पाद की कीमत को देखते हुए उपभोक्ताओं की खरीद लागत में मालभाड़ा लागत एक बड़ा हिस्सा होती है। इस प्रकार, घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत की तुलना परिवहन लागत जोड़ने के बाद ही आयात की पहुंच कीमत से की जानी चाहिए। यह देखा गया है कि संबद्ध वस्तु तुलनात्मक रूप से कम कीमत वाला उत्पाद है। इस प्रकार, प्रति एम.टी. परिवहन लागत उत्पाद की बिक्री कीमत की तुलना के समय काफी अधिक है और उससे कीमत तुलनीयता के प्रभावित होने की संभावना है। प्राधिकारी ने इस दावे पर विचार करते हुए माल भाड़ा जोड़कर और मालभाड़ा हटाकर दोनों तरह से कीमत कटौती निर्धारित की है।

माल भाड़ा के बिना कीमत कटौती

विवरण	इकाई	यूएसए	टर्की
पहुंच मूल्य	रु. /मी. टन	19,172	18,192
भाड़ा रहित निवल बिक्री प्राप्ति	रु. /मी. टन	***	***
कीमत कटौती	रु. /मी. टन	***	***
कीमत कटौती	%	***	***
कीमत कटौती		0-10	10-20

60. यह देखा गया है कि संबद्ध देशों से आयात कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम रही है। इस प्रकार, घरेलू कीमतों में कटौती हुई है।

(ख) कीमत ह्रास तथा न्यूनीकरण

61. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या पाटित आयात घरेलू कीमतों का ह्रास या न्यूनीकरण कर रहे हैं, क्षति अवधि के दौरान लागतों और कीमतों में परिवर्तनों की तुलना की गई है। वास्तविक स्थिति निम्नानुसार है:

विवरण	इकाई	2016-17	2017-18	2018-19	जांच की अवधि
बिक्री की लागत	रु. /मी. टन	***	***	***	***
सूचकांक		100	103	110	120
बिक्री कीमत	रु. /मी. टन	***	***	***	***
सूचकांक		100	101	111	111
आयातों का पहुंच मूल्य—यूएसए	रु. /मी. टन	14,185	13,805	18,067	19,172
सूचकांक		100	97	127	135
आयातों की पहुंच कीमत-टर्की	रु. /मी. टन	15,538	14,539	16,270	18,192
सूचकांक		100	94	105	117
आयातों की पहुंच कीमत—कुल	रु. /मी. टन	14,331	14,086	16,925	18,747
सूचकांक		100	98	118	131

62. यह देखा गया है कि बिक्री लागत और बिक्री कीमत दोनों में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। तथापि, यद्यपि, बिक्री लागत में जांच की अवधि में वृद्धि जारी रही है। तथापि, बिक्री कीमत में वृद्धि बिल्कुल मामूली है। यद्यपि, पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच की अवधि में बिक्री लागत 10 मूल बिन्दु तक बढ़ी है तथापि, बिक्री कीमत लगभग स्थिर रही थी। साथ ही, यद्यपि संबद्ध देशों से आयातों के पहुँच मूल्य में वृद्धि हुई है, परंतु वह घरेलू बिक्री कीमत से कम है जो घरेलू उद्योग को अपनी बिक्री कीमत बढ़ाने से रोक रहा है।

च.6 घरेलू उद्योग के आर्थिक मापदंड

63. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-11 में यह अपेक्षित है कि क्षति के निर्धारण में समान उत्पाद के घरेलू उत्पादकों पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। पाटनरोधी नियमों में आगे यह उपबंध है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव की जांच में समस्त संगत आर्थिक मापदंडों और बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय अथवा क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों; घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभावों का तथ्यपरक एवं निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होगा। प्राधिकारी ने विभिन्न तथ्यों और किए गए अनुरोधों पर विचार करते हुए क्षति संबंधी मापदंडों की तथ्यपरक जांच की है।

(क) उत्पादन, क्षमता, बिक्री तथा क्षमता उपयोग

64. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, बिक्री तथा क्षमता उपयोग निम्नलिखित तालिका में दिया गया है:-

विवरण	इकाई	2016-17	2017-18	2018-19	जांच की अवधि	जांच की अवधि (ए)
क्षमता	मी. टन	1046,000	10,71,000	12,18,500	11,44,500	15,26,000
सूचीबद्ध		100	102	116	146	146
उत्पादन	मी. टन	8,78,326	10,19,514	10,71,986	9,37,514	12,50,019
सूचीबद्ध		100	116	122	142	142
क्षमता उपयोग	%	84%	91%	84%	82%	82%
सूचीबद्ध		100	108	100	98	98
घरेलू बिक्री	मी. टन	8,15,013	9,28,870	9,66,628	7445,89	992785
सूचीबद्ध		100	114	119	122	122

65. यह देखा गया है कि:

क. घरेलू उद्योग ने क्षमता में वृद्धि की है। आरएसपीएल ने 500,000 मी. टन के संयंत्र के साथ जांच की अवधि में उत्पादन शुरू किया है जबकि जीएचसीएल ने 2018-19 में क्षमता में वृद्धि की है। उत्पाद की मांग में विगत वर्षों में वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि घरेलू उत्पादकों ने संबद्ध वस्तु की मांग को देखते हुए क्षमताओं में वृद्धि की है।

ख. मांग और क्षमता में वृद्धि के मद्देनजर क्षति अवधि के दौरान उत्पादन और घरेलू बिक्री में वृद्धि हुई है।

ग. घरेलू उद्योग की क्षमता उपयोग में जांच की अवधि में गिरावट आई है तथापि, ऐसा मै. आरएसपीएल द्वारा नई क्षमता जोड़ने के कारण भी हो सकता है।

(ख) लाभप्रदता, निवेश पर आय और नकद लाभ

66. क्षति अवधि के दौरान घरेलू की लाभप्रदता, निवेश पर आय और नकद लाभ नीचे तालिका में दिए गए हैं:-

विवरण	इकाई	2016-17	2017-18	2018-19	जांच की अवधि	जांच की अवधि (ए)
बिक्री की लागत	रू./मी. टन	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	103	110	120	120
बिक्री कीमत	रू./मी. टन	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	101	111	111	111
लाभ/(हानि) प्रति इकाई	रू./मी. टन	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	98	113	88	88
लाभ/(हानि) – कुल	लाख रूपए	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	111	133	124	124
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ	लाख रूपए	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	108	128	136	136
ब्याज एवं कर पूर्व लाभ	रू./मी. टन	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	95	108	97	97
नकद लाभ	लाख रूपए	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	112	133	137	137
प्रति इकाई नकद लाभ	रू./मी. टन	***	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	98	112	98	98
निवेश पर आय –एनएफए	%	***	***	***	***	***
निवेश पर आय –एनएफए		40-50	30-40	20-30	10-20	10-20
सूचीबद्ध		100	74	51	40	40

67. यह देखा जाता है कि:

क. यद्यपि, सकल नकद लाभ और ब्याज पूर्व लाभ में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है, तथापि, यह देखा गया है कि प्रति इकाई नकद लाभ और ब्याज पूर्व लाभ में गिरावट आई है।

ख. क्षति अवधि के दौरान नियोजित पूंजी पर आय में उत्तरोत्तर गिरावट आई है और वह पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में 2018-19 और जांच की अवधि में अधिक कम हुआ है।

68. घरेलू उद्योग ने तर्क दिया है कि जांच अवधि के दौरान लाभप्रदता में निरंतर गिरावट आई है। आयात कीमत और घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत की जांच अवधि के भीतर अलग से जांच की गई है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग के लाभ और आरओआई की जांच अवधि के भीतर अलग से जांच की गई है।

क्र.सं.	माह	संबद्ध देशों से आयात कीमत		डी.आई. की बिक्री कीमत
		यूएसए	टर्की	
1	अप्रैल-19	17,116	16,463	***
2	मई -19	16,722	16,702	***
3	जून -19	17,610	16,532	***
4	जुलाई-19	18,313	16,864	***
5	अगस्त-19	17,879	16,616	***
6	सितं.-19	18,212	17,376	***
7	अक्टू.-19	-	16,875	***
8	नवंबर-19	17,285	16,883	***
9	दिसंबर-19	17,755	16,860	***

	अप्रैल –जून, 19	जुलाई –सितं. 19	अक्टू.-दिसं. 19
बिक्री की लागत	***	***	***
बिक्री कीमत	***	***	***
प्रति इकाई लाभ/ हानि	***	***	***
नकद लाभ/इकाई	***	***	***
आरओसीई	***	***	***
आरओसीई	20-30	20-30	10-20

(ग) मांग में बाजार हिस्सा

69. क्षति अवधि के दौरान मांग में बाजार हिस्सा नीचे तालिका में दिया गया है:-

विवरण	इकाई	2016-17	2017-18	2018-19	जांच की अवधि	जांच की अवधि (वार्षिकीकृत)
घरेलू उद्योग की बिक्री	%	25.73%	26.95%	26.45%	26.57%	26.57%
कैप्टिव खपत	%	1.78%	1.98%	2.10%	4.98%	4.98%
अन्य भारतीय उद्योग की बिक्री	%	50.75%	48.64%	48.55%	43.81%	43.81%
संबद्ध देश-आयात	%	4.45%	7.00%	9.04%	14.74%	14.74%
अन्य देश- आयात	%	17.29%	15.42%	13.86%	9.90%	9.90%
मांग/खपत	%	100.00%	100.00%	100.00%	100.00%	100.00%

70. यह देखा गया है कि बाजार में घरेलू उद्योग का हिस्सा बढ़ा है। तथापि, समग्र रूप से भारतीय उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में घरेलू उद्योग द्वारा जोड़ी गई नई क्षमताओं के कारण वृद्धि हुई है। इसी के साथ जांच की अवधि में संबद्ध देशों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है। घरेलू बाजार में आयातों का हिस्सा आधार वर्ष की तुलना में तीन गुना से अधिक हो गया है।

(घ) रोजगार, उत्पादकता तथा मजदूरी

71. क्षति अवधि के दौरान, घरेलू उद्योग की रोजगार, उत्पादकता और मजदूरी नीचे तालिका में दी गई है:

विवरण	इकाई	2016-17	2017-18	2018-19	जांच की अवधि	जांच की अवधि (ए)
कर्मचारियों की संख्या	सं.	2,287	2,270	2,695	2,699	2,699
सूचीबद्ध		100	99	118	118	118
मजदूरी	लाख रूपए	10,390	11,448	13,650	11,041	14,721
सूचीबद्ध		100	110	131	142	142
उत्पादकता	प्रति दिवस	2,510	2,913	3,063	3,571	3,571
सूचीबद्ध		100	116	122	142	142

72. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के रोजगार में क्षमता में वृद्धि के साथ क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। प्रदत्त मजदूरी में भी वृद्धि हुई है। उत्पादन में वृद्धि के साथ प्रतिदिन उत्पादकता में वृद्धि हुई है।

(ङ) मालसूची

73. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की मालसूची की स्थिति नीचे तालिका में दी गई है:

विवरण	इकाई	2016-17	2017-18	2018-19	जांच की अवधि
औसत	मी. टन	10,979	9,511	18,887	48,121
सूचीबद्ध		100	87	172	438

74. यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग की मालसूची में 2018-19 और उसके बाद जांच की अवधि में वृद्धि हुई है। मांग में वृद्धि की स्थिति में भी घरेलू उद्योग की मालसूची में वृद्धि हुई है।

(च) वृद्धि

75. यह देखा जाता है कि उत्पादन और मालसूची के संदर्भ में घरेलू उद्योग की वृद्धि जांच की अवधि के दौरान सकारात्मक थी और लाभ, नकद लाभ और निवेश पर आय की दृष्टि से वृद्धि नकारात्मक थी।

विवरण	2017-18	2018-19	जांच की अवधि	
			वास्तविक	वार्षिकीकृत
उत्पादन	16%	5%	17%	17%
घरेलू बिक्री	14%	4%	3	3
बिक्री की लागत	3%	7%	9%	9%
बिक्री कीमत	1%	9%	0%	0%
प्रति इकाई लाभ/हानि	-2%	15%	-22%	-22%

मालसूची	-13%	99%	155%	155%
आरओआई	-11%	-9%	-5%	-5%
प्रति इकाई नकद लाभ	-2%	14%	-11%	-11%

(छ) घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

76. संबद्ध देश से आयात की कीमतों, लागत संरचना में परिवर्तन, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा, पाटित आयातों को छोड़कर अन्य कारकों जो घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं, आदि की जांच यह दर्शाती है कि संबद्ध देशों से आयातित सामग्री का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम हैं जिससे कीमत कटौती हुई है। कीमत कटौती से भारतीय बाजार में कीमत न्यूनीकरण हुआ है। संबद्ध वस्तु की मांग में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई है और इसलिए यह घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाला कारक नहीं हो सकता है। प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटित आयात हैं।

च.7 क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

77. प्राधिकारी ने यथासंशोधित अनुबंध-III के साथ पठित पाटनरोधी नियमावली में निर्धारित सिद्धांतों के आधार पर घरेलू उद्योग की क्षतिरहित कीमत निर्धारित की है। विचाराधीन उत्पाद की एन आई पी का निर्धारण जांच अवधि के लिए उत्पादन लागत से संबंधित सत्यापित सूचना/आंकड़ों को अपनाकर किया गया है। घरेलू उद्योग की निर्धारित एन आई पी ज्ञात की गई है और क्षति मार्जिन के परिकलन हेतु उसकी तुलना संबद्ध देशों से उत्पादकों/निर्यातकों की पहुंच कीमत के साथ की गई है। "सभी अन्य" दर को प्राधिकारी के पास उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है।

क्र.सं.	उत्पादक कंपनी का नाम	एनआईपी (डॉलर/मी. टन)	पहुंच कीमत (डॉलर/मी. टन)	क्षति मार्जिन (डॉलर/मी. टन)	क्षति मार्जिन %	क्षति मार्जिन
क.	टर्की					
1	क) ईटीआई सोडा यूरेटिम पजारलामा नकलियत वे इलेक्ट्रिक यूरेटिम सनायी वे टिकैरेट ए.एस.	***	***	***	***	Negative
	ख) काजन सोडा इलेक्ट्रिक यूरेटिम ए.एस.	***	***	***	***	Negative
	साइनर ग्रुप की भारित औसत	***	***	***	***	Negative
2	तुर्कीयि सिसेव कैम फैब्रीकलारा एनोनिम सिरकेटी	***	***	***	***	Negative
3	कोई अन्य उत्पादकनिर्यातक/	***	***	***	***	0-10
ख	यूएसए					
4	सीयरलेस वैली मिनरल्स इंक	***	***	***	***	Negative
5	टाटा केमिकल्स सोडा ऐश पार्टनर्स ("टीसीएसएपी")	***	***	***	***	Negative
6	कोई अन्य उत्पादकर्यातकनि/	***	***	***	***	Negative

78. प्राधिकारी ने क्षति मार्जिन के निर्धारण में माल भाड़े को शामिल करने संबंधी घरेलू उद्योग के दावे को माल भाड़ा सहित और मालभाड़ा रहित दोनों के द्वारा नोट किया है। तथापि, प्राधिकारी ने मालभाड़ा जोड़े बिना क्षति मार्जिन पर विचार किया है।

छ. वास्तविक क्षति का खतरा

79. जैसा जांच शुरूआत संबंधी अधिसूचना में नोट किया गया है, आवेदकों ने दावा किया है कि आयातों में वृद्धि हुई है और उससे वास्तविक क्षति का खतरा बना हुआ है। प्राधिकारी द्वारा इस दावे की निम्नानुसार विस्तार से विश्लेषण किया गया है।

80. पाटनरोधी नियमावली में वास्तविक क्षति के खतरे के संबंध में निम्नलिखित प्रावधान है:

“अनुबंध-II पैरा (vii): वास्तविक क्षति की आशंका का निर्धारण तथ्यों पर आधारित होगा और न कि केवल आरोप, निराधार कल्पना या सुदूर संभावना पर। परिस्थितियों में परिवर्तन जिनसे ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है जिनमें पाटन से क्षति होगी, स्पष्ट रूप से दिखने चाहिए और असन्नवर्ती होने चाहिए। वास्तविक क्षति के खतरे की मौजूदगी के संबंध में निर्धारण करते समय निर्दिष्ट प्राधिकारी अन्य बातों के साथ-साथ ऐसे कारकों पर विचार करेंगे जैसे ;

- (क) भारत में पाटित आयातों में वृद्धि की अधिक दर जिससे आयातों में पर्याप्त वृद्धि की संभावना का संकेत मिलता हो।
- (ख) निर्यातक की क्षमता में पर्याप्त मुक्त रूप से निपटान योग्य, या असन्नवर्ती, पर्याप्त वृद्धि जिनसे किसी अतिरिक्त निर्यात को खपाने के लिए अन्य बाजारों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए भारतीय बाजार में पाटित निर्यातों में पर्याप्त वृद्धि की संभावना का संकेत मिलता हो।
- (ग) क्या आयात ऐसी कीमतों पर हो रहे हैं, जिनसे घरेलू कीमतों पर काफी ह्रासकारी या न्यूनकारी प्रभाव पड़ेगा और इनसे अधिक आयातों की मांग बढ़ने की संभावना है, तथा
- (घ) उस वस्तु की माल सूची की जांच की जा रही हो।”

81. घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त साक्ष्य और प्रतिवादी निर्यातकों द्वारा प्रदत्त प्रश्नावली के उत्तर की जांच की गई है।

क. संबद्ध देशों से आयातों में वृद्धि हुई है।

ख. संबद्ध देशों में उत्पादकों ने अत्यधिक क्षमताएं स्थापित की हैं और वे काफी अधिक निर्यातोंमुखी हैं।

ग. आयात ऐसी कीमत पर प्रवेश कर रहे हैं जो बिक्री कीमत से कम है और इस प्रकार, घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती कर रहे हैं। कीमत कटौती की वजह से बाजार में कीमत ह्रास हो रहा है।

घ. विदेश में अधिशेष क्षमताओं सहित कीमत कटौती की वजह से बाजार में संबद्ध वस्तु की मांग में वृद्धि होने की संभावना है।

ड. निर्यातकों के उत्तर को देखते हुए उनकी मालसूची का स्तर काफी अधिक है।

82. इस प्रकार, यह देखा गया है कि संबद्ध देशों से आयातों से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति का खतरा बना हुआ है।

83. घरेलू उद्योग और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों से प्राधिकारी निम्नलिखित नोट करते हैं:

- (i) घरेलू उद्योग ने टर्की और यूएसए में घरेलू मांग में गिरावट दर्शाने वाले साक्ष्य दिए हैं। इन रिपोर्टों से यह भी नोट किया जाता है कि भारतीय बाजार संबद्ध देशों में उत्पादक/निर्यातक के लिए प्रमुख है। अतः घरेलू बाजार में आयात काफी मात्रा में आने की संभावना है।
- (ii) यह दर्शाने के लिए भी साक्ष्य दिए गए हैं कि दोनों संबद्ध देशों में क्षमताएं और अधिक बढ़ने की संभावना है।

- (iii) जांच की अवधि के बाद के आंकड़ों के विश्लेषण, डीजीसीआईएंडएस से आयात विश्लेषण और घरेलू उद्योग द्वारा साझा की गई बिक्री कीमत के आधार पर प्राधिकारी नोट करते हैं कि आयात कीमतों में घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में गिरावट के अनुरूप निरंतर गिरावट आ रही है।
- (iv) यह भी देखा जाता है कि दक्षिण अफ्रीका ने निर्णायक समीक्षा जांच के अनुसरण में 2019 में यूएसए पर अगले पांच वर्षों के लिए सोडा ऐश के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क बढ़ाया है।

ज. गैर-आरोपण विश्लेषण

84. पाटनरोधी नियमावली के अनुसार प्राधिकारी के लिए अन्य बातों के साथ-साथ यह जांच करना अपेक्षित है कि क्या उसी समय पाटित आयातों से इतर किसी ज्ञात कारक से घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है ताकि अन्य कारकों द्वारा हुई क्षति के लिए पाटित आयातों को जिम्मेदार न ठहराया जाए। इस संबंध में संगत कारकों में अन्य बातों के साथ-साथ पाटित कीमतों पर नहीं बेचे गए आयातों की मात्रा और कीमतें, मांग में संकुचन या खपत की प्रवृत्ति में परिवर्तन, व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं और विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी में विकास और घरेलू उद्योग का निर्यात कार्य निष्पादन तथा उत्पादकता शामिल है। नीचे इस बात की जांच की गई है कि क्या पाटित आयातों से इतर कारकों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।

(क) तीसरे देशों से आयात की मात्रा तथा कीमत

85. प्राधिकारी नोट करते हैं कि हितबद्ध पक्षकारों ने यह तर्क दिया है कि चीन से आयात अधिक होने के बावजूद उन पर विचार नहीं किया गया है। इस संबंध में, यह नोट किया जाता है कि तीनों देशों से आयात या तो मात्रा में कम हैं अथवा कीमतों में अधिक (चीन सहित) हैं।

(ख) निर्यात निष्पादन

86. यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग अधिकांशतः घरेलू बाजार में है। किसी भी तरह से प्राधिकारी ने क्षति विश्लेषण के लिए घरेलू प्रचालनों के आंकड़ों पर विचार किया है।

(ग) प्रौद्योगिकी में विकास

87. क्षति अवधि के दौरान प्रौद्योगिकी में कोई ज्ञात वास्तविक विकास नहीं हुआ है। प्रौद्योगिकी में परिवर्तन से घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो सकती है।

(घ) कंपनी के अन्य उत्पादों का कार्य निष्पादन

88. प्राधिकारी ने केवल विचाराधीन उत्पाद के संबंध में घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन पर विचार किया है। घरेलू उद्योग को दावा की गई क्षति केवल संबद्ध वस्तु के संबंध में है।

(ङ) व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं तथा विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

89. ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं नहीं हैं जिनसे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो।

(च) मांग में संकुचन और खपत की प्रवृत्ति में परिवर्तन

90. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध वस्तु की मांग में पूरी क्षति अवधि के दौरान निरंतर वृद्धि हुई है। इस प्रकार, घरेलू उद्योग को क्षति मांग में संकुचन या खपत की प्रवृत्ति में परिवर्तन के कारण नहीं हुई है।
91. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए तर्क कि जीएचसीएल, एक आवेदक कंपनी ने अपनी 2019-20 की वार्षिक रिपोर्ट में कोविड के कारण मांग में न्यूनीकरण के संबंध में जो तर्क उठाए हैं, का इस जांच की जांचावधि में कोई अर्थ नहीं है जो कोविड को रोकती है।

झ. प्रकटन पश्चात विवरण अनुरोध

घरेलू उद्योग के अनुरोध

92. घरेलू उद्योग यह अनुरोध करता है कि संशोधित एन आई पी काफी हद तक कम है और यह जांच की शुरुआत और अनंतिम जांच परिणामों के चरण में निर्धारित एन आई पी से बिलकुल अलग है। घरेलू उद्योग के लिए यह विश्वास

करने का कोई कारण नहीं था कि पूर्व में निदेशालय द्वारा अपनाई गई पद्धति सही नहीं है। वर्तमान जांच में, प्राधिकारी ने अंतिम जांच परिणाम जारी किये थे। घरेलू उद्योग को यह सही ठहराने के लिए नहीं कहा गया था कि क्यों एन आई पी का परिकलन आरएसपीएल की समग्र बिक्री को शामिल करने के बाद किया जाना चाहिए। इस अचानक परिवर्तन के फलस्वरूप नकारात्मक क्षति मार्जिन हुआ है।

93. नकारात्मक क्षति मार्जिन आरएसपीएल द्वारा की गई बिक्री के बहुत बड़े हिस्से को इसके कैप्टिव होने के आधारों पर बाहर किये जाने के कारण है। जबकि इस नियमावली में संपूर्ण रूप में घरेलू उद्योग के लिए भारित औसत की गणना के लिये "घरेलू उत्पादन" के संबंधित हिस्से पर विचार करने का प्रावधान है, "घरेलू बिक्रियों के लिए उत्पादन पर विचार क्षति रहित कीमत के निर्धारण के लिए किया गया है। अन्य शर्तों में "घरेलू बिक्रियों के लिए उत्पादन" को "घरेलू उत्पादन" के रूप में माना गया है।
94. जैसा कि अनुबंध III में प्रावधान किया गया है, एन आई पी के निर्धारण के उद्देश्य से, इस नियमावली में बिक्री और कैप्टिव उपयोग के उद्देश्य से उत्पादन के बीच बिना कोई परिभाषित अंतर के विभिन्न मामलों में "उत्पादन" का उल्लेख है। इसके अलावा, अनुबंध II [पैरा (vi)] में स्पष्ट रूप से "घरेलू उत्पादन" पर विचार करने का प्रावधान है। इस कारण से "कैप्टिव उपयोग" के उद्देश्य से उत्पादन पर विचार एन आई पी के निर्धारण के लिए किये जाने की आवश्यकता है क्योंकि कैप्टिव उत्पादन का उद्देश्य घरेलू खपत के लिए उपयोग किया जाना भी है।
95. सोडा एश की कैप्टिव खपत की मात्रा का उपयोग या तो स्वयं उत्पादक द्वारा किया गया होता अथवा उपभोक्ता द्वारा किया गया होता और इस प्रकार घरेलू खपत के निर्धारण में उसे शामिल किया जाना था। यदि आरएसपीएल को एकीकृत नहीं किया गया होता तब संबद्ध वस्तुओं जो अब कैप्टिव के रूप में बताया जा रहा है, का उत्पादन घरेलू बिक्रियों में हुआ होता। हालांकि, उत्पादक बटिकल रूप से एकीकृत हैं और वह कैप्टिव रूप से इसका उपयोग कर रहा है। इसके विपरीत, यदि आरएसपीएल ने सोडा एश के लिए क्षमता का निर्माण नहीं किया होता तब घरेलू बाजार में सोडा एश की आवश्यकता अन्य उत्पादकों के द्वारा पूरी की गई होती। इस प्रकार इन दोनों में से किसी भी स्थिति में कैप्टिव उत्पादन की मात्रा को "घरेलू उत्पादन" में शामिल किया गया होता।
96. अतः, यह देखा जायेगा कि कैप्टिव के रूप में देखी जा रही बिक्री सही अर्थ में वास्तव में कैप्टिव नहीं है क्योंकि वे अलग अलग स्थानों पर की गई कैप्टिव बिक्री भी हैं जिन पर विचार किया गया है और जिनका बीजक अभिलेख पुस्तिकाओं में दिया गया है। इसके अलावा, चूंकि कैप्टिव बिक्रियां बाजार कीमत पर बुक की गई हैं अतः बाजार में कम कीमत सीधे तौर पर आरएसपीएल के कैप्टिव बाजार को प्रभावित कर रही है। इस प्रकार, कैप्टिव बाजार भी आयातों से सुरक्षित नहीं है।
97. अतीत में ऐसे कई मामले सामने आए हैं जिनमें प्राधिकरण ने एनआईपी का निर्धारण करते हुए बंदी उत्पादन पर विचार किया है। ऐसी परिस्थितियां हैं जब घरेलू उद्योग 100% "कैप्टिव खपत" की स्थिति में भी डंपिंग के कारण चोटिल हो सकता है। इस संदर्भ में ओ-एसिड से संबंधित एंटीडंपिंग जांच के संदर्भ में किया गया है, जिसमें सरकार। पहले एडीडी को लगाया गया था, भले ही पूरे ओ-एसिड को कंपनी द्वारा ही प्रयोग किया था।
98. घरेलू उद्योग संयुक्त राज्य के मामले में अपीलीय निकाय की रिपोर्ट के लिए प्राधिकरण का ध्यान आकर्षित करता है - पाकिस्तान से कॉम्बेड कपास यार्न पर संक्रमणकालीन सुरक्षा उपाय, जिसमें अपीलीय निकाय ने पाया कि घरेलू उद्योग की परिभाषा उत्पाद उन्मुख है और नहीं निर्माता उन्मुख।
99. बिक्रियों को "कैप्टिव" और "मर्चेन्ट" के बीच अंतर किया गया है और तदनुसार बाजार हिस्से का निर्धारण पृथक रूप से किया गया है। हालांकि, आरएसपीएल "सोडा एश डिवीजन" ने इस उत्पाद की "बिक्री" इसके अन्य डिवीजन को की है। यह तथ्य कि बाजार हिस्से का निर्धारण कैप्टिव खपत को शामिल करते हुए तथा शामिल नहीं करते हुए की गई है, दर्शाता है कि डी जी टी आर ने "कंपनी के अन्य डिवीजन को बिक्री" पर विचार किया है और उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है।
100. उत्पादन केवल एनआईपी के उद्देश्य के लिए (कंपनी के अन्य प्रभाग में व्यापारी और बिक्री के बीच) प्रतिष्ठित किया गया है। अन्य सभी उद्देश्यों के लिए उत्पादन को उत्पादन के रूप में माना गया है, जिसमें उत्पादन कंपनी के अन्य डिवीजन को बिक्री के लिए होता है।

101. घरेलू उद्योग यह अनुरोध करता है कि कीमत में कटौती और क्षति मार्जिन का निर्धारण करते हुए भाड़े को शामिल किया जाना चाहिए। प्राधिकारी ने अनंतिम जांच परिणाम में भाड़े के तर्क पर विचार किया था और यह नोट किया है कि हालांकि जारी किये गये प्रकटन विवरण में उसे कीमत में कटौती और भाड़े के साथ क्षति मार्जिन के लिये तय नहीं किया है।
102. आवेदक एंटी डंपिंग जांच के मामले में चुनाव आयोग के फैसले को संदर्भित करता है (सिद्धांत एंटी सब्सिडी जांच के लिए भी होता है) भारत और यूक्रेन में पोटेशियम परमैंगनेट की उत्पत्ति होती है, जिसमें निर्यातक ने कारखाने से डिपो के लिए परिवहन लागत का भत्ता मांगा था। और उसी को यह कहते हुए खारिज कर दिया गया कि संयंत्र और डिपो एक ही आर्थिक और कानूनी इकाई का हिस्सा है।
103. मामले के एक साधारण पढ़ने से, यह स्पष्ट है कि यदि माल कारखाने से डिपो में स्थानांतरित किया जाता है तो माल को इन्वेंट्री का एक हिस्सा माना जाता है। यहां तक कि लेखा मानकों के अनुसार फैक्ट्री से डिपो तक का भाड़ा उत्पादन की लागत का एक हिस्सा माना जाता है और अगर ऐसा है तो डिपो केवल एक विस्तारित फैक्ट्री गोदाम है और इसे केवल पूर्व का आधार माना जाना चाहिए -सक्रिय एनआईपी और विक्रय मूल्य। इस प्रकार, इस तरह के माल को उचित तुलना करते समय विचार किया जाएगा।
104. घरेलू उद्योग डब्ल्यूटीओ से पहले भारत की स्थिति को संदर्भित करता है, जो स्पष्ट रूप से घरेलू उद्योग की सामग्री का समर्थन करता है कि आयातित उत्पाद की कीमत की तुलना घरेलू उद्योग मूल्य के साथ उपभोग के बिंदु के करीब हो। जब सरकार भारत 146 डब्ल्यूटीओ के सदस्य देशों के समक्ष घरेलू और आयातित उत्पाद की कीमत की तुलना करने के बारे में वकालत कर रहा है, दो उत्पादों की कीमतों का स्तर क्या होना चाहिए, यह घरेलू उद्योग के खिलाफ भेदभाव और अनुचित है, यदि इसके द्वारा लागू नहीं किया जाता है स्वयं नामित प्राधिकारी
105. मूल्य कम करना और क्षति मार्जिन केवल उन आयात लेनदेन को देखते हुए निर्धारित किया जाना चाहिए जिनके आयात की भूमि की कीमत घरेलू उद्योग के विक्रय मूल्य से कम है। घरेलू उद्योग की चिंता गैरकानूनी आयातों के खिलाफ है न कि गैर-हानिकारक आयातों के खिलाफ। संदर्भ यूरोपीय समुदाय के विश्व व्यापार संगठन की रिपोर्ट के लिए किया जाता है - निंदनीय कास्ट आयरन ट्यूब पर एंटी-डंपिंग शुल्क या ब्राजील से फिटिंग
106. यूरोपीय समुदायों के मामले में विश्व व्यापार संगठन की रिपोर्ट में लागू किया गया सिद्धांत - ब्राजील से निंदनीय कास्ट आयरन ट्यूब या पाइप फिटिंग पर एंटी-डंपिंग शुल्क, मूल्य की गणना के लिए क्षति मार्जिन की गणना पर भी लागू होता है। यूरोपीय संघ, जो कम शुल्क नियम के सिद्धांत का भी पालन करता है, गैर-गैर-निर्यात निर्यात लेनदेन को छोड़कर क्षति मार्जिन निर्धारित करता है। इस प्रथा को विश्व व्यापार संगठन में चुनौती नहीं दी गई है। इस प्रकार, क्षति मार्जिन की गणना करते समय, प्राधिकरण को केवल उन लेनदेन पर विचार करना चाहिए जो क्षति मार्जिन की गणना के लिए गैर-हानिकारक कीमत से नीचे हैं। कोठारी शुगर्स एंड केमिकल्स लिमिटेड बनाम नामित प्राधिकरण के मामले में माननीय ट्रिब्यूनल के आदेश का भी संदर्भ दिया गया है, जिसने क्षति मार्जिन की गणना करने के लिए एनआईपी से ऊपर लेनदेन पर विचार करने की अनुमति दी थी

अन्य हितबद्ध पक्षकारों का अनुरोध

107. प्राधिकारी का हल्के सोडा ऐश और सघन सोडा ऐश के लिये पृथक रूप से पाटन और क्षति का अलग अलग विश्लेषण पर विचार नहीं करने का निर्णय पर फिर से विचार किये जाने की आवश्यकता है।
108. वर्तमान मामले में सकारात्मक क्षति मार्जिन एल एस ए और डी एस ए के लिये अलग अलग विश्लेषण करने में असफलता का परिणाम है और सकारात्मक पाटन मार्जिन ऐसे अनुचित विश्लेषण का परिणाम है।
109. यह भी उल्लेखनीय है कि निर्यातकों द्वारा उनके पाटन मार्जिन निर्धारण के संबंध में व्यक्त की गई चिंताओं पर भी प्राधिकारी द्वारा ध्यान नहीं दिया गया है। यदि उचित निर्धारण प्राधिकारी द्वारा निर्यातकों के ऐसे सभी सही तर्कों पर विचार करने के बाद उचित निर्धारण किया जाता है तब पाटन मार्जिन भी नकारात्मक होगा।
110. मामले का यह तथ्य इसे स्पष्ट करता है कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के कारण कोई क्षति नहीं हुई।

111. यद्यपि आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई, फिर भी आयात उचित कीमत पर हो रहा है। घरेलू उद्योग के क्षति संबंधी मानदंडों ने इन वर्षों के दौरान बहुत अधिक वृद्धि दर्शायी है। यद्यपि लाभप्रदता में जांच की अवधि तक मामूली रूप से गिरावट आई, आरओसीई अभी भी 10-20 प्रतिशत के दायरे में रहा, जिसे सोडा एश जैसे व्यापक रूप से उपयोग किये गये औद्योगिक इनपुट पर उचित लाभ के रूप में नोट किया जाना चाहिए।
112. प्राधिकारी का भाड़े को जोड़े बिना क्षति मार्जिन पर विचार करने का प्रस्ताव इस नियमावली के अनुसार है और इसके विपरीत याचिकाकर्ताओं के दावे गैर कानूनी हैं। एनआईपी, एनएसआर आदि में भाड़े को शामिल करने के लिये दावे विभिन्न जांचों में किये गये हैं और प्राधिकारी ने निरंतर रूप से इसे सही माना है कि इस नियमावली के अनुबंध III को देखते हुए क्षति मार्जिन के उद्देश्य से भाड़े को शामिल नहीं किया जा सकता है और वैसा ही दृष्टिकोण वर्तमान मामले में भी उचित है।
113. वास्तविक क्षति के खतरे की कहानी पूर्णरूप से आधारहीन है और इसलिए उसे प्राधिकारी द्वारा अलग रखा जाना चाहिए। इसके साथ ही वर्तमान मामले की शुरुआत वास्तविक क्षति के दावे के आधार पर की गई है और जब इस दावे की पुष्टि नहीं की जाती है तब वास्तविक क्षति के खतरे के तर्क का कोई अर्थ नहीं है। ये आंकड़े दर्शाते हैं कि भविष्य में भी कोई आयात वह क्षति रहित स्तरों पर होगा और इस प्रकार ये उचित आयातों को किसी पाटनरोधी शुल्क के अधीन नहीं होना चाहिए।
114. वर्तमान जांच में, प्राधिकारी ने नियम 5 के साथ पठित नियम 2(ख) के अंतर्गत निरमा और टाटा के द्वारा अपनी पात्रता के जांच करने के लिए जांच के अधीन संशोधित अवधि के लिए किये गये आयातों की मात्रा की जांच नहीं की है। हम विनम्रतापूर्वक अनुरोध करते हैं कि ऐसा कार्य आवेदक उद्योग और प्राधिकारी में से किसी के द्वारा नहीं किया गया था, यह अनुरोध किया जाता है कि प्राधिकारी की द्वारा की गई मौखिक सुनवाई के संबंध में यह नहीं कहा जा सकता है कि वह प्रभावी है और नियम 6 के संदर्भ में है। यह इस अनुरोध को हानि पहुंचाये बिना है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने नियम 2(ख) के साथ पठित नियम 5 की पूर्व शर्तों को पूरा किये बिना वर्तमान मामले की शुरुआत कर अपने क्षेत्राधिकार से आगे गये हैं।
115. इस जांच को समाप्त करना क्योंकि आवेदक द्वारा प्रस्तुत किया गया आवेदन दिनांक 7 सितंबर, 2018 की व्यापार सूचना संख्या 10/2018 के अनुरूप नहीं है।
116. वर्तमान जांच में प्राधिकारी द्वारा जिस निष्कर्ष पर पहुंचा गया उसकी पुष्टि करना कि संबद्ध देशों से सहयोगी निर्यातकों से आयातों के संबंध में आवेदक उद्योग को क्षति नहीं हुई है।
117. प्राधिकारी को संबद्ध देशों से सहयोगी निर्यातकों के विरुद्ध किसी पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश नहीं करनी चाहिए क्योंकि क्षति मार्जिन नकारात्मक है। यह दृष्टिकोण पाटनरोधी नियमावली के नियम 4(घ) और 17(1)(ख) के अंतर्गत प्राधिकारी के दायित्व के अनुरूप है।
118. हम यह भी अनुरोध करते हैं कि उस स्थिति में जब घरेलू उत्पादक इस चरण में कोई नई अथवा अतिरिक्त सूचना प्रस्तुत करते हैं जिसके फलस्वरूप क्षति मार्जिन में परिवर्तन हो सकता है, उसे कृपया हमें उपलब्ध कराया जाये ताकि हम उसके संबंध में अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत करने की स्थिति में हों।
119. उपर्युक्त के प्रति पूर्वाग्रह के बिना, यह विनम्रतापूर्वक अनुरोध किया जाता है कि प्राधिकारी किसी भी स्थिति में हमारे द्वारा उठाये गये मुद्दों को शामिल कर सकते हैं और/अथवा उससे निपट सकते हैं लेकिन उन्हें प्राधिकारी द्वारा जारी किये गये प्रकटन विवरण में शामिल नहीं किया गया है और/अथवा उसका निबटारा नहीं किया गया है।
120. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने यह आंकलन करने के लिए कि क्या दो अन्य घरेलू उत्पादकों अर्थात् मैसर्स टाटा केमिकल्स लिमि. और मैसर्स निरमा लिमि. से आयात बहुत अधिक हैं, के आधार के रूप में यू एस ए से कुल आयातों को लिया है। निर्दिष्ट प्राधिकारी की विगत निर्णय संबंधी परिपाटी दर्शाती है कि घरेलू उत्पादक द्वारा आयातों का आकलन पीयूसी के कुल आयातों और/अथवा उन घरेलू उत्पादन की तुलना में किया जाता है। पूर्व के निर्णय लेने संबंधी परिपाटी से अलग हटने और यू एस ए से आयातों की मात्रा के बहुत अधिक हद तक कमतर आधार पर विचार करने का कोई कारण नहीं है।

121. निर्दिष्ट प्राधिकारी से यह अनुरोध किया जाता है कि वे इन दो घरेलू उत्पादकों द्वारा आयातों का हिस्सा (जैसा कि ऊपर में उल्लेख किया गया है सही आधारों को लागू करने के बाद) संकीर्ण दायरों में दें ताकि हितबद्ध पक्षकारों को उत्तर देने के लिए सार्थक और प्रभावी अवसर दिया जा सके। तदनुसार, हम निर्दिष्ट प्राधिकारी से अनुरोध करते हैं कि वे उपर्युक्त टिप्पणियों पर विचार करने के बाद एक संशोधित प्रकटन विवरण फिर से परिचालित करें।
122. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के अत्यधिक गोपनीयता के दावे और व्यापार सूचना संख्या 10/2018 का अनुपालन नहीं करने के संबंध में एचयूएल के तर्कों पर ध्यान देने के लिए कोई प्रयास नहीं किये हैं।
123. एचयूएल नोट करता है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने संबद्ध देशों से भाग लेने वाले सभी उत्पादकों के लिए नकारात्मक क्षति मार्जिन का निर्धारण किया है। एचयूएल यह आशा करता है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जारी किये जाने वाले अंतिम जांच परिणामों के लिए ये तथ्य सही रहेंगे।
124. तदनुसार, शुल्क के रूप का प्रश्न अब मौन है। उपर्युक्त के संबंध में पूर्वाग्रह के बिना, किसी भी स्थिति में किसी भी शुल्क को अंतिम जांच परिणामों में सिफारिश की जाती है तब एचयूएल अनुरोध करता है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी किसी विशेष शुल्क प्रकार की सिफारिश करने के लिए कारण दें।
125. पूर्वाग्रह के बिना यदि प्राधिकारी का वास्तव में भाड़े की लागत को शामिल कर कीमत में कटौती को परिचालित करने का उद्देश्य है तब यह प्राधिकारी के विगत निर्णय लेने संबंधी परिपाटी के अनुरूप ही नहीं होगा बल्कि से अनुचित तुलना भी होगी जिसके फलस्वरूप क्षति का त्रुटिपूर्ण विश्लेषण होगा। एचयूएल कीमत में कटौती के विश्लेषण में भाड़े की लागत को शामिल करने पर अपनी आपत्तियों को दोहराते हैं जैसा कि पूर्व के अनुरोधों में उल्लेख किया गया है।
126. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्रारंभिक अनुरोधों के खंड ड, लिखित अनुरोधों के खंड ख और प्रतिउत्तर अनुरोधों के खंड ग में वास्तविक क्षति के खतरे नहीं होने के संबंध में एचयूएल के विस्तृत अनुरोधों पर विचार नहीं किया है। एक अर्द्धन्यायिक निकाय के रूप में, निर्दिष्ट प्राधिकारी को हितबद्ध पक्षकारों के सभी तर्कों पर ध्यान देना ही चाहिए और उसे स्वीकार करने अथवा अस्वीकार करने के लिए कारण बताना ही चाहिए। एचयूएल वास्तविक क्षति के खतरे के संबंध में अपने पूर्व के अनुरोधों से प्रमुख बिंदुओं को दोहराता है और अनुरोध करता है कि उस पर निर्दिष्ट प्राधिकारी के निष्कर्ष निम्नलिखित कारणों से सही नहीं हैं :
 - (i) घरेलू उद्योग की पर्याप्त वृद्धि की संभावना के तर्क की पुष्टि नहीं की गई है और यह त्रुटिपूर्ण है क्योंकि यह आयात आंकड़ों पर विश्वास करता है जो 2008-09 के रूप में तुर्की से और 2006-07 के रूप में यू एस ए से है।
 - (ii) संबद्ध देशों में कथित पर्याप्त स्वतंत्र रूप से बिक्री योग्य क्षमता संभवतः भारत में नहीं आयेगी क्योंकि संबद्ध देशों से भारत को निर्यातों का प्रतिशत हिस्सा मामूली है।
 - (iii) संबद्ध आयात के कारण कीमत पर कोई ह्रास अथवा न्यूनीकरण नहीं होता है जो प्रकटन विवरण के पैरा 60 से स्पष्ट है, जहां संबद्ध देशों से आयात की कीमत में वृद्धि हुई लेकिन घरेलू उद्योग ने बिक्री की लागत में वृद्धि के बावजूद बिक्री कीमत में बढ़ोतरी नहीं की।
 - (iv) घरेलू उद्योग संबद्ध वस्तुओं की माल सूचियों के संबंध में कोई साक्ष्य उपलब्ध कराने में विफल रहा है।
 - (v) संबद्ध देशों में मांग में गिरावट के संबंध में और ऐसे आयात संभवतः भारतीय बाजार में प्रवेश करेंगे, एचयूएल स्पष्ट करता है कि घरेलू उद्योग द्वारा जिस साक्ष्य पर विश्वास किया गया है वह साक्ष्य अपने आप में यह स्पष्ट किया है कि मांग में ऐसी गिरावट वैश्विक है और यू एस ए तथा तुर्की से उत्पादकों द्वारा निर्यातों की मात्रा में कोविड-19 की अवधि के दौरान कमी आई है।
 - (vi) जांच की अवधि के बाद के आंकड़ों की जांच संबद्ध देशों से कीमतों में गिरावट का आकलन करने के लिए की गई है और वह जांच की अवधि के बाद 6 महीने से अधिक अवधि के लिए है और घरेलू उद्योग द्वारा कीमतों में ऐसी कथित गिरावट के लिए कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है।

- (vii) संबद्ध देशों में पर्याप्त क्षमताओं के साक्ष्य के संबंध में, एचयूएल ने उल्लेख किया है कि इस बात की संभावना नहीं है कि ऐसी क्षमताएं उपर्युक्त बिंदु (iii) में उल्लिखित कारणों से भारत की ओर नहीं आयेंगे।
- (viii) अंत में, यू एस ए से संबद्ध वस्तुओं पर दक्षिण अफ्रीका में पाटनरोधी शुल्क लगाने का वर्तमान जांच पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

127. वास्तविक क्षति के खतरे के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी के दृष्टिकोण के समान, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने एचयूएल सहित हितबद्ध पक्षकारों द्वारा कारणात्मक संबंध में विच्छेद अथवा गैर-कारणात्मक संबंधी एकमात्र तर्क पर विचार नहीं किया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

128. प्राधिकरण ने नोट किया कि व्यक्तिगत आवेदक के एनआईपी के साथ-साथ आवेदकों के भारित औसत एनआईपी को समग्र रूप से प्राधिकरण द्वारा लगातार अभ्यास के अनुसार गणना की गई है। हालांकि, मेसर्स आरएसपीएल ने अपने उत्पादन का प्रमुख हिस्सा कैप्टिव उपयोग के लिए अपनी अन्य इकाइयों में स्थानांतरित कर दिया और पीओआई के दौरान *** मीट्रिक टन में से केवल *** मीट्रिक टन बेचा। जानकारी न तो शुरुआत के समय उपलब्ध कराई गई थी और न ही प्रारंभिक निष्कर्षों पर। इसलिए, उन अवसरों पर अनुशंसित एनआईपी अलग थे। शुरुआती और प्रारंभिक खोज से अंतिम निर्धारण में गणना किए गए विभिन्न भारित औसत एनआईपी के कारणों को भी ईमेल दिनांक 11.01.2021 के माध्यम से घरेलू उद्योग को सूचित किया गया है।
129. प्राधिकरण एनआईपी का निर्धारण करते समय कैप्टिव खपत पर विचार करने के संबंध में घरेलू उद्योग के सबमिशन को नोट करते हैं और मानते हैं कि चीन पीआर से ओ-एसिड के आयात के संबंध में एंटी-डंपिंग जांच भौतिक मंदता से संबंधित है जहां आवेदक ने आरोप लगाया कि ओ-एसिड हो रहा है भारत में ओ-एसिड की नव स्थापित उत्पादन क्षमताओं को अस्थिर करने के इरादे से चीन पीआर से डंप किया गया। ओ-एसिड की गहन डंपिंग ऐसी स्थिति पैदा कर रही थी जहां आवेदक घरेलू बाजार / खुले बाजार में अपने उत्पाद को बेचने में सक्षम नहीं था। घरेलू उद्योग ने ओफ़्लॉक्ससिन के उत्पाद को एकीकृत करने के लिए बहुत अधिक निवेश किया था। चूंकि यह भारत में एकमात्र और नई उत्पादन सुविधा थी, जिसके लिए भारत में कैप्टिव के लिए अपनी आपूर्ति निरंतर बनाने के लिए और साथ ही घरेलू बाजार में बेचने के कारण जानबूझकर डंपिंग के कारण निर्यातक द्वारा भविष्य की इकाई की स्थिरता पर सवाल उठाया गया था। इसलिए, सामग्री मंदता के तहत नई स्थापित क्षमता की रक्षा के लिए, एनआईपी की गणना नियमों के तहत की गई थी।
130. आवेदक ने कहा है कि उन्होंने उचित चालान के माध्यम से पीयूसी को एक इकाई से दूसरी इकाई में स्थानांतरित कर दिया है। इस प्रकार, यह एक घरेलू बिक्री है और भारित औसत एनआईपी की गणना के लिए विचार किया जाना चाहिए। प्राधिकरण नोट करता है कि पीयूसी को आवेदक की एक इकाई से दूसरे में इसकी कैप्टिव खपत के लिए स्थानांतरित किया जाता है। बंदी उपभोग के लिए हस्तांतरित पीयूसी की कीमत आवेदक द्वारा खुले बाजार में मांग और आपूर्ति के प्रभाव के बिना निर्धारित की जाती है। इसलिए, खुले बाजार में पीयूसी की कथित डंपिंग कीमत को प्रभावित नहीं करती है।
131. प्राधिकारी हल्के और घने सोडा एश के लिए अलग अलग विश्लेषण के संबंध में अनुरोधों को नोट करते हैं और इस तथ्य को दोहराते हैं कि चूंकि हल्के और घने सोडा एश के बीच लागत और कीमत में अंतर बहुत कम है अतः कोई अलग विश्लेषण आवश्यक नहीं है, जैसा कि विचाराधीन उत्पाद से संबंधित विगत जांचों में भी किया गया है।
132. व्यापार के साधारण पाठ्यक्रम के लिए ओसीटी टेस्ट शुरू करने से संबंधित संस्थाओं के लिए भी पूरी तरह से घरेलू बिक्री पर विचार करने के लिए सहकारी उत्पादकों / निर्यातकों के विवाद के बारे में, प्राधिकरण का मानना है कि ओसीटी टेस्ट संबंधित और गैर-संबंधित दोनों संस्थाओं के लिए प्रासंगिक है बिक्री की लाभप्रदता के पहलू पर बिक्री को मुख्य रूप से सामान्य पाठ्यक्रम में स्थापित किया जाना है (80-20 परीक्षण)। भले ही संबंधित और गैर-संबंधित दोनों बिक्री इस परीक्षण को पूरा कर सकती हैं, लेकिन मूल्य अंतर के पहलू पर गैर-संबंधित पार्टी की बिक्री की तुलना में संबंधित पार्टी की बिक्री के मुद्दे की अभी भी उचित सबूत और औचित्य के साथ स्थापित करने की आवश्यकता है। केवल ओसीटी पर विचार करने के लिए निर्माता / निर्यातक तर्क देते हैं कि हथियारों की लंबाई

पर संबंधित पार्टी को बिक्री स्थापित करने की आवश्यकता पूरी नहीं होती है। इसलिए प्राधिकरण प्रारंभिक खोज में अपनाई गई कार्यप्रणाली की पुष्टि करता है।

133. घरेलू उद्योग के आधार संबंधी तर्क के बारे में प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि 'घरेलू उद्योग' का अर्थ समान वस्तु के निर्माण अथवा उससे जुड़े किसी क्रियाकलाप में लगे पूर्ण रूप से घरेलू उत्पादक से है अथवा उनसे है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उस वस्तु के सकल घरेलू उत्पादन का बहुत बड़ा हिस्सा होता है बजाय इसके कि ऐसे उत्पादक कथित पाटित वस्तु के निर्यातकों अथवा आयातकों से संबंधित हैं अथवा या स्वयं निर्यातक हैं ऐसे मामले में "घरेलू उद्योग" को शेष उत्पादकों का उल्लेख करने के रूप में माना जा सकता है। यह देखा जाता है कि संबद्ध पक्षकारों द्वारा किया गया निर्यात अधिक है। इस कारण से, टाटा केमिकल्स और निरमा लिमि. को भारत में संबद्ध वस्तुओं का अपात्र घरेलू उद्योग के रूप में माना जाता है।
134. भाड़े को शामिल करने के बाद क्षति मार्जिन का मूल्यांकन करने के संबंध में किये गये अनुरोधों के बारे में प्राधिकारी यह मानते हैं कि इस प्रकार के आकलन के लिये पूर्ण आंकड़े अपेक्षित होते हैं जिसे व्यापक रूप से मूल्यांकन किया जाना आवश्यक है और इसके लिए एक मूल नीति निर्णय आवश्यक है। क्षति मार्जिन के आकलन के लिए आवेदक की निरंतर परिपाटी एन आई पी से पहुंच मूल्य (भाड़े के बिना) की तुलना करना है और वह तुलना समतुल्य स्तर पर की जाती हो। उसी पद्धति को इस मामले में भी अपनाया गया है। इसके अलावा एनआईपी का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 3 के अनुसार किया गया है और एनआईपी के साथ पहुंच मूल्य की तुलना जांच की समग्र अवधि के लिये की गई है।
135. प्राधिकरण ने नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता ने क्षति के कारण सामग्री की क्षति और क्षति के खतरे के बारे में भी दावा किया है। प्रारंभिक निर्धारण में, जिसमें पीओआइ के दौरान सामग्री की क्षति को एक सकारात्मक क्षति के मार्जिन और प्राधिकरण के रूप में नोट किया गया था, पीओआइ में उत्पादन की प्रवृत्ति की लागत के विपरीत पीओआइ में पहुंच कीमत की गिरावट के रुझान से क्षति के खतरे का ध्यान रखते हुए, संदर्भ का प्रस्ताव किया था। एंटी-डंपिंग झूटी की कीमत तंत्र को संबोधित करने के लिए। हालाँकि, अंतिम निष्कर्ष में प्राधिकरण ने निष्कर्ष निकाला है कि यूएसए के सभी उत्पादकों / निर्यातकों और तुर्की के सहकारी उत्पादकों / निर्यातकों के संबंध में क्षति का मार्जिन नकारात्मक है। इस प्रकार प्राधिकरण ने अंतिम रूप में भी क्षति के दोनों रूपों के मुद्दे को उचित रूप से माना और संबोधित किया है।
136. प्राधिकरण नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता गैर-जमानती लेनदेन के लिए क्षति मार्जिन को शून्य करने का अनुरोध कर रहा है। प्राधिकरण ने पीओई के लिए क्षति मार्जिन निर्धारित करने के लिए लैंडेड वैल्यू के साथ एनआईपी की तुलना के लिए अपनी सुसंगत कार्यप्रणाली को अपनाया है

(ग) भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे

137. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन सामान्य रूप में घरेलू उद्योग को अनुचित व्यापारिक परिपाटियों से होने वाली क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनः स्थापित की जा सके जो कि देश के सामान्य हित में है। पाटनरोधी शुल्क लगाने से किसी भी तरह से संबद्ध देश से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसीलिए ग्राहकों को उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।
138. यह माना जाता है कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से विचाराधीन उत्पाद के कीमत स्तर और विचाराधीन उत्पाद का प्रयोग कर विनिर्मित किए गए निचले स्तर के सामान प्रभावित हो सकते हैं। इसका परिणामस्वरूप निचले स्तर के उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर कुछ प्रभाव पड़ सकता है। तथापि, चूंकि पाटनरोधी शुल्क लगाना घरेलू उद्योग को क्षति का समाधान करने के लिए आवश्यक राशि तक प्रतिबंधित है, अतः भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा पाटनरोधी उपाय से कम नहीं होगी। पाटनरोधी उपाय लगाने से पाटन की परिपाटियों द्वारा

प्राप्त अनुचित लाभ समाप्त होंगे, घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट रुकेगी और विचाराधीन उत्पाद के उपभोक्ताओं को व्यापक विकल्प की उपलब्धता बनाए रखने में मदद मिलेगी।

ट. निष्कर्ष

139. उठाये गये तर्कों और दी गई सूचना, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों तथा प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों को ध्यान में रखते हुए इन जांच परिणामों में रिकॉर्ड किए गए अनुसार तथा उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि:

क. विचाराधीन उत्पाद संबद्ध देश से भारत को उससे जुड़े सामान्य मूल्य से कम पर निर्यात किया गया है, इसे फलस्वरूप पाटन हो रहा है।

ख. विषय के देशों से विचाराधीन उत्पाद के डंपिंग के कारण सामग्री और खतरे दोनों का मूल्यांकन किया गया है। इसके अलावा, सहकारी और गैर-सहकारी उत्पादकों / निर्यातकों पर लागू एंटी-डंपिंग कर्तव्यों के उल्लंघन के लिए क्षति मार्जिन का मूल्यांकन किया गया है जहां वारंट किया गया है और जैसा कि नीचे की सिफारिश में कहा गया है।

ठ. सिफारिश

140. प्राधिकरण नोट करते हैं कि जांच शुरू की गई थी और सभी इच्छुक पार्टियों को सूचित किया गया था और निर्यातकों, आयातकों और अन्य इच्छुक पार्टियों को डंपिंग, क्षति और कारण लिंक के पहलू पर सकारात्मक जानकारी प्रदान करने के लिए पर्याप्त अवसर दिया गया था। नियमों के तहत निर्धारित प्रावधानों के संदर्भ में डंपिंग, क्षति और कारण लिंक की जांच शुरू और आयोजित की गई और सकारात्मक डंपिंग मार्जिन स्थापित किया है और आगे इस तरह के डंप किए गए आयातों के कारण घरेलू उद्योग के लिए सामग्री की क्षति का मूल्यांकन किया है, प्राधिकरण प्राधिकरण का है। तुर्की के गैर-सहकारी उत्पादकों / निर्यातकों के खिलाफ केवल डंपिंग और क्षति की भरपाई के लिए निश्चित एंटीडंपिंग ड्यूटी लगाने की आवश्यकता है, और तुर्की के सहकारी उत्पादकों / निर्यातकों पर एंटीडंपिंग ड्यूटी लगाने की आवश्यकता नहीं है। इसके अलावा, यूएसए के किसी भी उत्पादकों / निर्यातकों पर माप की सिफारिश नहीं की जाती है। प्राधिकरण, उपरोक्त के मद्देनजर, नीचे वर्णित रूप और तरीके से विषय वस्तुओं के आयात पर एंटी-डंपिंग शुल्क लगाने की सिफारिश करता है।

141. इस नियमावली के नियम 4(घ) में निहित प्रावधानों के संबंध में, प्राधिकारी पाटन के मार्जिन और क्षति के मार्जिन में से कमतर के बराबर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाये जाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग की क्षति समाप्त की जा सके। इस तथ्य को नोट करते हुए कि संबद्ध वस्तुओं की पहुंच कीमत जांच की अवधि में उत्पादन की लागत की प्रवृत्ति के विपरीत जांच की अवधि में गिरावट की प्रवृत्ति को दर्शाती है, इस कारण से प्राधिकारी केंद्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तिथि से संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर संदर्भ/बैंचमार्क कीमत के आधार पर अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करने के लिए इसे उपयुक्त मानते हैं। संदर्भ कीमत का परिकलन "पहुंच मूल्य + [(1) पाटन मार्जिन और (2) क्षति मार्जिन] में से कमतर" के रूप में की जाती है। अनंतिम पाटनरोधी शुल्क नीचे दी गई तालिका के कॉलम 7 में दर्शाये गये संदर्भ कीमत और पहुंच मूल्य के बीच अंतर के बराबर होगा। इस उद्देश्य से आयातों का पहुंच मूल्य आकलन मूल्य होगा, जिसका निर्धारण सीमा शुल्क 1962 के अंतर्गत सीमा शुल्क और सीमा प्रशुल्क अधिनियम 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9, 9क के अंतर्गत लगाये गये शुल्कों को छोड़कर सीमा शुल्कों का लागू स्तर होगा।

शुल्क तालिका

क्र. सं.	एच एस कोड*	वस्तुओं का विवरण	उद्गम देश	निर्यातक करने वाला देश	उत्पादक	संदर्भ कीमत	इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	2836.20	सोडा एश (डिसोडियम)	तुर्की	तुर्की सहित	निम्न को छोड़कर कोई	242.35	मी. टन	यूएस

		कार्बोनेट)		कोई भी देश	उत्पादक: i. ईटीआई सोडा यूरेटिम पजारलामा नकलियात वे इलैक्ट्रिक यूरेटिम सनयाई वे तिकारेत ए.एस. ii. कजान सोडा इलैक्ट्रिक यूरेटिम ए.एस. iii. तुर्किये सिसेव कैम फैब्रीकलार एनोनिम सिरकेटी			डॉलर
--	--	------------	--	------------	---	--	--	------

ड. आगे की प्रक्रिया

142. इस सिफारिश के कारण केंद्र सरकार के आदेश के विरुद्ध कोई अपील अधिनियम के संगत प्रावधानों के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद एवं सेवा कर अपील अधिकरण के समक्ष की जाएगी।

बी. बी. स्वेन, विशेष सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF TRADE REMEDIES)

NOTIFICATION**FINAL FINDING**

New Delhi, the 19th January, 2021

Case No. (OI - 30/2019)

Subject: Anti-Dumping Duty investigation concerning imports of Soda Ash originating in or exported from Turkey and USA

A. BACKGROUND OF THE CASE

F. No. 6/39/2019 –DGTR.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Act), and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended from time to time, (hereinafter also referred to as “the Rules” or “the AD Rules”) thereof:

Whereas, M/s DCW Ltd., M/s RSPL and M/s GHCL (hereinafter also referred to as “the Applicants” or “the Domestic Industry”) have filed an application before the Designated Authority (hereinafter also referred to as “the Authority”) in accordance with the Customs Tariff Act and the AD Rules for imposition of Anti-dumping duty on imports of “Soda Ash” (hereinafter also referred to as “subject goods” or “product under consideration” or “PUC”) originating in or exported from Turkey and USA (hereinafter also referred to as the “subject countries”).

And, whereas, the Authority, on the basis of sufficient evidence submitted by the Applicant, issued a public notice vide Notification No. 6/39/2019 - DGTR dated 22nd January, 2020, published in the Gazette of India, initiating the subject investigation in accordance with the AD Rules to determine existence, degree and effect of the alleged dumping of the subject goods, originating in or exported from the subject

countries, and to recommend the amount of anti-dumping duty, which if levied, would be adequate to remove the alleged injury to the Domestic Industry.

B. PROCEDURE

1. The procedure described herein below has been followed by the Authority with regard to the subject investigation:
 - a) The Authority notified the Embassies of the Subject Countries in India about the receipt of the present anti-dumping application before proceeding to initiate the investigation in accordance with Sub-Rule (5) of Rule 5 supra.
 - b) The Authority issued a public notice dated 22nd January 2020 published in the Gazette of India Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods from subject countries.
 - c) The Authority sent a copy of the initiation notification to the Embassies of the subject countries in India, known producers/exporters from the subject countries, known importers/users and the Domestic Industry as well as other domestic producers as per the addresses made available by the Applicant and requested them to make their views known in writing within the prescribed time limit.
 - d) The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known producers/exporters and to the Embassies of the subject countries in India in accordance with Rule 6(3) of the Rules supra.
 - e) The Embassies of the subject countries in India were also requested to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time limit. A copy of the letter and questionnaire sent to the producers/exporters was also sent to them along with the names and addresses of the known producers/exporters from the subject countries.
 - f) The Authority sent questionnaires to the following known producers/exporters in the subject countries in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:
 - i. M/s FMC Industrial Chemicals
 - ii. M/s Solvay Soda Ash
 - iii. M/s General Chemicals Industrial Products
 - iv. M/s ANSAC
 - v. M/s FMC Corporation
 - vi. M/s Ciner Resources LP
 - vii. M/s Ciner Wyoming LLC
 - viii. M/s Ciner Resources Corporation
 - ix. M/s Eti Soda
 - x. M/s Soda Sanayii
 - xi. M/s Kazan Soda Electric
 - g) Following exporters have filed questionnaire response from the subject countries:
 - i. Searles Valley Minerals Inc., USA
 - ii. M/s Tata Chemicals Soda Ash Partners ("TCSAP"), Producer, USA
 - iii. M/s Tata Chemicals International Pte. Ltd. ("TCIPL"), USA along with its related importer M/s Tata Chemicals Ltd. ("TCL")

- iv. ETI Soda Uretim Pazarlama Nakliyat Ve Elektrik Uretim Sanayi Ve Ticaret A.S., Turkey
 - v. Kazan Soda Elektrik Uretim A.S, Turkey
 - vi. Ciner IC Ve Dis Ticaret A.S. (CIDT), Turkey
 - vii. Türkiye Şişe ve Cam Fabrikaları Anonim Şirketi (formerly Soda Sanayii A.S.,) Turkey and its related exporter Sisecam Dis Ticaret A.S.
- h) The Authority sent Importer's Questionnaire to the following known importers/users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the Rules:
- i. M/s Gujarat Guardian Ltd.
 - ii. M/s Advance Surfactant India Ltd.
 - iii. M/s Float Glass India Ltd.
 - iv. M/s A.R. Stanchem Pvt. Ltd.
 - v. M/s Alenbic Glass Industries Ltd.
 - vi. M/s Hind Silicates Pvt. Ltd.
 - vii. M/s Deepak Nitrite Ltd.
 - viii. M/s Taurus Chemical (P) Ltd.
 - ix. M/s Hindustan National Glass & ind. Ltd.
 - x. M/s Kishoresons Detergents Pvt. Ltd.
 - xi. M/s Hindustan Unilever Ltd.
 - xii. M/s J.J. Patel Industries
 - xiii. M/s Procter & Gamble Hygiene & Healthcare
 - xiv. M/s Shriram Bharath Chemical & Detergents Pvt. Ltd.
 - xv. M/s Albright Morarji & Pandit Ltd.
 - xvi. M/s Modern Glass Industries
 - xvii. M/s Advatech Industries Pvt. Ltd.
 - xviii. M/s Adarsh Kanch Udyog (P) Ltd.
 - xix. U.P. Glass Manufacture Syndicate
 - xx. M/s Paragati Glass Pvt. Ltd.
 - xxi. M/s Asahi India Glass Limited
 - xxii. M/s Gora Malhari Ram Ltd.
 - xxiii. M/s Fena (P) Ltd.
 - xxiv. M/s Rohit Surfactants (P) Ltd.
 - xxv. M/s Shree Unicon Organics P. Ltd.
 - xxvi. M/s Astral Glass Pvt. Ltd.
 - xxvii. M/s Pollachi Chamber of Commerce and Industry
 - xxviii. M/s BDJ Glass Industries Pvt. Ltd.
 - xxix. M/s Vasunhara Rasayan Ltd.
 - xxx. M/s Shri Hari Industries
 - xxxi. M/s Power Soap Ltd.
 - xxxii. M/s Hindustan National Glass & Industries

- xxxiii. M/s Shanti Nath Detergents (P) Ltd.
 - xxxiv. M/s Jagatjit Industries Ltd.
 - xxxv. M/s Advance Home & Personal Care
 - xxxvi. M/s S. Kumar Detergents P. Ltd.
 - xxxvii. M/s Mauli Exports
- i) The Authority also informed the following Associations in India, in accordance with Rule 6(4) of the Rules:
- i. Detergent Manufacturers Association
 - ii. Indian Chemical Merchants & Manufacturers
 - iii. Bulk Drug Manufacturers Association (India)
 - iv. Indian Glass Manufacturers' Association
 - v. The Dyes & Chemical Merchants Association
 - vi. The Federation of All India Dyes & Chemicals Merchants Association
- j) The Authority, upon request, granted extension, to file Questionnaire Responses by 20.03.2020.
- k) Following imports/users have filed questionnaire responses:
- i. M/s Saint Gobain India Pvt. Limited
 - ii. M/s Hindustan Unilever Ltd. India
 - iii. M/s Tata Chemicals Ltd.
- l) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented / submissions made in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- m) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to provide the transaction-wise details of imports of subject goods for the past three years, and the period of investigation, which was received by the Authority. The Authority has, relied upon the DGCI&S data for computation of the volume of imports and its analysis after due examination of the transactions.
- n) The Non-Injurious Price (NIP) has been determined based on the cost of production and cost to make & sell the subject goods in India based on the information furnished by the Domestic Industry on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and Annexure III to the Anti-Dumping Rules so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the Domestic Industry.
- o) Verification of the information provided by Applicant Domestic Industry by way of table study, to the extent deemed necessary, was carried out by the Authority. Only such verified information with necessary rectification, wherever applicable, has been relied upon for the purpose of final findings.
- p) The Period of Investigation for the purpose of the present investigation is from 1st April, 2019 to 31st December, 2019 (9 Months). The injury investigation period has however, been considered as the period from April 2016 - March 2017, April 2017 - March 2018, April 2017 - March 2018, and the POI.
- q) In terms of provision contained in Rule 12 of the Rules, the Authority issued Preliminary findings dated 21.08.2020 published in the Gazette of India Extraordinary, and recommended imposition of provisional anti-dumping duty. The recommendation was, however, not accepted by the Central Government.
- r) In accordance with Rule 6(6) of the Rules, the Authority provided opportunity to all

interested parties to present their views orally in the oral hearing held on 16th November, 2020 which was attended by domestic Industry along with their legal representatives and by other interested parties and their legal representatives. Those who attended oral hearing were requested to file written submissions of the views presented in the oral hearing by 23.11.2020 and rejoinder submissions by 02.12.2020.

- s) The submissions made by the interested parties during the course of this investigation, to the extent supported with evidence and considered relevant to the present investigation, have been appropriately considered by the Authority, in this final finding.
- t) Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- u) Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has considered such parties as non-cooperative and recorded the final findings on the basis of the facts available.
- v) In accordance with Rule 16 of the Rules, the essential facts of the investigation were disclosed to the known interested parties vide Disclosure Statement dated 9th January, 2021 and comments received thereon, considered relevant by the Authority, have been addressed in these final findings. The Authority notes that most of the post disclosure submissions made by the interested parties are mere reiteration of their earlier submissions. However, the post disclosure submissions to the extent considered relevant are being examined in these Final Findings
- w) ‘****’ in this final finding represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- x) The exchange rate adopted by the Authority for the subject investigation is US\$1 = ₹71.24.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

C.1. Submissions made by the Domestic Industry

2. The submissions made by the Domestic Industry with regard to product under consideration and like article and considered relevant by the Authority are as follows:
 - a) The product under consideration is Disodium Carbonate, popularly known as Soda Ash, having chemical formula Na_2CO_3 . Soda Ash is a white, crystalline, water-soluble material. It has been referred as "soda Ash" in this petition. Soda Ash is produced in two forms by the Indian Producers - Light Soda Ash and Dense Soda Ash. The difference in the two types is bulk density. Further, soda ash can be either natural soda ash or synthetic soda ash, both products are essentially the same. In the present investigation all types and form of Soda Ash have been included i.e. soda ash produced through natural route and synthetic route.
 - b) Soda Ash is an essential ingredient in the manufacture of detergents, soaps, cleaning compounds, sodiumbased chemicals, float glass, container and specialty glasses, silicates and other industrial chemicals. It is also widely used in textiles, paper, metallurgical industries and desalination plants.
 - c) Synthetic soda ash is manufactured using the Solvay, Hou, or ammonia-soda process. The production process in Turkey, of natural Soda ash is solution mining of

Trona. The Trona mine is extracted to the surface by solution mining. Another production process employed in USA is the room and pillar method, where Trona is mined and conveyed to the surface to be refined into dense soda ash.

- d) The product under consideration is imported under Chapter 28 of the Customs Tariff Act, 1975, under customs sub-heading 2836.20. The customs classification is indicative only and is not binding on the scope of the product under consideration.
- e) There is no difference in product produced by the Applicant and exported from the subject countries.
- f) Product produced by the Domestic Industry is alike to PUC. Authority in the Final Findings No. 14/17/2010-DGAD dated 17.02.2012 concluded that the only difference between the light and dense soda ash is bulk density only, they are two forms of the same product differing negligibly in price. Natural and Synthetic soda ash have no difference in terms of product characteristics, functions and uses, customs classification and pricing of the product, the difference is only in manufacturing routes. However, this cannot render the two grades as dislike articles, when the two are interchangeably used. Comparison is required to be undertaken only if the cost or price of the product varies significantly over the investigation period.
- g) The European Commission (EC) in Regulation (EC) No 823/95 of 10 April 1995 noted that even when different production processes maybe employed, products obtained are alike in all respects as regards their physical and technical characteristics as well as their potential use.
- h) Production process has been examined earlier. The European Commission (EC) in Regulation (EC) No 823/95 of 10 April 1995 noted that even when different production processes maybe employed, products obtained are alike in all respects as regards their physical and technical characteristics as well as their potential use. The South African duty on soda ash also doesn't consider light and dense as different products.
- i) Light & Dense soda ash are two forms of subject goods. Price and cost is not significant enough to warrant a comparison. There is no consistent trend of difference in price. Light soda has been sold at a higher price than dense. Existence of difference in price is the first factor to take into consideration for establishing a separate analysis.
- j) Type-wise segregation is not necessary. Information provided by the DGCIS also shows that there is no consistent difference in the price of the dense and light soda ash.

C.2. Submissions made by Other Interested Parties

- 3. Following submissions have been made by any other interested party with regard to product under consideration and like article:
 - a. Light and dense soda ash have been analysed on average basis, which is incorrect as they different in terms of users and are not interchangeable. Apple to apple comparison should be done.
 - b. While producer like GHCL is into both Light Soda Ash and Dense Soda Ash, producer like RSPL is only into production of Light Soda Ash. Thus, the impact of alleged dumped imports of Light Soda Ash should be compared with the corresponding Indian production of Light Soda Ash and the impact of alleged dumped imports of Dense Soda Ash should be compared with the corresponding Indian production of Dense Soda Ash and averages shall only give misleading information and such mere averages cannot form the basis of any finding.
 - c. It is an admitted fact that Soda Ash is produced and sold in two types namely Light Soda Ash and Dense Soda Ash. It is also a fact that every producer may not be producing both these types. It is also a fact that these two types have distinct uses and cost and price of these two types also vary. But defined as one single product in the PF without any examination.

C.3. Examination by the Authority

4. The product under consideration (PUC) in the present investigation is Disodium Carbonate, popularly known as Soda Ash, having chemical formula Na_2CO_3 . Soda Ash is produced in two forms - Light Soda Ash and Dense Soda Ash. The difference in the two types is bulk density. It can be produced through synthetic route, known as dissolution process, and natural route. The present investigation includes all types and forms of Soda Ash.
5. Soda ash is used in the manufacture of detergents, soaps, cleaning compounds, sodium based chemicals, float glass, container and specialty glasses, silicates and other industrial chemicals.
6. Subject goods are classifiable under Chapter 28 of the Customs Tariff Act, 1975, under customs sub-heading 2836.20. However, the customs classification is indicative only and is not binding on the scope of the product under consideration.
7. The Authority notes from the information available on record that the product under consideration produced by the domestic industry is like article to the goods imported from the subject countries. Product under consideration produced by the domestic industry and imported from the subject countries are comparable in terms of physical & chemical properties, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. Even though there are different manufacturing process/technologies involved for production of the subject goods i.e. solution mining of Trona in Turkey; room and pillar method in USA; and Solvay, Hou, or ammonia-soda process for synthetic soda ash, the end product has comparable specifications and is used interchangeably. The Authority further notes that the imported and the domestically sold products are technically and commercially substitutable, and the consumers are using the two interchangeably.
8. As regards the contention that light and dense soda ash are two different product types whose cost and price differs significantly and are not interchangeable and thus should not have been considered as one product, the Authority notes that similar issue was raised in the past investigations on same product and the Authority had considered in all such investigations that light and dense soda ash are both one product and the that the cost and price difference is minimal which does not warrant any separate analysis. The Authority conducts separate analysis for the purpose of dumping margin, injury margin in case the cost and price vary significantly. None of the interested parties have brought sufficient information to show significant difference in cost and price. Further, the information on record in terms of the data filed by exporters also does not show any fixed pattern of difference in the cost and price of dense and light soda ash. Thus, the Authority has considered that both light and dense soda ash are covered under one product scope.

D. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY & STANDING

D.1. Submissions made by the Domestic Industry

9. The submissions made by the Domestic Industry with regard to scope of Domestic Industry & standing are as follows:
 - a) The Applicants, M/s. DCW Ltd, M/s. RSPL and M/s. GHCL, are the producers of the subject goods in India. There are three other producers of the subject goods, other than the Applicants, i.e. M/s. Tata Chemicals Ltd. (TCL), M/s. Nirma Limited, and M/s. Tuticorin Alkali Chemicals and Fertilisers Ltd. (TAC). M/s. Tata chemicals has exported subject goods to India, and M/s. Nirma Limited has a related producer in USA and has also exported the subject goods; and are thus, ineligible to constitute domestic industry under the Anti-Dumping Rules.
 - b) The Applicants have not imported the product under consideration from the subject countries, and are also not related to any importer in India or any exporter from the subject countries.
 - c) The Applicants hold a major proportion of total Indian production. Accordingly, the Application clearly satisfies the requirement of standing and thus, the applicants constitutes 'Domestic Industry' in India for the product concerned in terms of Rule 2(b)

read with Rule 5(3) of the AD Rules.

- d) Constituency of the domestic industry is determined on a case to case basis. Merits of present application cannot be decided on a previously concluded investigation. Determination of initiation, preliminary analysis, provisional duty recommendation shall be made on an objective analysis.
- e) Production of DCW, RSPL and GHCL undisputedly constitute major proportion of the Indian production, Nirma not an applicant, therefore rightly constitute domestic industry under Rule 2(b) and have standing terms under Rule 5(3). Imports of Nirma significantly higher.
- f) Soda ash is the PUC and thus there is no need for segregating Indian production on a type-wise basis.
- g) Nirma and Tata's eligibility only need to be checked under Rule 2(b) read with Rule 5 if they had chosen to be applicants. Even if Nirma is considered eligible domestic producer, the application still satisfies the test of Rule 2(b) and Rule 5(3).
- h) The volume of exports made by Nirma's affiliate in the current period are significantly higher than the volume of exports made by them in the previous investigation. imports made by related party has shown significant increase in absolute and relative terms from the original case. The imports constitute ***% of total imports from USA and more than ***% of its own production.
- i) The domestic industry cannot compel the parties to provide information. The participating producers qualify the criteria of standing as per AD Rules by themselves. Reference to Polyester Staple Fibre case is misplaced.
- j) The Authority in preliminary findings has analysed the scope of domestic industry and observed that both Tata and Nirma have significant exports in comparison to imports from USA and were at dumped prices. Therefore, they were treated as ineligible domestic industry of subject goods in India. The applicants for the present anti-dumping investigation are DCW, RSPL and GHCL, each of which has filed the requisite information as per the prescribed format.
- k) Authority is required to assess whether, the total production of DCW, RSPL and GHCL constitutes major proportion of the total Indian production, Nirma wasn't an applicant and merely supported the investigation. The mentioned applicants constitute domestic industry under 2(b). Application has standing terms under 5(3), irrespective of Nirma being treated as eligible or ineligible domestic producer.

D.2. Submission of other interested parties

- 10. Following submissions have been made by other interested parties with regard to scope of domestic industry and its standing:
 - a. Petitioners cannot themselves determine which producer would be excluded or included in term of Rule 2(b). The authority to define "domestic industry" lies with the Designated Authority.
 - b. Petitioners have not provided their share of production after taking into account the production of excluded producers in total Indian production.
 - c. RSPL could not have suffered because of dense soda ash. Statement of Indian production should include types wise production.
 - d. The Authority needs to recheck the revised quantum of imports made by Nirma and Tata for revised POI to check their eligibility under Rule 2(b) read with Rule 5
 - e. The Authority should call and examine data of other domestic producers including Nirma to ensure fair and holistic appreciation of data. This is also as per Authority's practise. Reference has been made to investigation concerning imports of Polyester Staple Fibre; and Coated papers.
 - f. Applicant itself stated that Nirma is ineligible and Authority accepted without seeing the

jurisprudence. Reliance placed on Czako Human and Miranda. None of the criteria applied. Reliance placed on Thailand-H-Beams.

D.3. Examination by the Authority

11. The application has been filed by M/s. DCW Ltd, M/s. RSPL and M/s. GHCL Ltd. The Applicants have informed that currently there are three other producers of the product under consideration in India, namely, M/s. Tata Chemicals Ltd. (TCL), M/s. Nirma Limited, and M/s. Tuticorin Alkali Chemicals and Fertilisers Ltd. (TAC).
12. It is noted that the application has been supported by M/s. Nirma Limited. After filing of the application, letters were filed by M/s. Tata Chemicals Ltd. (TCL) and M/s. Nirma Limited providing details of exports made by their affiliate parties in USA to India. It is seen that exports made by the affiliate company of Tata Chemicals, i.e., M/s Tata Chemicals North America is quite significant in relation to total imports from USA, similarly exports made by the affiliate company of Nirma Ltd, i.e., Searles Valley Minerals Inc. is also quite significant in relation to total exports from USA. Both these US companies have filed questionnaire response, demanding determination of individual dumping margin. It is seen that exports made by the affiliate parties is significant. The Authority notes the submission made by other interested party and notes that analysis of questionnaire response shows that exports made by these companies are at dumped prices. Therefore Tata Chemicals and Nirma Ltd are treated as ineligible domestic industry of subject goods in India.
13. The Authority notes the submissions of the interested parties that M/s. Nirma Limited was an applicant in previous investigations and was considered as an eligible domestic producer despite being related to an exporter. It is seen that in the present investigation, Nirma has not come forward as the applicant. The production of the applicants has been determined and they constitute a major proportion in total Indian production. Thus, the applicants had sufficient standing to file the application.
14. It is also noted that the applicants have not imported the product under consideration and are not related to any importer in India or any exporter from the subject countries. Accordingly, the Authority holds that for the purpose of this investigation, the application satisfies the standing requirement and the applicants constitute the Domestic Industry in terms of Rule 2(b) and Rule 5(3) of the Rules.

A. Confidentiality and other miscellaneous issues

Submissions by the Domestic Industry

15. The submissions made by Domestic Industry are as follows:
 - a. Arguments made by interested parties against reference form of duty and relying on DGTR manual as well as Australian Commission, is wrong. DGTR and guidelines of Australian Commission do not suggest that benchmark duty is against downstream industry, rather it is favourable. Prices of soda ash fluctuated significantly and declined consistently post POI. Thus, fixed form of duty shouldn't be levied [relevant part of manual mentioned in the rejoinder]. Prices of the PUC has declined steeply without corresponding decline in costs. Thus, fixed form of duty will also not result into the desired effect and would be inadequate to protect the domestic industry from unfair trade. The Guidelines on the Application of Forms of Dumping Duty by the Australian Anti-dumping Commission considers this as a disadvantage to the DI only.
 - b. Reference price of duties are generally not in favour of the domestic industry. Landed price of imports declined by Rs. 1,163/MT. The fixed form of duty is likely to get absorbed by the exporters in near future making the duties ineffective.
 - c. In reference to argument citing JSW Steel Coated Products Ltd. v. UOI, the same states that facts and circumstances of each case needs to be seen in order to determine the form of duty. Facts of the present case demand a benchmark form of duty.
 - d. In reference to arguments of other interested parties of recurring investigations it is submitted that these Investigations have concluded and should not have bearing on the present investigation. Petitioners do not claim suffering injury even with duties in place,

rather there is a recurrence of injury soon after cessation of duties, foreseen by the petitioners. An application pursuant to this has only been filed by the petitioners.

- e. For arguments of other interested parties that simultaneous imposition of CVD and ADD should not take place, it is submitted that CESTAT in *M/s Suncity Sheets Pvt. Ltd v. Union of India* observed that both duties can be imposed together, given that they don't exceed the injury margin though the dumping margin may be higher. Same was upheld by the Supreme court.
- f. In counter to POI being arbitrary, it is submitted that the selection of POI is not arbitrary as due reasons to undertake analysis on the most recent data has been given in the initiation notification.

Submissions by the other interested parties

16. Submissions of the interested parties are as follows:

- a. Reference price of duty is punitive towards importers and users. Globally the prices are fluctuated and genuinely declining, reference price would penalise Indian importers. Decline in prices not due to dumping.
- b. Reference form duty is not appropriate, reliance is placed on *JSW Steel Coated Products Ltd. v. UOI*, wherein it was stated by Hon'ble CESTAT that Authority should consider facts and circumstances of each investigation while recommending a form of duty.
- c. Further, reliance is placed on manual of DGTR, that provides circumstances wherein reference form of duty is considered appropriate:
 - i. There is a need to protect interests of the downstream industry.
 - ii. User industry imports certain grades that are not available in the country or domestic industry.
 - iii. It is not desirable when major raw materials are liable to significant price fluctuations.
 - iv. It is ineffective in a rising market and too protective in a falling market.

Therefore, reference price is not fit due to commercial factors of the PUC and associated market. PUC tends to have price fluctuations, and its prices have declined post-POI.

- d. As per the above-stated decline in prices, this is accompanied by decline in raw material costs of steam coke, coal and limestone. Therefore, this is not intensification of dumping, rather decline in price globally.
- e. 3 scenarios detailed to explain why reference price not appropriate as downward price fluctuation would make the duty excessively punitive. Each form of duty, i.e. reference, ad valorem and fixed, and its feasibility in each scenario has been explained, which are:
 - i. Scenario 1 is the facts of the present case, i.e. considering the current market price and landed price, the duty payable is what is being sought.
 - ii. Scenario 2 is a situation where the landed price moves upwards and so does the market price, then the duty payable would be zero (reference form).
 - iii. Scenario 3 is a situation where price fluctuates downwards, then the duty payable would become excessive and punitive for importers.
- f. Reference price as a form of duty is incompatible with products that face price volatility is also recognized by other anti-dumping authorities. Reliance is placed on Guidelines on the Application of Forms of Dumping Duty issued in November 2013, of the Australian Anti-dumping Commission.
- g. Hon'ble Designated Authority's Office Memorandum (OM) dated 18 June 2019 is purely recommendatory and does not specify any mandatory obligation for the levy of reference price, and does not provide any guidance as to when reference price form of duty must be

recommended.

- h. Reference price form of duty unfairly benefits the Domestic Industry, facilitates “profiteering” and is not in public interest.
- i. There have been recurring investigations on subject imports initiated by DGTR. Authority recommended cessation of duties in case of US and Turkey as recent as Dec 2018 and Mar 2019 respectively. Anti-dumping duties were levied for about 7 years subsequent to which authority decided that there should be a cessation of duties. Two applicant companies DCW and GHCL have been involved in repeatedly filing applications to initiate anti-dumping investigations. The purpose of law is to protect DI from unfair trade and is not a protectionist tool to protect inefficient industries.
- j. Reliance is placed on section 9B(1)(a) to state subject goods cannot be subjected to both anti-dumping duty and countervailing duty for the same situation of dumping or export subsidization. Designated Authority should not compensate the same injury twice.
- k. The selection of the period of investigation i.e. 9 months is arbitrary and contrary to the established law. As per the Anti-dumping Rules, the Authority is required to take 12 months as the period of investigation, and in exceptional circumstances, a minimum of 6 months and maximum of 18 months as the period of investigation, provided reasons are recorded in writing for taking such a period. However, in this case, no rationale has been provided for transgressing from established practice of 12 months to 9 months.
- l. EQ Response has been filed by Soda Sanayii A.S from Turkey in the present investigation. However, the name of the company stands changed to Türkiye SiSe ve Cam Fabrikaları Anonim Şirketi. Name change is the result of share merger of the Company with T.Sise ve Cam Fabrikaları A.S (in short) vide the merger agreement dated 27.4.2020 which was accepted by the Capital Markets Board's (CMB) on 24.7.2020. As part of the merger, SODA SANAYII's shareholders will receive 1.15997 (both in quantity and amount in TRY) Şişecam shares, in return for each 1 Kurush nominal value Soda Sanayii shares they have. T.Sise ve Cam Fabrikaları A.S was the largest shareholder of Soda Sanayii A.S at the time of filing the EQR and the merger here needs to be seen in light of the same. Plant of Soda Sanayii A.S continues to be the only Soda Ash Plant under T.Sise ve Cam Fabrikaları A.S even after the share merger. Hence, it is essential that the Authority may accept the above name change for all the practical purposes concerning the response filed by Soda Sanayii A.S. The merger has not brought in any other changes in the plants and operations of Soda Sanayii A.S as the merger is effected through allocation of appropriate number of shares only. Merger Agreement dated 27.4.2020, approvals from CMB dated 24.7.2020 etc has been provided to the Authority.

Examination by the Authority

17. Submissions made by the interested parties have been examined as under:

- a. The Authority has considered the confidentiality claims as per the AD rules and the approach being adopted in Trade Notice No. 10/2018.
- b. As regard the submission of the interested parties that the Authority must ensure that the alleged injury is not offset twice in accordance with Section 9B (1) (a) of the Customs Tariff Act, 1975 in view of parallel countervailing duty investigation on imports of Soda Ash from Turkey, the Authority notes that there is no bar in conducting parallel investigation, provided the duties do not exceed the injury margin. Also, in case a product is already attracting anti-dumping duty, countervailing duty imposed shall be equivalent to the difference between the quantum of countervailing duty and antidumping duty payable, if any.
- c. The selection POI of 9 months is not arbitrary as antidumping duties were in force on subject goods from USA and Turkey and the Authority recommended cessation of duties against USA and Turkey on 14th December 2018 and 14th March 2019 respectively. Thus, in order to examine impact of dumped imports on the performance of the domestic industry, the Authority considered a period after cessation of duties. Also, the WTO's guidelines on POI suggest a POI of at least 6 months. There is no restriction on POI with a duration of less than

12 months though post initiation of this investigation, the duration of POI is included in the rules. The Authority has in past considered POI different from 12 months also and in this case no different standard has been adopted.

- d. The Authority notes that no form of duty may respond in the same manner to the export prices as these are a function of various parameters and therefore may elicit varied responses from various stakeholders at different points of time. The Authority, in this regard, notes the submissions of the interested parties on the recommendation of reference price form of duty and has considered any admissible measure in an appropriate form keeping in view the facts and circumstances and ensuring that the provisions of Lesser Duty Rule are not violated.
- e. The Authority accepts the change in name of exporter, Soda Sanayii A.S, Turkey to Türkiye SiSe ve Cam Fabrikaları Anonim Şirketi, considering that the Soda Sanayii A.S. has been merged with Türkiye SiSe ve Cam Fabrikaları Anonim Şirketi and this merger has not brought any other changes in the plants and operations of Soda Sanayii A.S.

E. NORMAL VALUE, EXPORT PRICE & DETERMINATION OF DUMPING MARGIN

E.1. Submissions by the Domestic Industry

18. The following submissions have been made by the Domestic Industry:

- a) Efforts were made to get evidence of the price of subject goods in Turkey and USA, however, domestic industry were unable to get any information/evidence of price of subject goods in the form of actual transaction prices. Applicants, therefore, have relied on prices published in HIS Markit: Global Soda Ash Monthly Issues for April-November 2019, to determine price meant for consumption of the product prevailing in the subject countries.
- b) Export price from the subject countries has been adjusted for the following expenses, which the exporters from the subject countries have incurred for exporting to India, i.e. Ocean Freight, Marine Insurance, Commission, Inland Transportation, Bank Charges and Port Expenses.
- c) Considering the normal value and export price, dumping margin has been determined. The dumping margins so determined from the subject countries are above de minimis levels and significant.
- d) Preliminary findings establish dumping margins are more than de-minimus and significant, however the Applicants consider margins to be low.
- e) The dumping margins need to be determined for the product which is soda ash, and has been done previously by the Authority as well as by other countries, type-wise determination is not necessary. Infact, the information provided by the DGCIS would also show that there is no consistent difference in the price of the dense and light soda ash.
- f) The Authority has noted that since there is an appreciable price difference to independent and related entities, and that the exporter has not established that sales to related buyer in home market in the ordinary course of trade, for the purpose of preliminary finding, the Authority has considered sales to independent customers only. It is the obligation of the exporter to prove based on the data and evidence that such sales are made at ordinary course of trade

E.2. Submissions by the other interested parties

19. Following submissions have been made with regard to, Normal Value, Export Price and Dumping Margin:

- a. POI is April 2019 to December 2019, however, the data relied on with respect to normal value and export price to initiate the present investigation upto November 2019. No details provided as to what basis these prices were arrived at and confidentiality has been claimed on the IHS Markit. It is not clear if the updated data provided by the Petitioners up to December 2019 relies on the same source or some other source.

- b. Ex-factory export price for Turkey and USA is grossly understated. HUL has determined ex-factory export price based on its import price and using the adjustment claimed by the petitioners and traders' margin as per market intelligence. Export price is in the region of 220 -240 USD/MT for Turkey and USD/MT200 -220 for USA.
- c. Dumping margin would be negative if fair comparison is done. Landed price of dense with NIP of dense.
- d. Soda Sanayii has exported only dense, even though it has produced both light and dense.
- e. The indirect sales in the case of the Companies are clearly "compatible" with the "normal" commercial practice and can be considered in the eligible sales for normal value determination. The sales through the related party also can be subjected to OCT test for reasons of price and other requirements of Article 2.1 of the AD Agreement and also Indian AD Rules and a relation alone does not make such transactions and prices unreliable for the purpose of determination of normal value
- f. It cannot be said that the prices of 85-95% goods sold so was all distorted and unrealistically low to have excluded from the scope of normal value
- g. For determining normal value for TCSAP related party transactions should be considered.
- h. Individual duty rates ought to be recommended for TCSAP as per the margins calculated in Preliminary Findings

E.3. Examination by the Authority

20. Under section 9A (1) (c), normal value in relation to an article means:

- i. *The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article, when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6), or*
- ii. *When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:*
 - a. *comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
 - b. *the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);*

21. The Authority has sent questionnaires to the known producers/exporters from the subject countries, advising them to provide information in the form and manner prescribed by the Authority.

22. Following foreign producers have filed questionnaire response

- a. Searles Valley Minerals Inc., USA
- b. Tata Chemicals Soda Ash Partners ("TCSAP"), Producer, USA
- c. M/s Tata Chemicals International Pte. Ltd. ("TCIPL"), USA
- d. ETI Soda Uretim Pazarlama Nakliyat Ve Elektrik Uretim Sanayi Ve Ticaret A.S., Turkey
- e. Kazan Soda Elektrik Uretim A.S, Turkey
- f. Ciner IC Ve Dis Ticaret A.S. (CIDT), Turkey
- g. Türkiye Şişe ve Cam Fabrikaları Anonim Şirketi (formerly Soda Sanayii A.S., Turkey)

23. The Authority notes the submission of interested parties and has evaluated the dumping margin and injury margin on the basis of response filed by the producer/exporter.

Determination of Normal Value and Ex-factory Export Price for producers/exporters of USA

Searles Valley Minerals Inc., USA and Tata Chemicals Soda Ash Partners ("TCSAP")

E.3.1 Determination of Normal Value

24. To determine the normal value, the Authority conducted the ordinary course of trade test to determine profit making domestic sales transactions with reference to cost of production and SGA expenses concerning the product under consideration. Where profit making transactions are more than 80%, the Authority considered the transactions in the domestic market for the determination of the normal value and in case, profitable transactions are less than 80%, only profitable domestic sales are taken into consideration for the determination of normal value.

Searles Valley Minerals Inc., USA

25. From the response filed by Searles Valley Minerals Inc. the Authority notes that the company has made direct sales of the product under consideration in the domestic market during the POI.
26. Further, it is seen that the company has sold material in the domestic and Indian market both directly and through affiliated companies. However, the exporter has not provided any justification and evidence as to how these sales to affiliated parties are in the ordinary course of trade. Considering that the exporter has not established how the sales to affiliated are in the ordinary course of the trade, the Authority has ignored sales made by the company to its affiliated company. Subject to the above, the Authority has considered and adopted the questionnaire response filed by both the producers from USA. Based on the ordinary course of trade test, profitable domestic sales to unrelated customers have been taken for determination of normal value, wherever the profitable sales were less than 80%. Wherever profitable sales were above 80%, normal value has been determined based on total domestic sales. Price adjustments have been allowed, as claimed, and pending further determination. Accordingly, normal value has been determined at ex-factory level, as *** \$/MT.

M/s Tata Chemicals Soda Ash Partners ("TCSAP"), Producer, M/s Tata Chemicals International Pte. Ltd. ("TCIPL") and M/s Tata Chemicals Ltd. ("TCL")

27. The producer/exporter has sold *** MT of subject goods in their domestic market during POI which include *** MT to unaffiliated customers, and *** MT to affiliated and *** MT to ALCAD, partnership, a related trader (who sold it further to end customer/users). The Authority notes the submission of the producer/exporter and re-iterates that since there is an appreciable price difference to independent and related entities, and that the exporter has not established that sales to related buyer in home market in the ordinary course of trade, the Authority has considered sales to independent customers only as adopted in the preliminary finding. Further, the Ordinary Course of Trade test i.e the OCT test is though common for both related and independent buyers, the test for sales to related parties need to be further evidenced being at Arm's length. Price adjustments have been allowed, as claimed, and pending further determination. The 'normal value' after applying significant and OCT test comes to *** \$/MT.

All other Producers/Exporters from USA

28. In respect of all other producers/exporters from USA who are treated to be non-cooperative, the Authority has determined normal value as per facts available in terms of Rule 6(8) of the AD Rules. The questionnaire response filed by the US producers is considered for the purpose. The highest normal value in the domestic market is adopted.

E.3.2 Export Price

Searles Valley Minerals Inc., USA

29. From the response filed by Searles Valley Minerals Inc., USA, the Authority notes that Searles Valley Minerals Inc. is a producer as well as exporter of the subject goods. During

the POI, Searles Valley Minerals Inc., USA has exported subject goods to an extent of *** MT to India directly. Adjustments towards inland freight, credit cost, handling expenses, commission, insurance, overseas freight and foreign exchange loss have been claimed by the producer/exporter. Adjustments towards inland freight, credit cost, handling expenses, commission, insurance and overseas freight have been allowed by the Authority. Accordingly, the net export price determined for exports to India has been determined as USD *** per MT. The landed value is computed as *** \$/MT.

M/s Tata Chemicals Soda Ash Partners ("TCSAP"), Producer, M/s Tata Chemicals International Pte. Ltd. ("TCIPL") and its related importer M/s Tata Chemicals Ltd. ("TCL")

30. M/s Tata Chemicals Soda Ash Partners ("TCSAP"), USA, the producer have exported *** MT which includes *** MT to India through its related exporter to M/s Tata Chemicals International Pte. Ltd. ("TCIPL"), Singapore and also *** MT directly to M/s Tata Chemicals Ltd. ("TCL") a related importer in India during POI. The ex-factory export price of *** \$/MT of subject goods to India in POI has been considered after considering adjustments on freight and delivery charges. The landed value is evaluated as *** \$/MT.

Export Price for non-cooperating producers/exporters from USA

31. The Authority has determined the export price for non-cooperating producers/ exporters from USA based on facts available, for which the questionnaire responses filed by the producers from USA are considered. The lowest selling price for exports to India is considered.

Determination of Normal Value and Ex-factory Export Price for producers/exporters of Turkey

ETI Soda Uretim Pazarlama Nakliyat Ve Elektrik Uretim Sanayi Ve Ticaret A.S. and Kazan Soda Elektrik Uretim A.S. – The Ciner Group

a) ETI Soda Uretim Pazarlama Nakliyat Ve Elektrik Uretim Sanayi Ve Ticaret A.S. (ETI Soda in short)

32. The producer is from Ciner Group of Companies and produces Natural Soda Ash and had produced and sold Dense Soda Ash only as claimed by the Company. ETI Soda has produced *** MT of PUC during the POI. The Company had sold *** MT of the PUC directly to independent customers and *** MT to its related companies in the domestic market. Out of the related companies, only one of its related companies namely Ciner IC Ve Dis Ticaret A.S. (CIDT) had sold *** MT of PUC to independent customers in the domestic market. The Authority notes the submission of the producer/exporter and reiterates that since there is quite a difference between the domestic selling price to related and non-related entities and that the exporter has not established that sales to related buyer in home market in the ordinary course of trade, the Authority, has considered the normal value, based on the direct sales of ETI to independent customers (*** MT) as adopted on the preliminary finding. Further, the Ordinary Course of Trade test i.e the OCT test is though common for both related and independent buyers, the test for sales to related parties need to be further evidenced being at Arm's length.
33. The Exporters Questionnaire Responses filed by ETI Soda and CIDT have been examined. The domestic sales of the subject goods by ETI Soda in their domestic market is representative and viable for permitting determination of normal value on the basis of their domestic selling prices. The ordinary course of trade test is also undertaken on the transaction wise domestic price data and cost data provided by ETI. The normal value so determined is US\$ *** per MT for the POI.

b) Kazan Soda Elektrik Uretim A.S (Kazan in short)

34. The above producer is also from the Ciner Group of Companies and produces Natural Soda Ash and had produced and sold Soda Ash Dense only as claimed by the Company. Kazan Soda Elektrik Uretim A.S had produced *** MT of PUC during the POI. The Company had sold *** MT of PUC in the domestic market directly to independent

customers. The Company had also sold *** MT of PUC in the domestic market to its related companies out of which one of its related Company namely Ciner IC Ve Dis Ticaret A.S. (CIDT) had sold *** MT to independent customers in the domestic market. For the purpose of normal value, the Authority has to considered only the direct sales of Kazan to independent customers (*** MT) keeping in view that selling price of the producer to related and non-related has an appreciable difference and that the exporter has not established that sales to related buyer in home market in the ordinary course of trade.

35. The Exporters Questionnaire Responses filed by Kazan and CIDT have been examined. The domestic sales of the subject goods by Kazan in their domestic market is representative and viable for permitting determination of normal value on the basis of their domestic selling prices. The ordinary course of trade test is also undertaken on the transaction wise domestic price data and cost data provided by Kazan. The normal value so determined is US\$ *** per MT for the POI.

c) Türkiye Şişe ve Cam Fabrikaları Anonim Şirketi (formerly Soda Sanayii A.S.) – The Sisecamgroup

36. The producer is from Sisecamgroup of companies and produces Synthetic Soda Ash and had produced and sold both Soda Ash Dense and Soda Ash Light. Türkiye Şişe ve Cam Fabrikaları Anonim Şirketi has produced *** MT of PUC during the POI. The Company had sold *** MT of PUC in the domestic market directly to independent customers and *** MT of PUC in the domestic market to its related companies who had consumed it as raw material without any resale. It is also noted that the Company had imported *** MT of Soda Ash from its related company in Bulgaria and Bosnia and such imported volume is also covered in the total domestic sale of *** MT. The Company claimed that since these materials are not originating in Turkey, normal value need to be calculated based on the own manufactured goods without considering the sale of imported material. The Company has further claimed that since they had sold only Soda Ash Dense to India, the sales of only Soda Ash Dense in domestic market need to be considered for calculation of normal value. The Authority notes that the producer has claimed only one cost for both dense and light grades which also includes the soda ash imported and then sold in the domestic market. There is no evidence and justification to restrict the analysis only to Dense Soda Ash only when the exporter has himself provided a consolidated cost for dense, light and imported goods in appendix 8. Hence, for the purpose of normal value, the direct sales of subject goods sold to independent customers of both grades i.e. Soda Ash Dense and light (*** MT) including that is imported are taken in to consideration.
37. The Exporters Questionnaire Responses filed by the Company have been examined. The domestic sales of the subject goods by the producer in their domestic market is representative and viable for permitting determination of normal value on the basis of their domestic selling prices. The ordinary course of trade test is also undertaken on the transaction wise domestic price data and cost data provided by the producer. The normal value so determined is US\$ *** per MT for the POI.

All other Producers/Exporters from Turkey

38. In respect of all other producers/exporters from Turkey who are treated to be non-cooperative, the Authority has determined normal value as per facts available in terms of Rule 6(8) of the AD Rules. The questionnaire response filed by the producers from Turkey are considered for the purpose. The highest normal value in the domestic market is adopted.

Export Price

ETI Soda Uretim Pazarlama Nakliyat Ve Elektrik Uretim Sanayi Ve Ticaret A.S. and Kazan Soda Elektrik Uretim A.S. – The Ciner Group

a) ETI Soda Uretim Pazarlama Nakliyat Ve Elektrik Uretim Sanayi Ve Ticaret A.S.

39. The Company had exported *** MT of subject goods to India directly during the POI. All these sales were at FOB terms. The company has submitted adjustments on account of inland freight and port handling expenses and the same is accepted to work out the

ex-factory export price. The net export price determined for the Company so comes to US\$ *** per MT for the POI. The landed value is computed as *** USD/MT for the POI.

b) Kazan Soda Elektrik Uretim A.S

40. The Company had exported *** MT of subject goods to India through CIDT during the POI. All these sales were at FOB terms. The company has submitted adjustments on account of inland freight and port handling expenses and the same is accepted to evaluate the ex-factory export price. The net export price for the Company comes to US\$ *** per MT for the POI. The landed value is computed as *** \$/MT for the POI. The authority has not considered the sale of through the related company for the purpose of final finding.

c) Türkiye Şişe ve Cam Fabrikaları Anonim Şirketi (formerly Soda Sanayii A.S.)

41. The Company had exported *** MT of subject goods to India directly and *** MT through its related exporter namely Sisecam Dis Ticaret A.S. during the POI who have also filed the Exporters Questionnaire Response. The Company has submitted adjustments on account of inland freight, port handling expense, ocean freight, Marine insurance, commission (in case of sales through related party) and the same is accepted to evaluate the ex-factory export price which comes to US\$ *** per MT for the POI. The landed value is computed as *** \$/MT for the POI.

Export Price for non-cooperating producers/exporters from Turkey

42. The Authority has determined the export price for non-cooperating producers/ exporters from Turkey based on facts available, for which the questionnaire responses filed by the producers from Turkey are considered. The lowest selling price for exports to India is considered.

E.3.3 Dumping Margin

43. Considering the normal value as provided above, and export price as determined, the authority has determined the dumping margins during the POI for all the producers-exporters of the subject countries.

Sl. No	Name of the Producer Company	Normal Value (US\$/MT)	Net Export Price (US\$/MT)	Dumping Margin (US\$/MT)	Dumping Margin (%)	Dumping Margin (Range)
A.	Turkey					
1	a)ETI Soda Uretim Pazarlama Nakliyat Ve Elektrik Uretim Sanayi Ve Ticaret A.S.	***	***	***	***	10-20
	b)Kazan Soda Elektrik Uretim A.S	***	***	***	***	10-20
	Weighted Average of Ciner Group	***	***	***	***	10-20
2	Türkiye Şişe ve Cam Fabrikaları Anonim Şirketi	***	***	***	***	0-10
3	Any other producer/exporter	***	***	***	***	10-20
B.	USA					
4	Searles Valley Minerals Inc.	***	***	***	***	20-30

5	Tata Chemicals Soda Ash Partners ("TCSAP")	***	***	***	***	20-30
6	Any other producer/exporter	***	***	***	***	30-40

44. It is seen that the dumping margins are significant and more than the de-minimus in respect of exports made from each of the subject countries.

F. INJURY ASSESSMENT AND CAUSAL LINK

F.1. Submissions made by the Domestic Industry

45. The submissions made by Domestic Industry are as follows:

- a. PUC is sold in two forms i.e. light and dense. Imports are largely in dense form which is predominantly used by the glass sector. Thus, adverse impact of imports on the domestic industry would be seen in the glass manufacturing sector.
- b. The demand/apparent consumption of the subject goods increased over the proposed injury period.
- c. The volume of imports from subject countries have increased significantly both in absolute and relative terms. Post-cessation of duty, there has been an exponential rise in imports from the subject countries. Imports from subject countries has increased from base year to the POI. Imports in relation to production and consumption (excluding captive) has also increased significantly.
- d. Evolution of prices over the injury period, of the subject countries, EU, Kenya, other major countries and remaining countries, shows that landed price from the subject countries is now lower than all other major countries including Kenya and EU.
- e. Import prices from the subject countries have been significantly below the selling prices of the domestic industry, thus resulting in significant price undercutting. Determination price undercutting on the basis of net sales realisation (NSR) after excluding freight & discount is inconsistent with application proforma, business reality and the purpose of determining price undercutting. Price undercutting should be determined based on selling price and not NSR.
- f. Despite increase in cost of sales and selling price, the increase in selling price was earlier higher than the increase in cost of sales so long as the ADD was in place. However, in recent period prices are falling steeply. Price list of one of the applicant companies shows that even the list prices have declined significantly.
- g. As imports have increased in a short span hence, quarterly analysis has been done. Cost of sales have increased and selling price is declining since Q1 2019-20. Rate of increase of cost of sales is much higher than rate of increase in landed price. Landed price of imports from the subject countries, are below the level of selling price of the domestic industry. Imports are thus suppressing and depressing the prices of the domestic industry consequently adversely impacting the profitability. Imports are largely in dense form, thus imports are mostly competing in the consumer segment of dense soda ash i.e. glass manufacturing industry.
- h. Production and sales of the domestic industry has increased over the injury period with increase in demand and capacity enhanced. However, production and sales of the domestic industry is lower than what it could have been in the absence of dumped imports, which have increased significantly. Quarterly movement would show that despite increase in demand, the domestic sales have declined. Despite increase in demand, inventories have increased.
- i. There is a significant increase in the market share of subject imports in the POI by 254% from base year. Share of domestic industry has increased however, share of domestic producers as a whole declined.

- j. Domestic industry's profitability improved upto 2018-19, and declined in the proposed POI. The applicants submitted that as imports are largely used in glass sector; hence, profitability of the domestic industry has declined more in glass than in non-glass sector.
- k. Return of investment (ROI) has progressively declined over the injury period, and has declined significantly in the POI when compared to the base year.
- l. The level of inventories with the domestic industry have increased over the injury period. In a scenario of increasing demand, inventories should have increased, however, it has increased not just with DI but with other domestic producers as well.
- m. The number of employees and wages, considering increase in capacity have also increased. However, the applicants submitted that the same is not solely dependent on performance of subject goods, rather governed by legislative requirements of the country and various business compulsions with the industry.
- n. The growth of domestic Industry was positive in terms of production, domestic sales. However, the growth in terms of inventories, profits, cash profits and return on investment was negative in the POI.
- o. South Africa in 2019, in a SSR investigation against imports of soda ash from USA extended duties for 5 years.
- p. Increased imports over the POI, imports undercutting prices of industry, imports causing price suppression, positive and significant price underselling, decline in cash profits, profits and return on capital, surplus capacities indicating threat of injury were found in the preliminary findings.
- q. Transport cost is not exclusive for the Indian industry. In the 2019 Annual Ciner Group Report, Ciner Group concluded that the soda ash industry was logistics intensive and that the large freight costs made up a substantial amount of delivered cost. Increase in freight costs increases costs of final delivery significantly, making soda ash less competitive than other substitutes. Exporters observe the same. Thus, exclusion of freight in calculation of price undercutting should not to be applied across the board to all cases and should rather be seen industry wise.
- r. Decline in import prices made a significant decline in Domestic industry's selling prices as well, further reducing profitability and increasing imports.
- s. Fresh production capacities have been established by the subject countries. The U.S Geological Survey, 2019 claimed production capacity in Turkey to be between 4 million and 5 million tons. Exports of soda ash have grown at CAGR 117% over 2014-18. Production capacity of USA enhanced by 305,000 tons of soda ash per year, totalling to 14 million tons.
- t. According to IHS Markit Report [28th February 2020], exports from subject countries have increased significantly, especially to India with similar levels seen only in Malaysia and Indonesia. Covid-19 effected a decline in Turkey's domestic market by 10% and to exports to Indian Sub-continent. The USA domestic market demand and export demand have also declined. Thus, in constrained domestic demand, Indian market is liable to be targeted more.
- u. According to Ciner Resources LP's, First Quarterly Report of 2020, despite the decline impacted by the pandemic Ciner observes an increase in production. Increase in inventory levels, production, capacity utilization has also been seen. ANSAC, largest customer to Ciner group was terminated, thus more focus to be given on Indian industry. As Ciner is a low cost producer and the US and Turkey divisions of the company set to combine export volumes, optimizing their market shares internationally. Therefore, because India is a favourable market of soda ash to the subject countries, the likelihood of amplifying detriment of the domestic producers increases.
- v. Actual cost of RSPL not considered by the Authority. NIP determination by DGTR involves optimized costs, the non-inclusion of freight in the injury margin determination

led to low quantum of duties. Selling products at market prices and a decline in these prices show that RSPL suffered injury.

- w. No evidence as to how 22% return on capital employed is not justified. CESTAT observed that 22% return is valid as per consistent practice of the Designated Authority, the onus to disprove the same being on the refuting party.
- x. Capital employed to be assessed on present value of fixed assets, information of the same is on record in form of investments made by RSPL. Investments made by GHCL and DCW are significantly old and therefore net fixed assets do not represent true value of investments. Authority shall consider per unit NFA over the injury period along with the information of the 3 companies, which itself will demonstrate the difference between the new and old investments.
- y. Domestic producers have underutilized capacity, thus no shortage of dense soda ash. Benchmark duty can only protect from unfair trade considering steep decline in import price without corresponding decline in cost not just in period of investigation but also post POI. Benchmark duty best suited in a demand-supply gap.
- z. Production and sales of the domestic industry increased over the injury period in view of increase in demand and capacity enhanced, however it is lower than what it could have been in the absence of dumped imports. The significant increase was possible due to steep decline in import prices. Capacity, production, sales increased nominally as compared to significant subject imports increase despite the increasing and sufficient demand in country. Despite increase in imports, the domestic sales have declined.
- aa. No authority determines price undercutting over the injury period, nor price undercutting can be determined over the injury period in case there is an elaborate PCN involved. Domestic industry doesn't allege injury for the entire injury period only for the POI.
- bb. Import price declined within the POI, despite increase in cost of sales, the petitioners were unable to increase their prices as much in order to stay competitive.
- cc. Domestic Industry was able to improve its performance till 2018-19 due to partial protection of ADD till March 2019, however this declined due to absence of ADD. Reliance of GHCL's performance from its Q3 results of 2019-20 is incorrect and misleading. Quarter wise analysis necessary as while segment revenue might have increased, the segment results have declined significantly.
- dd. Soda ash expansion loan, capex program, medium term loan and R&D initiatives are factors supporting the claim of growing capacities due to growing demand in India. In the presence of dumped imports, the domestic industry's investment and expansion of capacity is proving to be futile and impacting its performance.
- ee. Transportation cost not exclusive for the Indian industry, as exporters also claim increase in freight increases cost. Further they are unable to pass this to customers.
- ff. Statements of Nirma taken from the year precedent to the POI. Statements anyway inconsequential as soda ash division having 36% share in the company's turnover does not prove anything.
- gg. Threat of material injury proved on all four factors, significant increase in imports both historically and for the current injury period have been provided; sufficient data from government agencies and exporters' company reports on domestic demand in the subject countries, surplus capacities and significant depressing or suppressing effect that would increase demand for further imports.
- hh. The reason for excessive confidentiality is highly business sensitive information that cannot be made public, its confidentiality is protected under the rules.
- ii. US exports are not subsidized and therefore subsidies in the exports cannot be a cause of injury to the domestic industry.
- jj. First, there is an appreciable price difference to independent and related entities, and the exporter has not established that sales to related buyer in home market in the ordinary

course of trade, thus for the purpose of preliminary finding, the Authority has considered sales to independent customers only. The burden of proving ordinary course of sales lies on the exporter.

- kk. Imports from China were at higher price and has thus not been considered as subject country causing injury to the domestic industry.
- ll. Imports along with demand have declined, however in relation to consumption and production they remain high. Imports from other countries in the POI are at a higher price. Injury to the domestic industry has been examined in terms of Annexure II of the AD Rules. Due to Covid-19 current level of Domestic inventories increased, not able to utilize its capacity fully and also not being able sell to the extent produced to the imports.
- mm. Selective reference made to the Annual GHCL report. Imports have led to over- supply of goods leading to increased inventories have also been claimed.
- nn. Industry does not fail to meet demand. IHS Markit Report Supplement Issue No. 139 dated 13th Feb 2020, states that India remains oversupplied despite increase in demand and Indian imports over 2019 increased by 3% y/y.

F.2. Submission by other interested parties

46. Submissions of the interested parties in regard to injury and causal link are as follows:

- a. There is only minor increase in import volumes in relative terms. The market share has increased. Capacity, production and sales quantity of the domestic industry has also increased. Any impact on capacity utilization during the POI is because of the recent increase in capacity by the domestic industry as is also evinced from a decrease in captive consumption
- b. Freight outwards have been included in net sales realization, which is against the Rule. In case the authority chooses to consider the sales price at the factory gate of the customer then landed price should also be adjusted appropriately to ensure a fair comparison between prices
- c. Increase in selling price is less as compared to the costs even when increase in landed price is more than the increase in cost of sales. Thus, alleged price undercutting has not impacted the selling price and thus, is not causing a price suppression/depression.
- d. NIP based on alleged injury margin is in the range of INR 22,048 per MT to INR 22,741 per MT. Import price of HUL, as per the questionnaire response filed, is far above this.
- e. Revenue and EBIT - domestic sales has improved substantially over past few years as is also evidenced from the annual reports of the petitioning companies.
- f. Injury if any, is self-inflicted and caused by factors such as the Petitioners' undertaking loans, investments, capacity enhancement and R&D activities as evidenced from Annual reports.
- g. More than 20% of the total demand of the country is required to be met by imported material, the same further can be corroborated from the recent IHS publication, Jan 2020. Thus, no volume effect can be attributed to imports.
- h. Price-undercutting should be provided for injury period including POI and will be relevant to determine any causal link between the alleged price-undercutting and alleged injury.
- i. There is no threat of material injury. The percentage share of exports of the subject goods to India from USA and Turkey is minimal. Export prices from Turkey into other countries shows that India export prices from Turkey are in fact on the higher side. No evidence on inventories of the subject goods have been provided
- j. Light soda ash producer RSPL has been included for higher NIP.
- k. ROI in 10-20% for industrial input is reasonable and 22% for NIP should not be considered benchmark.
- l. Bona fide dense importers who are importing due to short supply should not be made to pay high duties hence benchmark duty has put undue hardship.
- m. 4. While imports from subject countries may have increased, these imports have not impacted

- the Domestic Industry. This is because the increase in the domestic sales of the Domestic Industry has clearly outpaced the demand of the subject goods in the country demonstrating a lack of volume injury to the Domestic Industry.
- n. Designated Authority has itself noted in paragraph 69 of the Preliminary Findings that (a) Domestic Industry has enhanced capacity; (b) Production and domestic sales have increased over the injury period in view of demand and addition of capacities and (c) declines in capacity utilization of the domestic industry declined in the POI is due to addition of fresh capacities by M/s. RSPL
 - o. Designated Authority is requested to reject the Domestic Industry's argument of including freight when calculating price undercutting as has been held by the Designated Authority in past investigation and calculate price undercutting while excluding freight in the Final Findings as well
 - p. Price undercutting should be provided for each year in line with profitability. Import prices increased and cost of sales also increased, but DI did not increase its prices, therefore no suppression/depression. Profits increased during the injury period and ROCE is positive. Decline in ROCE mainly due to increase in capacity.
 - q. The Annual Reports, Investors Reports of the Domestic Industry further substantiate that the performance of the Domestic Industry has substantially improved over the injury period. Therefore, injury, if any, to the Domestic Industry is due to other factors.
 - r. The other factors that may have caused injury to the Domestic Industry includes loans, increased capacity and other R&D activities undertaken by GHCL as evinced from its Annual Report 2018 – 19. Similarly, DCWL also increased capacity and made certain investments as noted in the DCW Limited Annual Report 2018-19.
 - s. Domestic Industry incurs certain logistical costs because the production facilities of the PUC are largely situated in the west coast of the country (i.e. in State of Gujarat) whereas, the demand of the PUC is spread throughout the country resulting in high costs for the buyers/users.
 - t. Performance of other producers-Nirma Annual Report 2018-19 shows that it has consolidated its position in soda ash and soda ash has 36% share in the company's turnover.
 - u. Table containing data has been submitted showing total revenue, profit before tax and usage of raw material by Nirma, DCW, Tata and GHCL, shows significant increase in these parameters from 2017-18 to 2018-19.
 - v. Existence of all four factors to be considered for threat of material injury (Nirma Ltd. vs. UOI). Percentage share of India from Turkey and USA when compared to other destinations, is meagre. For Turkey it was 5.05% in 2017-18 and is 5.43% in POI. For USA it was 2.47% in 2017-18 and 4.16% in the POI. Failed to establish disposable capacities. No evidence provided to claim significant inventory level.
 - w. Petitioners in CVD petition under evidence of causal link have stated that imports from USA are at higher prices. Therefore, injury is not being caused because of USA and the Authority should terminate investigation against USA.
 - x. Imports post initiation have declined, therefore no need for Authority to recommend provisional duties. Authority has not analysed: (i) imports from other countries and its impact; (ii) performance in terms of Para (ii) & (iv) of Annexure II; (iii) Impact of COVID on industry.
 - y. For causation 2019-20 Annual report of GHCL has been relied upon. The report refers to demand suppression due to COVID and low capacity utilisation thereof. 91% utilisation which show GHCL not suffering injury due to imports. Report states that Soda ash business is doing fine. GHCL is profitable and is not suffering due to marquee clients including Saint Gobain.
 - z. Saint Gobain imports only for additional requirements.
 - aa. Injury is not from Turkey but could be from other countries.

- bb. Increase in inventory is due to slowdown. Price volatility due to coal.
- cc. Applicant industry fails to meet the demand of the consuming industry. Additional duties would severely impact the user industry as well as government's make in India and Atmanirbhar initiative.
- dd. The petitioners failed to bring on record any case of dumping and consequent injury on account of imports of subject goods from subject countries. On the contrary, the performance of the domestic industry has been at very robust levels

F.3. Examination by the Authority

47. The Authority has taken note of the submissions made by the interested parties and has examined various parameters in accordance with the relevant Anti-Dumping Rules and Annexure III after duly considering the submissions made.

Cumulative Assessment

48. Para (iii) of Annexure II of the Anti-Dumping Rules provides that in case where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to anti-dumping investigation, the Authority will cumulatively assess the effect of such imports, in case it determines that:
- a. Margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of imports from each country is three percent (or more) of the import of like article or where the import of individual countries is less than three percent, the imports collectively account for more than seven percent of the import of like article; and
 - b. Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in the light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.
49. The Authority notes that:
- a. The subject goods are being dumped into India from subject countries. The margin of dumping from each of the subject countries is more than the de minimis limits prescribed under the Rules.
 - b. The volume of imports from each of the subject countries is individually more than 3% of total volume of imports.
 - c. Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate as the exports from the subject countries not only directly compete inter se but also with the like article offered by the Domestic Industry in the Indian market.
50. In view of the above, the Authority considers that it is appropriate to assess injury to the Domestic Industry cumulatively from imports of the subject goods from the subject countries.
51. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the Domestic Industry, *taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles.*
52. In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. For the examination of the impact of the dumped imports on the Domestic Industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, inventory, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the Anti-Dumping Rules.
53. The submissions made by interested parties with regard to injury and causal link, which have been considered relevant by the Authority are examined and addressed as under.

F.4. Volume Effect of Dumped Imports on the Domestic Industry**(a) Assessment of Demand/Apparent Consumption**

54. Demand or apparent consumption of the product in India has been determined as the sum of domestic sales of the Indian Producers and imports from all sources. It is seen that the demand so assessed has shown an increasing trend throughout the injury period.

Demand	Unit	2016-17	2017-18	2018-19	POI	POI (Annualised)
Sales of Domestic Industry	MT	8,15,013	9,28,870	9,66,628	744,589	992,785
Captive Consumption	MT	56,280	68,223	76,718	1,39,633	1,86,177
Sales of Other Indian Industry	MT	16,07,448	16,76,320	17,74,043	12,27,401	16,36,535
Subject countries-Imports	MT	1,41,096	2,41,324	3,30,506	4,12,910	5,50,546
Other Countries- Imports	MT	5,47,764	5,31,297	5,06,488	2,77,320	3,69,760
Demand/consumption	MT	31,67,601	34,46,034	36,54,383	28,01,853	37,35,803
Index		100	109	115	118	118

(b) Import Volumes from the subject countries

55. With regard to the volume of dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports from the subject countries, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. The factual position is as follows;

Import Volume	Unit	2016-17	2017-18	2018-19	POI	
					Actual	Annualised
Subject Countries	MT	141,096	241,324	330,506	412,910	550,546
Index		100	171	234	390	390
Subject country-Turkey	MT	15,190	92,251	209,998	178,956	238,607
Subject country-USA	MT	125,906	149,073	120,508	233,954	311,939
Countries with more than 3% Share	MT	380,814	403,379	385,423	226,974	302,633
Other Countries	MT	166,950	127,919	121,065	50,346	67,128
Total	MT	688,860	772,622	836,994	690,230	920,306

56. It is seen that dumped imports from subject countries have increased over the injury period with increase in the POI. Domestic industry has submitted that the imports have increased after cessation of anti-dumping duties which was earlier levied on the import of subject goods from the subject countries.

(c) Subject Countries Imports in relative terms

57. It is seen that the dumped imports in relation to production and consumption increased from 5.40% and 4.45% in the base year to 17.41% and 14.74% respectively, in the POI. Thus, the Authority notes that imports in relation to production and demand, have increased significantly over the injury period. In relation to imports, subject countries imports increased from about 20% in base year to about 60% in the POI.

	Unit	2016-17	2017-18	2018-19	POI	
					Actual	annualised
Production	%	5.40	8.20	10.87	17.41	17.41
Demand including Captive	%	4.45%	7.00%	9.04%	14.74%	14.74%
Gross imports	%	20.48	31.23	39.49	59.82	59.82

F.5. Price Effect of Dumped Imports on the Domestic Industry

58. With regard to the effect of the dumped imports on prices, it is required to be analyzed whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like products in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices or prevent price increases, which otherwise would have occurred in the normal course. The impact on the prices of the Domestic Industry on account of the dumped imports from the subject countries has been examined with reference to price undercutting, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis, the cost of production, net sales realisation, selling price and the non-injurious price (NIP) of the Domestic Industry have been compared with landed price of imports of the subject goods from the subject countries.

(a) Price Undercutting

59. For the purpose of price undercutting analysis, the selling price of the Domestic Industry has been compared with the landed value of imports from the subject countries. It has been contended by the domestic industry that transportation cost forms a very substantial portion of the cost of production in case of subject goods, as (a) the domestic industry is located in the State of Gujarat and the sales have to be made throughout India and (b) given the price of the product, freight cost forms a significant part in the procurement cost of the consumers. The domestic industry has thus contended that the selling price of the domestic industry should be compared with the landed price of imports only after adding the transportation costs. It is seen that the subject goods are a comparatively lower price product. Thus, the incidence of transportation cost per MT is substantial when compared with the selling price of the product and is likely to impact the price comparability. The Authority considering this claim has determined price undercutting, both, by including freight and excluding freight.

Price undercutting without freight

Particulars	Unit	USA	Turkey
Landed value	Rs. /MT	19,172	18,192
Net sales realization without freight	Rs. /MT	***	***
Price undercutting	Rs. /MT	***	***
Price undercutting	%	***	***
Price undercutting	Range	0-10	10-20

60. It is seen that the import prices from the subject countries have been below the selling price of the domestic industry, thus undercutting the domestic prices.

(b) Price Suppression and Depression

61. In order to determine whether the dumped imports are suppressing or depressing the domestic prices, changes in the costs and prices over the injury period have been compared. The factual position is as follows :

Particulars	Unit	2016-17	2017-18	2018-19	POI
Cost of sales	Rs./MT	***	***	***	***
Index		100	103	110	120
Selling price	Rs./MT	***	***	***	***
Index		100	101	111	111
Landed price of imports-USA	Rs./MT	14,185	13,805	18,067	19,172
Index		100	97	127	135
Landed price of imports-Turkey	Rs./MT	15,538	14,539	16,270	18,192

Index		100	94	105	117
Landed price of imports-Total	Rs./MT	14,331	14,086	16,925	18,747
Index		100	98	118	131

62. It is seen that both cost of sales and selling price increased over the injury period. However, whereas the cost of sales continue to increase in the POI, selling price has increased only very marginal. While cost of sales increased by 10 basis points in the POI as compared to preceding year, the selling price was almost constant. At the same time, though the landed value of imports from subject countries has increased, but it is less than the domestic selling price, thereby, preventing the Domestic Industry to increase its selling price.

F.6. Economic Parameters of the Domestic Industry

63. Annexure II to the Anti-Dumping Rules requires that the determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of dumped imports on domestic producers of such products. With regard to consequent impact of dumped imports on domestic producers of such products, the Anti-dumping Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the Domestic Industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account various facts and submissions made.

(a) Production, Capacity, Sales and Capacity Utilization

64. Capacity, production, sales and capacity utilization of the Domestic Industry over the injury period is given in the following table: -

Particulars	Unit	2016-17	2017-18	2018-19	POI	POI(A)
Capacity	MT	1046,000	10,71,000	12,18,500	11,44,500	15,26,000
Indexed		100	102	116	146	146
Production	MT	8,78,326	10,19,514	10,71,986	9,37,514	12,50,019
Indexed		100	116	122	142	142
Capacity Utilization	%	84%	91%	84%	82%	82%
Indexed		100	108	100	98	98
Domestic Sales	MT	8,15,013	9,28,870	9,66,628	7445,89	992785
Indexed		100	114	119	122	122

65. It is seen that

- The domestic industry has enhanced capacity. RSPL has started production in the POI with a plant having 500,000 MT, while GHCL has enhanced capacities in 2018-19. The demand for the product has increased over the years. The domestic industry contended that the domestic producers have enhanced capacities in view of the demand of the subject goods.
- Production and domestic sales have increased over the injury period in view of demand and addition of capacities.
- The capacity utilisation of the domestic industry declined in the POI. However, this could be due to addition of fresh capacities by M/s. RSPL.

(b) Profitability, return on investment and cash profits

66. Profitability, return on investment and cash profits of the Domestic Industry over the injury period is given in the table below: -

Particulars	Unit	2016-17	2017-18	2018-19	POI	POI(A)
Cost of sales	Rs./MT	***	***	***	***	***
Indexed		100	103	110	120	120
Selling price	Rs./MT	***	***	***	***	***
Indexed		100	101	111	111	111
Profit/(Loss) per unit	Rs./MT	***	***	***	***	***
Indexed		100	98	113	88	88
Profit/(Loss) - total	Rs.Lacs	***	***	***	***	***
Indexed		100	111	133	124	124
Profit before Interest and Tax	Rs.Lacs	***	***	***	***	***
Indexed		100	108	128	136	136
Profit before Interest and Tax	Rs./MT	***	***	***	***	***
Indexed		100	95	108	97	97
Cash Profit	Rs.Lacs	***	***	***	***	***
Indexed		100	112	133	137	137
Cash Profit Per Unit	Rs./MT	***	***	***	***	***
Indexed		100	98	112	98	98
Return on Capital Employed-NFA	%	***	***	***	***	***
Return on Capital Employed-NFA	Range	40-50	30-40	20-30	10-20	10-20
Indexed		100	74	51	40	40

67. It is seen that:

- While gross cash profit and profit before interest increased over the injury period, it is seen that per unit cash profit and profit before interest shows decline in POI.
- Return on Capital Employed has declined in 2018-19 and POI when compared to earlier years.

68. The domestic industry contended that there was continuous decline in the profitability over the investigation period. The trends in import price and selling price of the domestic industry were additionally examined within the investigation period. Further, the profits and ROI of the domestic industry were additionally examined within the investigation period.

S.No.	Month	Import price from subject countries		Selling price of D.I.
		USA	Turkey	
1	Apr-19	17,116	16,463	***
2	May-19	16,722	16,702	***
3	Jun-19	17,610	16,532	***
4	Jul-19	18,313	16,864	***

5	Aug-19	17,879	16,616	***
6	Sep-19	18,212	17,376	***
7	Oct-19	-	16,875	***
8	Nov-19	17,285	16,883	***
9	Dec-19	17,755	16,860	***

	Apr-June 19	July-Sept 19	Oct-Dec 19
Cost of sales	***	***	***
Selling price	***	***	***
Profit/loss per unit	***	***	***
Cash profit/unit	***	***	***
ROCE	***	***	***
ROCE (Range)	20-30	20-30	10-20

(c) Market share in demand

69. Market share in demand over the injury period is given in the table below.

Demand	Unit	2016-17	2017-18	2018-19	POI	POI (Annualised)
Sales of Domestic Industry	%	25.73%	26.95%	26.45%	26.57%	26.57%
Captive Consumption	%	1.78%	1.98%	2.10%	4.98%	4.98%
Sales of Other Indian Industry	%	50.75%	48.64%	48.55%	43.81%	43.81%
Subject countries-Imports	%	4.45%	7.00%	9.04%	14.74%	14.74%
Other Countries- Imports	%	17.29%	15.42%	13.86%	9.90%	9.90%
Demand/consumption	%	100.00%	100.00%	100.00%	100.00%	100.00%

70. It is seen that the share of domestic industry in the market has increased. Market share of domestic industry increased because of new capacities added by the domestic industry. At the same time market share of subject countries have increased in the POI. Share of imports in the domestic market has increased as compared to base year.

(d) Employment, productivity and wages

71. Employment, productivity and wages of Domestic Industry over the injury period is given in the table below.

Particulars	Unit	2016-17	2017-18	2018-19	POI	POI(A)
No of Employees	Nos	2,287	2,270	2,695	2,699	2,699
Indexed		100	99	118	118	118
Wages	Rs. Lacs	10,390	11,448	13,650	11,041	14,721
Indexed		100	110	131	142	142
Productivity	Per Day	2,510	2,913	3,063	3,571	3,571
Indexed		100	116	122	142	142

72. It is noted that the employment with the Domestic Industry has increased over the injury period with the increase in capacity. Wages paid have also increased. Productivity per day has increased with increase in production.

(e) Inventories

73. Inventory position with the Domestic Industry over the injury period is given in the table below:

Particulars	Unit	2016-17	2017-18	2018-19	POI
Average	MT	10,979	9,511	18,887	48,121
Indexed		100	87	172	438

74. It is seen that the inventories with the Domestic Industry have increased in 2018-19 and thereafter in the POI. Even in a situation of increasing demand, inventories with the domestic industry have increased.

(f) Growth

75. It is seen that growth of the Domestic Industry in terms of production and inventories was positive during POI and growth in terms of profits, cash profits and return on investment was negative in the POI.

Particulars	2017-18	2018-19	POI	
			Actual	annualised
Production	16%	5%	17%	17%
Domestic Sales	14%	4%	3	3
Cost of Sales	3%	7%	9%	9%
Selling Price	1%	9%	0%	0%
Profit/Loss per Unit	-2%	15%	-22%	-22%
Inventories	-13%	99%	155%	155%
ROI	-11%	-9%	-5%	-5%
Cash Profit Per Unit	-2%	14%	-11%	-11%

(g) Factors affecting domestic prices

76. The examination of the import prices from the subject countries, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the Domestic Industry in the domestic market, etc. shows that the landed value of imported material from the subject countries is below the selling price of the Domestic Industry, causing price undercutting. The price undercutting has led to price suppression in the Indian market. The demand for the subject goods increased over the injury period and therefore it could not have been a factor affecting domestic prices. The Authority concludes that the principal factor affecting the domestic prices is the dumped imports of subject goods from the subject countries.

F.7. Magnitude of Injury and Injury Margin

77. The Authority has determined Non-Injurious Price for the Domestic Industry on the basis of principles laid down in Anti-Dumping Rules read with Annexure III, as amended. The NIP of the product under consideration has been determined by adopting verified information/data relating to the cost of production for the period of investigation. The NIP determined for the Domestic Industry has been compared with the landed price from each of the producers/ exporters from the subject countries for calculating injury margin. The 'all others' rate has been determined based on the facts available with the Authority.

Sl. No	Name of the Producer Company	NIP (\$/MT)	Landed price (\$/MT)	Injury margin (\$/MT)	Injury margin	Injury Margin Range (%)
A.	Turkey					
1	a)ETI Soda Uretim Pazarlama Nakliyat Ve Elektrik Uretim Sanayi Ve Ticaret A.S.	***	***	***	***	Negative
	b)Kazan Soda Elektrik Uretim A.S	***	***	***	***	Negative
	Weighted Average of Ciner Group	***	***	***	***	Negative
2	Türkiye Şişe ve Cam Fabrikaları Anonim Şirketi	***	***	***	***	Negative
3	Any other producer/exporter	***	***	***	***	0-10
B.	USA					
4	Searles Valley Minerals Inc.	***	***	***	***	Negative
5	Tata Chemicals Soda Ash Partners ("TCSAP")	***	***	***	***	Negative
6	Any other producer/exporter	***	***	***	***	Negative

78.The Authority noted the claim of the domestic industry with regard to inclusion of freight has determined injury margin, both, by including freight and excluding freight. However, the Authority has considered the injury margin without adding freight.

G. Threat of material Injury

79.As noted in the initiation notification, the applicants have claimed that imports have increased and are further causing threat of material injury. The claim has been analysed by the Authority in detail, hereunder.

80.Antidumping Rules provide as follows with regard to threat of material injury–

Annexure II Para (vii): A determination of a threat of material injury shall be based on facts and not merely on allegation, conjecture or remote possibility. The change in circumstances which would create a situation in which the dumping would cause injury must be clearly foreseen and imminent. In making a determination regarding the existence of a threat of material injury, the designated authority shall consider, inter alia, such factors as:

(a) significant rate of increase of dumped imports into India indicating the likelihood of substantially increased importation;

(b) sufficient freely disposable, or an imminent, substantial increase in, capacity of the exporter indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to Indian markets, taking into account the availability of other export markets to absorb any additional exports;

(c) whether imports are entering at prices that will have a significant depressing or suppressing effect on domestic prices, and would likely increase demand for further

imports; and

(d) inventories of the article being investigated.

81. Evidence provided by the domestic industry and questionnaire response filed by the responding exporters have been examined.
 - a. Imports from subject countries have increased.
 - b. The producers in subject countries have established significant capacities and are highly export oriented.
 - c. The imports are entering at prices below the level of selling price and thus undercutting the prices of the domestic industry. The price undercutting is causing price suppression in the market.
 - d. The price undercutting coupled with surplus capacities with the foreign is likely to increase demand for subject goods in the market.
 - e. Inventory level with the exporters as seen from their responses are significant.
82. It is thus seen that imports from the subject countries are further threatening material injury to the domestic industry.
83. From the submissions made by the domestic industry and other interested parties, the Authority notes the following:
 - i. Domestic industry has provided evidence showing decline in domestic demand in Turkey and USA. It is also noted from such reports that the Indian market is key to the producer/exporters in the subject countries. Therefore, imports are likely to enter the domestic market in significant volume.
 - ii. Evidence has also been provided to show that the capacities in both the subject countries are likely to further enhance.
 - iii. Based on data analysed post POI, import analysis from DGCIS, and selling price as shared by domestic industry, the Authority notes that the import prices are declining continuously, with corresponding decline in selling price of the domestic industry.
 - iv. It is also seen that South Africa has extended antidumping duties on imports of Soda Ash for another 5 years on USA in 2019 pursuant to sunset review investigation.

H. NON-ATTRIBUTION ANALYSIS

84. As per the AD Rules, the Authority, *inter alia*, is required to examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are injuring the Domestic Industry, so that the injury caused by these other factors may not be attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, *inter alia*, the volume and prices of imports not sold at dumped prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the Domestic Industry. It has been examined below whether factors other than dumped imports could have contributed to the injury to the Domestic Industry.

(a) Volume and price of imports from third countries

85. The Authority notes that interested parties have contended that imports from China despite being higher has not been considered. It is noted in this regard that imports from all third countries are either low in volume or high in prices (including China).

(b) Export Performance

86. It is seen that domestic industry is largely in the domestic market. In any case, the Authority has considered the data for domestic operations for its injury analysis.

(c) Development of Technology

87. There is no known material developments in technology over the injury period. Changes in the technology could not have caused claimed injury to the Domestic Industry.

(d) Performance of other products of the company

88. The Authority has considered performance of the domestic industry only in respect of product under consideration. The injury claimed to the domestic industry is only in respect of the subject goods.

(e) Trade Restrictive Practices and Competition between the Foreign and Domestic producers

89. There is no known trade restrictive practice which could have contributed to the injury to the domestic industry.

(f) Contraction in Demand and Changes in pattern of consumption

90. It is noted that the demand of the subject goods has increased consistently over the entire injury period. Thus, it is the injury to the Domestic Industry was not due to contraction in demand or changes in pattern of consumption.
91. Arguments raised by other interested parties, that GHCL, an applicant company has made in its 2019-20 Annual Report, regarding suppression in demand due to COVID, have no meaning in the POI of this investigation which precludes COVID.

I. POST DISCLOSURE STATEMENT SUBMISSIONS**Submission of Domestic Industry**

92. Domestic industry submits that the NIP revised is significantly low and is in stark difference to the NIP determined at the stage of initiation and provisional findings. There was no reason for the domestic industry to believe that the methodology adopted by the Directorate earlier is incorrect or inapt. In the present investigation, the Authority had issued provisional findings. The domestic industry has not been asked to justify why the NIP should be computed after including entire sales of RSPL. This sudden change has led to an negative injury margin.
93. The negative injury margin is because of exclusion of a significant portion of sale made by RSPL on the grounds of its being captive. Whereas the rules provide for consideration of respective share of “domestic production” for computation of weighted average for the domestic industry as a whole, the “production for domestic sales” has been considered for determination of non-injurious price. In other words, “production for domestic sales” has been treated as “domestic production”.
94. As is provided under Annexure-III, for the purpose of determination of NIP the Rules simply refer to “production” at various instances, with no defined distinction between production meant for sales or captive use. Further, Annexure-II [para (vi)] clearly provides for consideration of “domestic production”. Therefore, production meant for “captive use” needs to be considered for determination of NIP as the captive production is also meant to be used for domestic consumption.
95. The volume of captive consumption of soda ash would have either been used by the producer itself or by the consumer and thus had to be included in determining the domestic consumption. Had RSPL not been integrated, the production of subject goods now being featured as captive would have been featured in domestic sales. However, the producer is vertically integrated and is using it captively. Conversely, if RSPL had not created capacity for soda ash, the requirement of soda ash in the domestic market would have been met by other producers. Thus, in either situation, the volume of captive production would have been included in the “domestic production”.
96. Therefore, it would be seen that the sales being seen as captive, are not actually captive in true sense, as they are also captive sales made to different location which are accounted for and invoiced in the books of records. Further, since the captive sales are booked at market price, the suppressed price in the market is directly impacting the captive market of RSPL. Thus, even the captive market is not insulated from imports.
97. There have been several cases in past wherein the Authority has considered captive production while determining NIP. There are situations when domestic industry may suffer injury because of dumping even in a situation of 100% “captive consumption”. Reference is made in this

regard to the antidumping investigations relating to O-Acid, wherein the Govt. had earlier imposed ADD, even though entire O-Acid was consumed by the company itself.

98. The domestic industry invites the attention of the Authority to the report of Appellate Body in the case of United States – Transitional Safeguard Measure on Combed Cotton Yarn from Pakistan, wherein the Appellate Body found that the definition of domestic industry is product oriented and not producer oriented
99. Sales have been distinguished between “captive” and “merchant” and accordingly market share has been determined separately. However, RSPL “soda ash division” has “sold” the product to its other division. The very fact that market share has been determined both including and excluding captive consumption shows that the DGTR has considered “sales to other division of the company” cannot be ignored.
100. Production has been distinguished (between merchant and sales to other division of the company) only for the purpose of NIP. Production for all other purposes have been considered as production including production meant for sales to other division of the company.
101. Domestic industry submits that freight should be included while determining price undercutting and injury margin. The Authority had considered the argument of freight in the provisional finding and has noted the same in the Disclosure Statement issued, however have not worked out price undercutting and injury margin with freight
102. Applicants refers to the decision of the EC in the matter of anti dumping investigation (the principle holds through for anti subsidy investigation as well) Potassium Permanganate originating in India and the Ukraine wherein the exporter sought allowance of transportation cost from the factory to depot and the same was rejected holding that the plant and depot is part of the same economic and legal entity.
103. From a simple reading of the case, it is evident that if the goods are transferred from the factory to the depot then the goods are to be considered as a part of the inventory. Even as per the accounting standards the freight from the factory to depot is considered as a part of the cost of production and if that is the case then the depot is only an extended factory warehouse and that alone should be considered as the basis of the ex-factory NIP and selling price. Thus, such freight shall be considered while making a fair comparison.
104. Domestic industry refers to India's position before the WTO, which clearly supports the contentions of the domestic industry that the comparison of the imported product price be made with the domestic industry price as close as possible to the point of consumption. When the Govt. of India is advocating before 146 WTO member countries on how to compare domestic and imported product price, what should be the level of prices of the two products, it would be discrimination and unfair against the domestic industry in case the same is not applied by its own Designated Authority.
105. Price undercutting and Injury margin should be determined only considering those import transactions whose landed price of imports is below selling price of the domestic industry. The concern of the domestic industry is against injurious imports and not against non-injurious imports. Reference is made to WTO Report in the matter of European Communities – Anti-Dumping Duties on Malleable Cast Iron Tube or Pipe Fittings From Brazil
106. The principle applied in WTO Report in the matter of European Communities – Anti-Dumping Duties on Malleable Cast Iron Tube or Pipe Fittings from Brazil, for calculating price undercutting also applies on calculation of injury margin. European Union, which also follows the principle of lesser duty rule, determines injury margin after excluding non-injurious export transactions. The practice has not been challenged in the WTO. Thus, while calculating injury margin, the Authority should consider only those transactions that are below non injurious price for calculation of injury margin. Reference is also made to the Hon'ble Tribunal's order in the matter of Kothari Sugars & Chemicals Limited versus Designated Authority which allowed considering transactions above NIP to calculate injury margin.

Submissions of other interested parties

107. The decision of the Authority not to consider separate analysis of dumping and injury separately for Light Soda Ash and Dense Soda Ash requires kind reconsideration.

108. Positive dumping margin in the present matter is the result of a failure to conduct separate analysis for LSA and DSA and positive dumping margins are the result of such improper analysis.
109. It is also notable that concerns raised by the exporters on their dumping margin determination are also not addressed by the Authority. The dumping margins also shall be negative if proper determination is made by the Authority after considering all such legitimate contentions of the exporters.
110. The facts of the case make it evident that the domestic industry did not suffer any injury on account of imports of subject goods from subject countries.
111. Even though the market share of the imports has increased, the imports have been taking at a fair price. The volume parameters of the DI have shown tremendous growth over the years. Even though the profitability declined slightly by the POI, the ROCE still remained in the range of 10-20%, which should be noted as a reasonable return on a widely used industrial input like Soda Ash.
112. The proposal of the Authority to consider the injury margin without adding freight is as per the Rule and the claims of the petitioners to the contrary are illegal. The claims for inclusion of freight in NIP, NSR etc have been made in various investigations and the Authority have consistently upheld that freight cannot be included for the purpose of injury margin in view of Annexure III to the Rules and a similar view is justified in the present case also.
113. The stories of threat of material injury are totally baseless and should be please junked by the Authority. Also, the present case has been initiated based on claims of material injury and when the claim stands unsubstantiated, the contention of threat of material injury has meaning. The data suggests any imports in the future also shall be at non-injurious levels and such fair imports should not be subjected to any ADD.
114. In the present investigation, the Authority has not checked the quantum of imports made by Nirma and Tata, for the revised period under investigation, to check their eligibility under Rule 2(b) read with Rule 5. We humbly request that since such exercise was not done by either applicant industry and also by the Authority, it is submitted that the oral hearing conducted by the Authority, cannot be said to be effective and in terms of Rule 6. This is without prejudice to the submission that the Designated Authority exceeded his jurisdiction by initiating the present case without fulfilling preconditions of Rule 5 read with Rule 2(b).
115. Terminate the investigation, as the application filed by applicant is not in line with the Trade Notice No. 10/2018 dated 7th September 2018.
116. Confirm the conclusion reached by the Authority in the instant investigation that there is no injury to the applicant industry with respect of the imports from cooperative exporters from subject countries.
117. The Authority should not recommend any anti-dumping duties against cooperative exporters from the subject countries, as the injury margin is negative. This approach is in line with the obligation of the Authority under Rule 4(d) and 17(1)(b) of the ADD Rules.
118. We also submit that in the event, the domestic producers furnish any new or additional information at this stage which may result into change in injury margin, the same may kindly be provided to us so that we are in a position to offer our comments on the same.
119. Without prejudice to above, it is humbly submitted that the Authority may in any case incorporate and/or deal with the issues raised by us but have not been incorporated and/or dealt with in the disclosure statement issued by the Authority.
120. The Designated Authority has taken total imports from the USA as base to assess whether imports from the other two domestic producers i.e. M/s Tata Chemicals Ltd. and M/s. Nirma Ltd are significant. The past decisional practice of the Designated Authority demonstrates that the assessment of imports by a domestic producer is undertaken in comparison to the total domestic production and/or total imports of the PUC. There is no reason to deviate from the previous decisional practice and consider a significantly lower base of volume of the imports from the USA.

121. The Designated Authority is requested to provide the share of imports by these two domestic producers (after applying correct bases as stated above) in narrow ranges so as to offer a meaningful and effective opportunity to interested parties to respond. Accordingly, we request the Designated Authority to re-circulate a revised disclosure statement after taking into account the above comments.
122. Designated Authority has made no attempts to address HUL's arguments regarding the Domestic Industry's claims of excess confidentiality and failure to comply with Trade Notice No. 10/2018.
123. HUL notes that the Designated Authority has determined negative injury margin for all participating producers from the subject countries. HUL expects that these facts will continue to be true for the final findings to be issued by the Designated Authority.
124. Accordingly, the issue of form of duty is now moot. Without prejudice to the above, in the event any duties are recommend in the final findings, HUL requests that the Designated Authority provide reasons for recommending a particular form of duty
125. Without prejudice, if the Authority has indeed intended to calculate price undercutting through including freight cost, it would not only be inconsistent with past decisional practice of the Authority but also an unfair comparison resulting into skewed injury analysis. HUL reiterates its objections, as submitted in prior submissions, to inclusion of freight cost in price undercutting analysis
126. Designated Authority has not taken into consideration HUL's detailed submissions regarding there being no threat of material injury in section E of the Preliminary Submissions, section B of the Written Submissions and section C of the Rejoinder Submissions. As a quasi-judicial body, the Designated Authority must address all arguments of the interested parties and provide reasons for accepting and rejecting the same. HUL reiterates the key points from its previous submissions on threat of material injury and submits that Designated Authority's conclusion on the same is incorrect for the following reasons:
 - (i) The Domestic Industry's argument for likelihood of substantial increase is unsubstantiated and erroneous as it relies on imports data, which goes from Turkey as 2008 – 09 and for USA as 2006 – 07.
 - (ii) The alleged sufficient freely disposable capacity in the subject countries are not likely to flow to India as the percentage share of exports to India from the subject countries are negligible.
 - (iii) The subject imports do not cause any price suppression or depression as evident from paragraph 60 of the Disclosure Statement, where import price from the subject countries increased, but the Domestic Industry did not increase selling price despite the increase in cost of sales.
 - (iv) Domestic Industry has failed to provide any evidence with respect to inventories of the subject goods.
 - (v) With respect to decline in demand in the subject countries and such imports are likely to enter Indian market, HUL clarifies that the evidence relied upon by the Domestic Industry has itself revealed that such decline in demand is global and volumes of exports by the producers from the USA and Turkey have come down during the COVID-19 period.
 - (vi) The post-POI data examined to assess decline in prices from subject countries goes far beyond 6 months after the POI and no explanation has been offered by the Domestic Industry for such alleged decline in prices.
 - (vii) With respect to evidence of significant capacities in subject countries, HUL has explained that such capacities are unlikely to flow to India for the reasons explained in point (iii) above.
 - (viii) Lastly, extension of anti-dumping duties in South Africa on the subject goods from USA has no bearing on the present investigation.
127. Similar to the Designated Authority's approach on threat of material injury, the Designated

Authority has not considered a single argument on non-attribution or break in causal link by interested parties including HUL

Examination by the Authority

128. The Authority notes that NIP of individual applicant as well as weighted average NIP of the applicants as a whole has been computed as per the practise followed by the Authority consistently. However, M/s RSPL transferred major of its production to their other units for captive use and sold only *** MT out of *** MT during the POI. The information was neither made available at the time of initiation nor at preliminary findings. Therefore, the NIP recommended at those occasions were different. The reasons of different weighted average NIP computed in the final determination from initiation and preliminary finding has also been communicated to the domestic industry through email dated 11.01.2021.
129. The Authority notes the submissions of the domestic industry regarding consideration of captive consumption while determining NIP and holds that the anti-dumping investigation concerning import of O-acid from China PR is altogether a different investigation based on different facts and figures than the present investigation. The case was related to material retardation where applicant alleged that O-acid is being dumped from China PR with an intention to destabilize the newly established production capacities of O-acid in India. The intensive dumping of O-acid was creating such a situation where the applicant was not able to sell their product in the domestic market/open market. The domestic industry had made a lot of investment to backward integrate the product Ofloxacin. Since this was the only and new production facility created by the applicant in India to make its own supply continuous for captive as well as selling in the domestic market due to intentional dumping by the exporter the future sustainability of the unit was in question. Therefore, to protect the newly established capacity under material retardation, NIP was calculated as provided under Rules.
130. The applicant has stated that they have transferred the PUC from one unit to another through proper invoices. Thus, it is domestic sales and should be considered for computation of weighted average NIP. The Authority notes that PUC is transferred from one unit of the applicant to another for its captive consumption. The price of PUC transferred for captive consumption is determined by the applicant without any influence of demand and supply of PUC in the open market. Therefore, alleged dumping of PUC in the open market does not influence the price and consequent injury claimed.
131. The Authority notes the submissions regarding separate analysis for light and dense soda ash and re-iterates that the Authority that since the cost and price difference between light and dense soda ash is minimal, no separate analysis is warranted as also done in past investigations pertaining to the PUC.
132. Regarding the contention of the cooperative producers/exporters for consideration of entire domestic sales even to related entities by undertaking the OCT Test for ordinary course of trade, the Authority holds that the OCT Test is relevant both for related and non-related entities as far as the sales are to be established primarily in ordinary course on aspect of profitability of sales (The 80-20 test). Even though both related and non-related sales may meet this test, the issue of related party sales being at arms-length when compared with non-related party sales on aspect of price difference still needs to be established with appropriate evidence and justification. The producers/exporters argument to only consider OCT does not meet the requirement of establishing sales to related party at arms-length. The Authority therefore confirms the methodology adopted in the Preliminary Finding.
133. As regards the contentions on domestic industry standing, the Authority notes Rule 2 (b) of AD Rules clearly states that the ‘domestic industry’ means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the “domestic industry” may be construed as referring the rest of the producers. It is seen that exports made by the affiliate parties is significant. Therefore, Tata Chemicals and Nirma Ltd are treated as ineligible domestic industry of subject goods in India

134. As regards submissions regarding evaluating injury margin after inclusion of freight, the Authority holds that such assessment requires complete data which needs to be comprehensively evaluated and requires a generic policy decision. The consistent practice of Authority for injury margin assessment is to compare landed value (without freight) with the NIP on an equivalent level of comparison. The same methodology has been adopted in this case. Further NIP has been determined as per annexure 3 of AD Rules and comparison of landed value with NIP has been done for the entire POI.
135. The Authority notes that the petitioner has claimed injury both on account of material injury and also threat of injury. In the preliminary determination wherein material injury during POI was noted in form of a positive injury margin and the Authority, taking note of threat of injury by the declining trend of landed price in POI contrary to the cost of production trend in POI, had proposed reference price mechanism of anti-dumping duty to address the same. However, in the final finding the Authority has concluded that the injury margin is negative in respect of all producers/exporters of USA and the cooperative producers/exporters of Turkey. The Authority has thus considered and addressed the issue of both forms of injury appropriately in the final finding as well.
136. The Authority notes that the petitioner is requesting to zero out injury margin for non-injurious transactions. The Authority has adopted its consistent methodology for comparison of NIP with Landed Value to determine the Injury Margin evaluated for the entire POI.

L. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES.

137. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the domestic industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the Country. Imposition of anti-dumping duty would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.
138. It is recognized that the imposition of anti-dumping duty might affect the price levels of the product under consideration and downstream goods manufactured using the product under consideration. This might consequently have some effect on the relative competitiveness of the downstream products. However, since levy of an anti-dumping duty is restricted to the amount necessary to redress the injury to the domestic industry, fair competition in the Indian market will not be reduced by the anti-dumping measure. Imposition of anti-dumping measure would remove the unfair advantages gained by dumping practices, prevent the decline in the performance of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of the product under consideration.

M. CONCLUSION

139. Having regard to the contentions raised, information provided, and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority as recorded in these final findings and on the basis of the above analysis, the Authority concludes that:
 - a. The product under consideration has been exported to India from the subject countries below its associated normal value, thus resulting in dumping.
 - b. Injury both material and threat due to dumping of the product under consideration from the subject countries has been evaluated. Further, the margin of injury has been evaluated for the cooperative and non-cooperative producers/exporters for imposition of applicable Anti-Dumping duties where warranted and as stated in the recommendation below.

N. RECOMMENDATION

140. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspect of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted the investigation into dumping, injury and causal link in terms of the provisions laid down under the Rules and having established positive dumping margin and further having

evaluated material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of definitive antidumping duty is required to offset dumping and injury only against non-cooperative producers/exporters of Turkey and not on cooperative producers/exporters of Turkey. Also, the measure is not recommended on any of the producers/exporters of USA. The Authority, in view of above, recommends imposition of anti-dumping duty on imports of subject goods in the form and manner described here under.

141. The Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry as stated in the table below. Noting the fact that landed price of subject goods shows declining trend in POI contrary to the cost of production trend in POI, the Authority, therefore, considers it appropriate to recommend imposition of the anti-dumping duty on the basis of Reference/Benchmark Price on the imports of the subject goods, originating in or exported from Turkey, from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government. Reference Price is computed as “Landed Value + Lower of [(1) Dumping Margin and (2) Injury Margin]”. The anti-dumping duty shall be equal to the difference between the Reference Price indicated in column 7 of the table below and the landed value. The landed value of imports for this purpose shall be assessable value as determined by the Customs under Customs Act, 1962 and applicable level of custom duties except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9, 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

DUTY TABLE

S.No	HS Code*	Description of goods	Country of origin	Country of Export	Producer	Reference Price	Unit	Currency
-1	-2	-3	-4	-5	-6	-7	-8	-9
1	2836.20	Soda ash (Disodium Carbonate)	Turkey	Any country including Turkey	Any producer other than: i. ETI Soda Uretim Pazarlama Nakliyat Ve Elektrik Uretim Sanayi Ve Ticaret A.S. ii. Kazan Soda Elektrik Uretim A.S iii. Türkiye Şişe ve Cam Fabrikaları Anonim Şirketi	242.35	Metric Tonne	US\$

O. FURTHER PROCEDURE

142. An appeal against the order of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

B.B. SWAIN, Spl. Secy. and Designated Authority